अपाहिज़

मौन चीख़,जब कोई सुनने वाला नहीं था

चक्रधर धौलाखंडी

BlueRose ONE.com
Stories Matter
NewDelhi • London

BLUEROSE PUBLISHERS
India | U.K.

Copyright © Chakradhar Dhaulakhandi 2026

All rights reserved by author. No part of this publication may be reproduced, stored in a retrieval system or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, photocopying, recording or otherwise, without the prior permission of the author. Although every precaution has been taken to verify the accuracy of the information contained herein, the publisher assumes no responsibility for any errors or omissions. No liability is assumed for damages that may result from the use of information contained within.

BlueRose Publishers takes no responsibility for any damages, losses, or liabilities that may arise from the use or misuse of the information, products, or services provided in this publication.

For permissions requests or inquiries regarding this publication,
please contact:

BLUEROSE PUBLISHERS
www.BlueRoseONE.com
info@bluerosepublishers.com
+91 8882 898 898
+4407342408967

ISBN: 978-93-7310-402-7

Cover design: Anuj
Typesetting: Tanya Raj Upadhyay

First Edition: February 2026

प्रस्तावना

मेरे एक पहाड़ी मित्र ने मुझे एक बार कहा कि आप कई तरह की किताबें लिखते हैं जिनमें विभिन्न तरह के किरदार होते हैं। आप किसी अपाहिज़ के ऊपर कोई उपन्यास क्यों नहीं लिखते? जब मैंने उनसे पूछा कि क्या आपके पास कोई ऐसा विचार है तो मुझे बताइए। तब उन्होंने मुझे एक अपाहिज़ के बारे में बताया, जो कॉर्बेट पार्क के आगे मरचुला की पहाड़ी पर बनी एक कोठी में रहता था। उसके पिता एक फौज़ी थे। उसकी मां का देहाँत हो चुका था। वे रहने वाले तो बिरोंखाल, पौड़ी, गढ़वाल के थे। किंतु, उसकी मां की मृत्यु के बाद उसके पिता उसे लेकर मरचुला आ गए थे। वे अपनी खेती, घर सब पड़ोसी को सौंप आए थे। कुछ दिनों के बाद उसके पिता की भी मृत्यु हो गई। तब, वह पड़ोसी उसकी देखभाल करने उसके साथ ही आ गया। किंतु, एक दिन ना जाने क्या हुआ कि वह अपनी सारी जायदाद उस व्यक्ति की पत्नी के नाम करके, पहली मंजिल की सीढ़ियों से व्हील चेयर के साथ गिरकर मर गया।

इस घटना को सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। मैं सोचता रहा। कुछ दिनों बाद मैंने उसके चारों ओर अपनी कल्पना से एक ताना-बाना बुना जो अब आपके सामने पेश है। पढ़कर अच्छा लगे तो पब्लिशर के द्वारा मुझे बताएं।

- चक्रधर धौलाखण्डी

-1-

मूसलाधार बारिश हो रही थी। साथ ही हवा भी तेज हो गई थी। बारिश की वजह से पहाड़ियों से पानी नीचे गिरने लगा था और सड़क के टूटने का खतरा बढ़ गया था। यह मरचुला का इलाका था जो रामनगर और कॉर्बेट पार्क से छै-सात किलोमीटर की दूरी पर था। यहीं से दो रास्ते शुरू होते थे। ऊपर की ओर जाने वाली सड़क कुमांऊ की ओर, नीचे वाली सड़क गढ़वाल की ओर जाती थी। उन दोनों सड़कों के बीच एक पहाड़ी थी, जिस पर एक आलीशान बंगला था। उस बंगले तक जाने के लिए एक कच्चा रास्ता था जो सर्प की तरह टेढ़ा-मेढ़ा था।

शमशेर सिंह जी की कार उस दो राहे से सौ-दो सौ मीटर की दूरी पर ही खराब हो गई। भुनभुनाते हुए वे नीचे उतरे और कार का बोनट खोल कर टार्च से इंजन को देखने लगे। उनकी कुछ समझ में नहीं आया कि क्यों कार बंद हो गई है। भुनभुनाते हुए बोनट बंद कर, वे दूसरी ओर आए, जहाँ उनकी बेटी माधुरी बैठी हुई थी। टार्च की रोशनी खिड़की के पास देखकर, उसने शीशा नीचे किया तो उसके पिता बोले - 'कार खराब हो गई है। अब इस बरसात में हम कहाँ जायें। ऐसा करते हैं कि आगे चलकर रहने का ठिकाना ढूंढते हैं। सुबह कार ठीक करा कर तब चलेंगे। बरसाती पहन लो।'

'लेकिन मौसम तो ठीक था। अचानक क्या हो गया?' उनकी बेटी माधुरी ने चिन्ता से पूछा - 'इस सामान का क्या करें?'

'ईश्वर के भरोसे छोड़ दो। जल्दी उतरो। सड़क पर पानी जमा हो गया है। पहाड़ों से भी पानी गिर रहा है। कहीं ऐसा ना हो हम यहीं फंस जायें।'

चिंतित-सी माधुरी ने बरसाती पहनी और अपना पर्स लेकर बाहर निकली। पानी की बौछारें उसके चेहरे पर पड़ी तो वह घबरा गई। नीचे उसकी चप्पलें और पैर पानी में डूब गए थे।

शमशेर सिंह जी ने कार के दरवाजे - खिड़कियां बंद की और माधुरी का हाथ पकड़कर आगे को बढ़े। चलते-चलते माधुरी कई बार गिरने लगती थी किन्तु शमशेर सिंह जी उसे सहारा दे देते थे।

कुछ ही देर में वे मरचुला गांव में पहुंच गए। दुकानों और मकानों के अधिकतर द्वार बंद थे। किंतु, कमरे में रोशनी हो रही थी। हिम्मत करके उन्होंने एक दरवाजे को थपथपाया। थोड़ी देर में द्वार जरा सा खुला और एक अधेड़ व्यक्ति ने दरवाजा जरा सा खोल कर पूछा - 'कौन हो?'

शमशेर सिंह जी ने जल्दी से कहा - 'हमारी कार खराब हो गई है। हमें रात यहाँ रूकने की इज़ाजत दे सकते हैं। मेरे साथ मेरी बेटी भी है। प्लीज़।'

वह व्यक्ति बोला - 'यहाँ तो बैठने की भी जगह नहीं है। पहले ही सात-आठ लोग हैं। फिर आपके साथ एक लड़की भी है। आप ऐसा करो, ऊपर बंगले में चले जाओ। वहाँ धर्म जी अकेले अपने नौकर के साथ रहते हैं।'

'कहाँ से जाना है?'

'थोड़ा आगे जाइए, वहाँ से दाहिनी ओर एक कच्चा रास्ता ऊपर उनके बंगले तक जाता है। वे बड़े सज्जन व्यक्ति हैं। वहाँ रहने की जगह मिल जाएगी। किंतु, सावधानी से जाइगा। कच्चा रास्ता है। फिसलन हो सकती है।'

शमशेर सिंह जी ने उसे धन्यवाद दिया और माधुरी का हाथ थामकर आगे बढ़े। दोनों ओर दुकानें और छोट-छोटे मकान थे। बीच के रास्ते में बड़ी तेजी से पानी बह रहा था। थोड़ी ही देर में वे वहाँ पहुंच गए, जहाँ से एक कच्चा रास्ता ऊपर पहाड़ी की ओर जा रहा था। रास्ते में भी ऊपर से तेजधार

से पानी आ रहा था। शमशेर सिंह जी माधुरी का हाथ पकड़कर भुनभुनाते हुए चल रहे थे। वे बड़बड़ा रहे थे - 'रावत ने तो कहा था कि रामनगर में गोपाल को भेज देगा, जो हमें साथ डुमैला लेकर आएगा। मैं तो नहीं आ रहा था। तुम्हीं ने ज़िद की पहाड़ी शादी देखने की। अब भुगतो।'

माधुरी चुप ही रही। यह उसकी ही गलती थी। वर्ना वह घर पर मां के साथ रह लेती।

कुछ ही देर में वे ऊपर पहाड़ी पर चढ़ गए। ऊपर एक सपाट मैदान था। वहाँ एक छोर पर सुंदर दो मंजिला मकान बना हुआ था। उस मकान के चारों ओर ईंटों की चार दीवारी छै-सात फुट ऊंची बनी हुई थी। रास्ते का अंत एक काफी चौड़े लौहे के गेट के सामने हुआ। गेट बंद था। ऊपर दोनों ओर से मोटे कुंडे लगे हुए थे। उसी गेट में एक ओर छोटा सा दरवाजा बना हुआ था, जिसका कुंडा अलग से था। वह दरवाजा दीवार में बने खम्बों पर टिका था और खम्बों के ऊपर दोनों ओर दो बिजली के बल्ब लगे हुए थे। जो उस वक्त जल नहीं रहे थे।

शमशेर सिंह जी ने माधुरी का हाथ छोड़ दिया और छोटा गेट खोल कर अंदर आ गए। उनके पीछे-पीछे माधुरी ने भी प्रवेश किया।

वह एक लम्बा चौड़ा लॉन था। वे गेट से मकान तक बने हुए रास्ते पर आगे बढ़े। कहीं-कहीं पेड़ दिखाई दे रहे थे जो अधिक बड़े नहीं थे। चारों ओर अंधेरा था किन्तु मकान में रोशनी दिखाई दे रही थी। थोड़ी ही देर में वे मकान के मुख्य द्वारा पर पहुंच गए।

शमशेर सिंह जी ने दरवाजे को जोर-जोर से थपथपाया। अंदर कोई आवाज़ नहीं सुनाई दी। उन्होंने दुबारा दरवाजे को और भी जोर से थपथपाया। फिर कदमों की आहट सुनाई दी। कुछ देर बाद दरवाजा खुला। दरवाजे पर

कद्दावर व्यक्ति खड़ा था। उसकी मूछें बड़ी-बड़ी थीं। उसने पूछा - 'कहिए?' उसकी आवाज़ मधुर थी।

शमशेर सिंह जी ने याचना भरे स्वर में कहा - 'हमारी गाड़ी खराब हो गई है। हमें रात-भर के लिए जगह चाहिए। सुबह ही हम चले जाएंगे।'

वह व्यक्ति असमंजस में था कि तभी अंदर से आवाज़ आई - 'कौन है काका?

'कोई मुसाफिर हैं। कहते हैं गाड़ी खराब हो गई है।'

अरे तो अंदर आने दो। ऐसी बारिश में कहाँ जाएंगे।'

उस व्यक्ति ने दरवाजा पूरा खोल दिया। पहले शमशेर सिंह अंदर आए फिर माधुरी ने कदम रखा। वह एक बड़ा हॉल था। उसमें दोनों ओर कुछ कमरे बने थे और ऊपर जाने के लिए सीढ़ियाँ बनी हुई थीं। ऊपर दोनों ओर कमरे नज़र आ रहे थे। एक सुन्दर सा नौजवान ठीक सीढ़ियों के सामने ऊपर एक व्हील चेयर पर बैठा हुआ था। उसे देखकर शमशेर सिंह जी ने कहा - 'क्षमा चाहते हैं। हम गढ़वाल डुमैला एक शादी में जा रहे थे। किन्तु अचानक हुई बारिश ने हमारी कार खराब कर दी। मेरे साथ मेरी बेटी भी है। नीचे गांव वालों ने आपके बारे में बताया तो हम रात-भर रूकने के लिए यहाँ आए हैं।'

'आप लोग अपनी बरसातियां यहीं उतार दें। काका, इन्हें नीचे के दो कमरे दे दें। क्षमा कीजिए कमरों में हीटर नहीं जला सकते। यह रोशनी जो आप देख रहे हैं, यह इनवर्टर की है। बरसात के समय यहाँ लाइट बंद कर दी जाती है।'

दोनों ने अपनी बरसातियां उतार दीं। माधुरी का सौंदर्य देखकर वह भौंचक्का रह गया। ऐसा सौन्दर्य उसने आज तक इन पहाडों में कभी नहीं देखा था। माधुरी कुर्ता-पाइजामा पहने हुए ठंड से कांप रही थी। उसने एक

बार ऊपर बैठे युवक की ओर देखा। फिर वे काका के पीछे-पीछे चल पड़ी। उसके कपड़े भीग चुके थे। काका ने उसे दो तीन कम्बल दिये और बोले - 'बेटी तुम अपने कपड़े उतार कर दूसरे कपड़े पहन लो।'

माधुरी ने कहा - 'हमारी अटैची तो कार में ही रही गई हैं। कपड़े सब वहीं हैं। मेरे पास कुछ और नहीं है।'

एक क्षण सोच कर काका ने कहा - 'ठहरो, मैं धर्मू से पूछता हूं। उसकी मां के कपड़े रखे हुए हैं। शायद वे दे दे।'

फिर वह बाहर निकल आया। धर्मा अभी भी सीढ़ियों के ऊपर व्हील चेयर पर बैठा था। काका सीढ़ियाँ चढ़कर उसके पास आए और बोले। लड़की के कपड़े भीग गए हैं। दूसरे कपड़े उसके पास नहीं हैं। कहती है अटैची कार में ही रह गई है। अम्मा के कपड़ों से एक-आद दे दें?'

'हाँ-हाँ, दे दो।' धर्मा ने जल्दी से कहा। फिर आगे बोले - 'चाय बनवा लेते।'

'ठीक है कपड़े देकर चाय के लिए कह दूंगा। साथ ही चिमनी में लकड़ियां जला देता हूं।'

'ठीक है। फिर मुझे भी नीचे ले चलना।'

'अच्छा। आग सुलगा लूं तब ले जाऊंगा।' कह कर काका अंदर चला गया। थोड़ी ही देर में वह एक साड़ी और ब्लाउज़ लेकर नीचे चला गया। माधुरी को देकर बोला - 'अभी तुम यह पहन लो। थोड़ी ही देर में मैं चिमनी में आग जला रहा हूं। तब वहाँ आ जाना। आग के सामने गर्मी में ठंड भाग जायेगी। अच्छा मैं तुम्हारे पिता को भी देख लूं।' कह कर काका बाहर निकल आया।

शमशेर सिंह जी भी कपड़े उतार कर दो कम्बल ओढ़े कुर्सी पर बैठे थे। काका को देखकर कंपकंपाते हुए बोले - 'यहाँ तो बहुत ठंड है। क्या एक कप चाय मिल सकती है?'

'चाय तो मिल जायेगी। किन्तु बिना कपड़ों के आप कैसे रह पायेंगे। धर्मू के कपड़े तो आपको छोटे पड़ेंगे। क्या आप मेरे कपड़े पहन लेंगे?' यदि आप पहिने तो मैं अपना कुर्ता और पैजामा दे सकता हूं।'

शमशेर सिंह जी खामोश रह कर काका को देखते रहे। तब जल्दी से काका बोले - 'कपड़े धुले हुए हैं सा'ब।'

शमशेर सिंह जी हंसे और बोले - 'धुले न भी हों तो चलेगा। मैं तो यह सोच रहा था कि एक तो हमें आपने आश्रय दिया और ऊपर से हम पर ऐसा उपकार कर रहे हो, जिसका बदला हम कभी नहीं चुका सकते।' फिर जैसे याद करते हुए बोले - 'मेरी बेटी के कपड़े भी भीग चुके होंगे। कहाँ है वो?'

'चिन्ता न करिये।' उन्हें धर्मू की अम्मा के कपड़े दे आया हूं। मैं आपके लिये भी अभी लाता हूं।'

फिर वह तेजी से बाहर निकल गया। कुछ ही देर में वह कपड़े लेकर उनके पास आया और बोला - 'आप कपड़े पहन कर बाहर आ जाइए। मैं चिमनी में आग जला रहा हूं। चाय भी वहीं मिलेगी।'

बाहर हॉल के बीच में उसने लकड़ियों पर आग लगाई। जब वे जल उठीं तब वह ऊपर गया और धर्मा को गोदी में उठाकर नीचे लाया। वहाँ रखी एक व्हील चेयर पर बैठा कर एक शाल से उन्हें अच्छी तरह ढंक दिया। फिर वह रसोई घर की ओर चला गया।

थोड़ी ही देर में माधुरी साड़ी से लिपटी हुई वहाँ आई। धर्मा को देख कर वह सकुचाई और रूक गई। धर्मा ने देखा तो बोला - 'आइए बैठिये। आग जल रही है। थोड़ी गर्मी मिल जायेगी। बैठिये।'

सकुचाती हुई वह दूर पड़ी कुर्सी पर बैठ गई। उसी वक्त शमशेर सिंह जी भी आ गए और हाथ जोड़कर बोले, 'आज आपने बड़ी कृपा की हमें आश्रय दिया। जब हम रामनगर से निकले तो मौसम अच्छा-खासा खुला हुआ था। जैसे ही जंगल शुरू हुआ हल्की-हल्की बूंदा-बांदी शुरू हो गई। कॉर्बेट पार्क के पास आते ही मूसलाधार बारिश शुरू हो गई। इंजन में शायद पानी चला गया था, क्या हुआ कि गाड़ी बंद हो गई। अब सुबह मौसस खुले तो तभी गाड़ी ठीक करवा सकते हैं।'

'यहाँ का मौसम ऐसा ही रहता है। कब धूप निकलेगी और कब पानी बरसेगा कुछ नहीं कह सकते।' धर्मा ने कहा - 'पहाड़ी इलाकों में एक यही कमी नहीं और भी हैं। अब सुबह ही पता चलेगा कि कहाँ-कहाँ सड़कें टूट गई हैं। और कहाँ-कहाँ सड़कों पर पूरा पहाड़ और पत्थर गिरे हैं। यदि ऐसा हुआ तो तीन-चार दिन के लिए आवाजाही बंद हो जायेगी। वैसे, आप कहाँ जा रहे हैं?'

'हमे डुमैला जाना है। कहीं बिरोंखाल के पास।'

थोड़ी देर के लिए धर्मा चुप रहा। जैसे कुछ याद कर रहा हो। फिर पूछा - 'वहाँ क्या काम पड़ गया। क्या आप वहाँ रहते हैं?'

'नहीं, हम दिल्ली से आ रहे हैं। वहाँ मेरे एक मित्र रहते हैं। उनकी लड़की की शादी है। इसलिए जा रहे हैं।'

'किसके यहाँ है शादी?'

'हैं, रावत नाम है उनका। वहीं रहते हैं। बेटी की शादी भी वहीं कर रहे हैं। उन्होंने तो मुझे फोन किया था कि गोपाल को रामनगर भेज देंगे और वह हमें अपने साथ ले जायेगा। मगर, वह कहीं मिला ही नहीं।'

'हो सकता है उसकी बस पहुंच नहीं पाई हो?'

'नहीं। उसने कार लेकर आना था। हम दोपहर को ही रामनगर पहुंच गए थे। मैंने अपनी कार वहीं रखनी थी और उसकी गाड़ी में जाना था।'

'इसका अर्थ है कि रास्ते में कहीं सड़क पर कोई पत्थर गिरा हो या कोई पेड़ टूट कर सड़क के बीचों बीच गिर गया हो। अक्सर यहाँ ऐसा होता है।'

तभी काका चाय और एक प्लेट में गरम-गरम पकोड़ियां ले आया। एक टेबल तीनों के बीच में रखकर बोला - 'तब तक आप चाय पीजिए और पकोड़ियां खाइए। खाना तैयार होने में थोड़ा वक्त लगेगा।' फिर वह धर्मा के पास आया और बोला - 'तुम्हें ठंड तो नहीं लग रही है। स्वेटर ले आऊं।'

'नहीं, काका ठीक हूं।'

'खाना, यहीं खाओगे न, कि ऊपर?'

'यहीं, इनके साथ ही खाऊंगा।'

फिर वे चाय पीने लगे। जब काका चले गए तो शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'ये तुम्हारा नौकर है?'

धर्मा ने रूंधे कंठ से कहा - 'ये मेरे सब कुछ हैं। मेरे काका हैं। मैं इन्हीं के सहारे जी रहा हूं। नहीं तो पता नहीं कब मर गया होता।' फिर वो चुप हो गया। आँखों से पानी बहकने लगा।'

'अरे - अरे ये क्या? आई एम सॉरी जो मैंने कुछ गलत कह दिया हो। आखिर ऐसी क्या बात हुई।' शमशेर सिंह जी ने उनके कंधे पर हाथ रखकर कहा।

धर्मा ने अपने हाथों से आंसू पोंछे और बोले - 'आप मुझे व्हील चेयर में बैठे देखकर आश्चर्य कर रहे होंगे। सोचते होंगे कि मेरे पैरों में दर्द है या चोट लगी है। ऐसा कुछ नहीं है। मैं एक अभागा इंसान हूं। जिसका कोई नहीं है। मैं एक लाचार, अभागा और अपाहिज़ इंसान हूं। काका और काकी ने ही मेरा पालन-पोषण किया है।'

माधुरी के चेहरे से ऐसा प्रतीत होता था जैसे उसे बेहद दुख हो रहा हो।

शमशेर सिंह जी ने प्यार से कहा - 'आखिर हुआ क्या?' क्या आप गढ़वाल के रहने वाले हैं?'

धर्मा कुछ देर मौन रहे। फिर कुछ निश्चय कर बोले - 'मेरे पिता फौज़ में थे। वे गढ़वाल रेजीमेंट में मेज़र के पद पर थे। एक युद्ध में उनके पैर में गोली लगी। वे ठीक तो हो गए लेकिन लंगड़ाकर चलते थे। अतः उन्होंने फौज़ से रिटायरमेंट ले लिया। उसके बाद उन्होंने बिरोंखाल में जमीन लेकर खेती शुरू कर दी। मेरी मां को भी यहीं ले आए। उन्होंने चार कमरों का एक मकान बनाया और वहाँ रहने लगे। फिर कुछ सालों बाद में पैदा हुआ। मेरे पिता ने मेरा नाम धरम सिंह रखा। मां-बाप के लाड़-प्यार के अलावा आस-पड़ोस के लोगों का भी मुझे खूब प्यार मिला। मैं धीरे-धीरे बड़ा होने लगा। हमारे पड़ोस में ही एक छोटे से घर में काका-काकी रहते थे। तब उनकी कोई संतान नहीं थी। उनका आना-जाना हमारे घर होता रहता था।

एक दिन पिताजी रामनगर कुछ खरीदने गए थे। जब वे शाम को घर आये तो उन्होंने बताया कि मरचुला में उन्होंने एक मकान खरीद लिया है। घर में खूब खुशी मनाई गई। काका-काकी को भी खुशी में शामिल किया गया।

तब काकी ने मां से कहा - 'दीदी, तुम्हारा बेटा धर्मा बहुत खुशियां लेकर आया है। ईश्वर इसे लम्बी उमर दे।'

अब हम कभी-कभी यहाँ आया करते थे। दो चार दिन यहाँ रहते थे। दो एक बार काका और काकी को भी साथ लाये। उनको साथ लाने की जिद मेरी ही रहती थी। मैंने काकी को पूरा घर दिखाया और बोला था - 'काकी अपने लिए कमरा पसंद कर लो। मैं तो ऊपर रहूंगा इसलिए तुम भी ऊपर का ही कमरा चुन लो।'

काकी मुझे अपने सीने से चिपटाकर खूब रोयी। फिर मैं जब पांच साल का हुआ तो मुझे वहीं एक स्कूल में पहली क्लास में भर्ती कर दिया गया। स्कूल पास ही था। लेकिन मुझे छोड़ने कभी मां जाती और कभी काकी। एक हफ्ता तो आराम से चला। फिर एक दिन जब मैं सुबह उठा तो मैं उठ नहीं पाया। मेरे दोनों पैर सुन्न हो गए थे। मैं रोने लगा। मां ने मुझे उठाया और नीचे खड़ा किया तो मैं गिर गया। मां चिल्ला उठी। उसी अवस्था में उन्होंने मुझे उठाकर चारपाई पर लिटाया और पैरों की मालिश करने लगी। पर मेरे पैर सुन्न ही रहे। मां जोर-जोर से रो उठीं। रोने की आवाज़ सुनकर काका दौड़े आए, साथ में काकी भी आ गई। मां ने रोते-रोते बताया कि इसके दोनों पैर सुन्न हो गए हैं। यह खड़ा नहीं हो पा रहा है। इसके पिताजी को बुला दो।

पिताजी सुबह ही खेतों पर जाते थे। काका ने कहा - 'पहले इसे अस्पताल में डाक्टर को दिखा देते हैं। तुम भी मेरे साथ चलो।' फिर काकी से बोले - 'तुम खेतों में जाकर मेज़र साहब को अस्पताल भेज दो।'

यह कह कर उन्होंने मुझे गोद में उठाया और बाहर की ओर भागे। मां भी दरवाजा बंद किये बिना पीछे-पीछे रोती हुई दौड़ी। अस्पताल नजदीक ही था। वहाँ डाक्टर को दिखाया तो वह बोला - 'यह लकुवा के लक्षण हैं। इन्हें फालिज़ पड़ गया है। मैं दवा दे रहा हूं। यह इन्हें दे देना और एक तेल है। इससे

दिन में तीन बार मालिश करना।' तब तक पिताजी भी आ गए। डाक्टर की बात सुनकर वे बोले - 'डाक्टर साहब, इतने छोटे बच्चे को भी लकुवा हो सकता है क्या?' अभी इसकी उम्र ही क्या है।'

'मेज़र साहब, किसी भी उम्र में लकुवा हो सकता है। यह तो हमारी मष्तिक की नसों में कहीं दबाव या खराबी की वजह से होता है। दवा लीजिए और ईश्वर पर भरोसा रखिये।'

पिताजी कुछ न बोले। वे मुझे लेकर सीधे गांव के वैद्य सुमन शर्मा के पास पहुंचे और मुझे उनके चरणों के पास लिटा कर बोले - 'वैद्य जी, इसे देखिये, इसके दोनों पैर सुन्न हो गए हैं। इसे ठीक कर दीजिए।'

वैद्य जी ने मेरी नाड़ियों पर अपनी उंगलियां रखीं। मेरी आँखें खोलकर देखीं और बोले - 'सिर की नसें कमजोर हो गयीं हैं। इसे लकुवा हो गया है। मैं दवा देता हूं। ठीक हो जायेगा। इसे ठंड से बचाना।'' उन्होंने चार पुड़ियां और एक तेल दिया और कहा - 'कमर से लेकर पैरों के तलवे तक सरसों का तेल डालकर, हल्का गर्म करके दिन में दो बार मालिश करो। दो-चार दिन में ठीक हो जायेगा। अच्छा हुआ तुम जल्दी आ गए।'

फिर पिताजी मुझे घर ले आए। घर पहुंचते ही काकी भी आ गई। मैं उन्हें देखकर रोने लगा। काकी मेरे सिर पर हाथ रखकर खुद भी रो दीं।

किन्तु, मैं ठीक नहीं हुआ। पिताजी और मां मुझे लेकर कई मंदिरों में भी गए। कई बाबाओं से मिले। तब मुझे लेकर रामनगर के कई डाक्टरों के पास गए। दवाइयां चल रहीं थीं, किन्तु मैं ठीक नहीं हुआ। फिर वे मुझे लेकर दिल्ली एम्स में गए। एक हफ्ता हम वहाँ रहे। सभी ने ठीक होने की केवल उम्मीद ही दी।

थक हार कर हम फिर गांव चले आए। पिता तो सुबह ही खेतों पर चले जाते। किन्तु मां दिनभर रोती ही रहती थी। काका भी पिताजी के साथ खेतों में चले जाते थे। काकी अब कभी-कभी आती थीं। किन्तु जब भी आतीं मुझे देखकर रोने लगती थीं। काकी का पेट अब काफी बड़ा हो गया था। एक दिन मां ने बताया कि उनके बच्चा होने वाला है और वो भी मां बन जायेंगी। उस दिन मैं बहुत खुश था। मैंने मां से हलवा बनाने के लिए कहा। मां ने हलवा बनाया तो मैंने कहा - 'मां, थोड़ा सा हलवा मैं काकी को देना चाहता हूं। ले चलोगी क्या।'

मां रो दी। फिर मुझे गोदी में उठा कर काकी के यहाँ ले गई। मैंने काकी को हलवे की प्लेट दी और कहा - 'काकी मेरा भैया होगा या बहिन। जो भी हो अब मैं उसके साथ खेला करूंगा।'

काकी और मां दोनों फूट-फूट कर रो पड़े।

फिर वह मनहूस दिन आया। जिस दिन सुबह मां उठी ही नहीं। वह हमेशा-हमेशा के लिए सो गई। मैं सूनी आँखों से उसे देखता हुआ उसकी बगल में लेटा रहा। वह तो जब काकी पता लगाने आई कि दीदी अभी तक बाहर क्यों नहीं निकली। जब देखा और सिर पर हाथ रखा तब वे रो पड़ीं। मुझे उठा कर बाहर लाई और एक पड़ोसी को बुलाकर खेतों में से मेज़र साहब और काका को जल्दी बुला लाने के लिए कहा।

दोनों दौड़-दौड़ आये और काकी ने रो-रोकर सारी बात बताई। पिताजी दौड़कर अंदर गए थोड़ी ही देर में उनके जोर-जोर से रोने की आवाज़ आने लगी। काका उन्हें पकड़ कर बाहर ले आए।

फिर काका ने ही सारा कार्य किया। गांव के कुछ लोगों को बुलाया और मां की अर्थी उठाकर ले गए। पिताजी टूट चुके थे। वे सूनी आँखों से देख रहे थे। वे मां के साथ शमशान घाट पर नहीं गए थे।

उसके बाद पिताजी ने खेत पर जाना छोड़ दिया। बस, मेरे पास ही बैठे रहते और रोते रहते थे। काका ने उन्हें बहुत समझाया। किन्तु, वे नहीं माने। मैं भी उनको रोता देख रो पड़ता था।

एक महीने के बाद, एक दिन उन्होंने काका और काकी को बुलवाया और कहा - 'मैं धर्मा को लेकर मरचुला जा रहा हूं। अब यह बड़ा हो गया है। वहीं इसे किसी स्कूल में डाल दूंगा। यह अपाहिज़ है तो क्या हुआ। कम से कम शिक्षित तो हो जाये।'

'लेकिन तुम अकेले कैसे संभालोगे। खाने पीने का कैसे करोगे। फिर ये स्कूल कैसे जायेगा?' काका ने कहा तो पिताजी बोले - 'मैं सबकुछ कर लूंगा। एक व्हील चेयर लेकर इसे स्कूल छोड़ आऊंगा और छुट्टी होने पर ले आया करूंगा।'

'और यहाँ जो खेती है, मकान है। उसका क्या?' काका ने गुस्से से पूछा।

'खेत तुम रख लो। अपनी झुग्गी छोड़ दो और मकान में रहो।' पिताजी ने शांति से उत्तर दिया।

काका फिर बोले - 'मुझे नहीं चाहिए तेरे खेत और मकान। ये सब धर्मा के हैं। ऐसा करते हैं, हम भी तेरे साथ चलते हैं।'

'फिर खेतों को कौन देखेगा?' तेरी पत्नी के बच्चा होने वाला है। मारेगा क्या उसे। ऐसा कर अबकी फसल काट कर खेत बढ़ाई पर दे दे।'

काका चुप हो गए। फिर एक दिन पिताजी मुझे लेकर चलने के लिए तैयार हुए। मां के सारे वस्त्र और गहने एक संदूक में भरकर घर से बाहर रखा। मुझे उठाया और काकी के पास आए। काकी का रो-रोकर बुरा हाल था। उन्होंने मुझे अपनी गोद में उठा लिया और जोर-जोर से कभी मेरे माथे को,

कभी मेरे गालों को चूमने लगी। मैं काकी से बिछुड़ने से डर से चीत्कार कर उठा।

काका ने संदूक उठाया और पिताजी मुझे उठाये बस स्टैंड तक आए। जब बस आई तो काका भी हमारे साथ ही मरचुला तक आये। हमें यहाँ छोड़कर काका उसी वक्त चले गए।

पिताजी मेरे लिए व्हील चेयर ले आए थे। फिर एक-दिन वे मुझे व्हील चेयर पर बिठाकर स्कूल ले गए और मुझे फिर से पहली क्लास में भर्ती कर दिया। स्कूल मास्टर भी अच्छे थे। वे मेरा बहुत ध्यान रखते थे। स्कूल के बच्चे मुझे व्हील चेयर में इधर-ऊधर बड़े प्यार से घुमाते थे। मैं पढ़ने में अच्छा था।

खाना पिताजी ही बनाते। यद्धपि खाने में स्वाद नहीं आता था। किंतु पेट भर जाता था। मैं धीरे-धीरे बड़ी कक्षाओं में पहुंचने लगा।

एक दिन काका आए। वे अपने साथ में एक नाटे से व्यक्ति को लेकर आए थे। उन्होंने बताया कि उनकी बेटी हुयी है। इसीलिए वे बीच में नहीं आ सके। मैं बहुत खुश हुआ। उस दिन मैं स्कूल नहीं गया। दिनभर काका के साथ रहा। जिस व्यक्ति को वे लेकर आये थे उसका नाम दामोदर पांडे था। काका ने पिताजी को बताया कि वह खाना बनाया करेगा और यहीं रहेगा। तुम कैसा खाना बनाते हो वे जानते हैं।

पिताजी ने काका से कहा - 'बेटी हो गई है। लक्ष्मी आई है। अब तो उस घर में रहना शुरू कर दो।'

'अरे वो मेरा घर कहाँ है, वो तो धर्मा का घर है। धर्मा की मरजी है वह यहाँ रहे या वहाँ।'

'दूसरे दिन काका चले गए और पांडे जी यहाँ रह गए। तब से वे यहीं हैं।'

मेरी पढ़ाई चलती रही। जब मैंने पांचवी पास कर ली तो मुझे रामनगर के इंटर स्कूल में भर्ती करवा दिया। पिताजी ने एक व्हील चेयर और ले ली जो बस स्टॉप के पास ही एक दुकान में रखवा दी। हम यहाँ से सुबह की बस से जाते। वहाँ बस से उतरकर मुझे व्हील चेयर में बैठाते। अब मैं व्हील चेयर अपने हाथों से चलाकर स्कूल ले जाता था। इसमें ब्रेक भी हैं। हाँ ऊपर चढ़ाई में जोर बहुत लगाना पड़ता था। किंतु जब मेरी लड़कों से दोस्ती हो गई तो वे बस स्टॉप तक मेरे साथ आते और मुझे बस में चढ़ाकर मेरी व्हील चेयर दुकान में रख देते थे। बस के ड्राइवर और कंडक्टर भी रास्ते में मेरा ख्याल रखते और मरचुला में मुझे उतार कर चले जाते। कभी पिताजी या पांडे जी आकर मुझे ऊपर ले आते।

मैंने इंटर किया। फिर मैंने गढ़वाल यूनिवर्सिटी से बीए और एमए किया। इसी बीच एक दिन काका ने बताया कि उनको एक बेटा हुआ। भाई के आने से मैं बहुत खुश हुआ। मैंने उसे देखने कि ज़िद की तो पिताजी ने मुझे उनके साथ भेज दिया। मेरी चेयर भी साथ में भेजी। जब मैं घर पहुंचा और काकी-काकी चिल्लाया तो काकी दौड़ कर बाहर आई और मुझे अपनी बाहों में धामकर रो पड़ीं। मैंने उनसे कहा- 'क्या काकी, अब तो मैं बड़ा हो गया हूं। अब भी रो रही हो। पहले मुझे भैय्या के दर्शन तो करने दो।'

तब वे अपने आंसू पोछते हुए खटिया के पास ले गईं और बोली - 'ये है तेरा छोटा भाई। मैं उसके बगल में बैठकर उसके साथ खेलने लगा। काकी ने मुझे थोड़ा-सा गुड़ दिया। कुछ देर बाद मैंने पूछा - 'गुड़िया बहिन कहाँ है?'

'वह मामा के यहाँ गई है। दो-चार दिन में आएगी।'

उस रात में वहीं रहा। दूसरे दिन सवेरे ही काका मुझे मरचुला ले आए। गुड़िया से न मिलने का गम मुझे सताता रहा।

धीरे-धीरे समय बीतता रहा। फिर पिताजी को कैंसर हो गया। इलाज करवाया किंतु कोई लाभ नहीं हुआ। डाक्टरों ने उन्हें दिल्ली जाने की सलाह दी। लेकिन मेरी वजह से वे नहीं गए और एक दिन वे मुझे छोड़ कर चले गए।

तब से काका यहीं हैं। काकी भी कभी-कभी आ जाती हैं। गुड़िया अभी हाईस्कूल में दसवीं में है और भाई पांचवी में है। दोनों बिरोंखाल में ही पढ़ते हैं। काकी घर और खेती का काम संभालती हैं। उन्होंने हमारे घर में रहने से मना कर दिया। कहती हैं कि यहाँ दीदी की याद आती है। किंतु हर साल घर की पुताई जरूर करवा देती हैं। जब मैंने उनसे कहा कि घर किराये पर दे दो तो वो झिड़क कर बोली - 'मां को किराये पर लगाओगे क्या। शरम नहीं आती। खबरदार आइंदा ऐसा कहा तो।' बस तब से मैं मकान के बारे में कुछ नहीं कहता।

दोनों के चेहरों पर यह सब सुनकर दुख के भाव झलकने लगे। माधुरी की आँखें गीली हो गई थीं।

तभी काका ने आकर भोजन तैयार होने की सूचना दी। फिर वे सब डायनिंग टेबल पर आए। धर्मा की व्हील चेयर भी काका ने उस ओर सरका दी।

-2-

सुबह धूप निकल आई थी। धर्मा अपनी व्हील चेयर पर बाहर बैठा हुआ अखबार पढ़ रहा था। हल्की धूप में बैठा वह स्वेटर पहिने हुए था। उसी समय शमशेर सिंह जी वहाँ आ गए। उनके पीछे-पीछे पांडे दो कुर्सियां भी ले आया था। शमशेर जी ने कुर्सी धर्मा के समीप खिसका कर बैठते हुए कहा - 'मौसम खुल गया है। मैं गाड़ी ठीक करवा लेता हूं। सोच रहा हूं कि दोपहर तक हम निकल जायें।'

तब धर्मा ने हंस कर कहा - 'गाड़ी तो आप ठीक करा लीजिए किंतु जा नहीं पायेंगे। अखबार में खबर छपी है कि बिरोंखाल में बहुत जगह सड़क टूट चुकी है। कई जगह चीड़ के पेड़ टूट कर सड़कों पर गिरे हुए हैं। लोग रास्तों में अटके हुए हैं। बसें भी जगह-जगह रूकी हुई हैं। कल रात को रास्ता ठीक करने को काम नहीं हो सका है। पहाड़ों से अभी-भी पानी झरने की तरह गिर रहा है। ऐसे में जाना ठीक नहीं है।'

शमशेर सिंह जी सोच में पड़ गए। तभी माधुरी भी वहाँ आ गई। वह अपने गीले कपड़े भी साथ लाई थी। शायद वह नहा कर आई थी। क्योंकि उसके बाल गीले दिख रहे थे। आते ही उसने अपने पिता से पूछा - 'कब चलना है पापा?'

'क्या पता कब चलेंगे। सड़कें तो कई जगह से टूट गई हैं।'

वह रूक गई और बोली - 'अब क्या होगा। मेरे कपड़े भी गीले हैं। इन्हे सुखा देती हूं।'

फिर वह उस ओर बढ़ गई जहाँ एक लम्बा तार पेड़ से लेकर गेट के पास बंधा था। कपड़े तार में डालकर वह फिर पिता के पास आई और बोली - 'नीचे चल कर अटैचियां ले आते हैं।'

'हाँ तुम ठीक कहती हो। शमशेर सिंह जी ने उठते हुए कहा - 'तुम यहीं रूको। मैं लेकर आता हूं। किसी मैकेनिक को कार भी दिखा दूंगा।'

'ठहरिये।' धर्मा ने कहा - 'आप पांडे जी को ले जाइये। वह सामान ले आएगा। लेकिन यहाँ कार ठीक हो सकेगी, इसमें संदेह है। यहाँ कोई मैकेनिक नहीं है। जो है वो बस नाम के मैकेनिक हैं। जो सिर्फ बाइक की छोटी-मोटी रिपयेर कर सकते हैं। आपको तो रामनगर से ही कोई बुलाना होगा।'

'ठीक है देख लेता हूं।' शमशेर सिंह जी ने कहा और माधुरी से बोले - 'तुम यहीं रहो। मैं पांडे जी को ही लेकर जाता हूं। फिर वे धर्मा से विदा लेकर चले गए।

माधुरी पास आकर कुर्सी पर बैठ गई। उसे पास में बैठा देखकर धर्मा रोमांचित हो गया। वह एक टक माधुरी के चेहरे की ओर देखने लगा। माधुरी ने भी यह महसूस किया। उसके चेहरे पर एक मुस्कान की रेखा उभर आई। फिर उसने पूछा - 'यहाँ अकेले में आप कैसे रह पाते हैं?' न टी.वी. है और न कुछ?'

'मैं अकेला कहाँ हूं।' धर्मा ने भी हंस कर कहा - 'काका हैं, पांडे जी हैं। कभी-कभी काकी भाई-बहिनों के साथ आ जाती हैं।'

'फिर भी कोई साथी?'

'साथी बहुत हैं। मेरे स्कूल-कालेज के साथी जो रामनगर में रहते हैं, यहाँ आ जाते हैं। दो-चार दिन वे यहाँ रहते हैं। खूब धमा-चौकड़ी होती है।'

माधुरी सोच में पड़ गई। फिर कुछ रूककर बोली - 'यहाँ एंटरटेन्मेंट के लिए तो कुछ नहीं है।'

'है क्यों नहीं। यहाँ के लोग हफ्ते दो हफ्ते में नाच-गाने का प्रोग्राम करते हैं। हम वहाँ जाते हैं और पूरा आनन्द लेते हैं। अरे हाँ, यदि आप आज रूकीं तो मैं आपको नीचे गांव में ले जाऊंगा। कल गांव की लड़कियों का गीत-संगीत का कार्यक्रम हैं। आप भी चलना और गढ़वाली गीत एवं नृत्य देखना।'

माधुरी हंसी और फिर गंभीर होकर पूछा - 'आपने अमेरिका या कहीं और इलाज़ नहीं करवाया। कहते हैं पैरालिसिस ठीक हो सकता है।'

धर्मा का चेहरा मुरझा गया। वह बुझे स्वर में बोला - 'मेरी रिपोर्ट एक डाक्टर ने अमेरिका के किसी डाक्टर के पास भेजी थी। यह उस समय की बात है जब पिताजी जीवित थे। करीब एक महीने के बाद वहाँ से जवाब आया कि अभी इस पर रिसर्च चल रही है। कई बार उम्र बढ़ने के साथ लकुवा अपने आप ठीक हो जाता है। बस तब से हम चुप लगा गए।'

माधुरी का चेहरा भी मायूस हो गया। उसे धर्मा पर दया आ रही थी कि इतना सुंदर, बीस-बाइस साल का नौजवान जिंदगी भर के लिए अपाहिज़ हो गया। वह कुछ न बोली और अपना चेहरा दूसरी ओर घुमा लिया।

थोड़ी ही देर में पांडे जी दो सूटकेस लिए आ गए। उनके पीछे-पीछे मायूस से शमशेर सिंह जी भी आए। पांडे जी दोनों सूटकेस लेकर अंदर चले गए और शमशेर सिंह जी धम्म से कुर्सी पर बैठकर निश्वास छोड़ते हुए बोले - 'यहाँ कोई मैकेनिक ढंग का नहीं है। एक-आद ने गाड़ी देखी पर कुछ न कर सका। अब वह रामनगर किसी के हाथ खबकर भेजकर मैकेनिक को बुलायेगा।'

माधुरी ने पूछा - 'मैकेनिक कब आएगा।'

'पता नहीं। आज शाम तक आए या कल। कुछ कह नहीं सकते। फिर भी हम जा नहीं सकते। नीचे लोग बता रहे थे, नीचे पहाड़ों में खूब तेज बारिश हुई और अंधड़ भी चला। कई पेड़ टूट गए। सड़के बह गईं। बड़े-बड़े पत्थर गिरे। पता नहीं कब तक रास्ता साफ हो।'

माधुरी उठकर पांडे जी के पीछे-पीछे अंदर चली गयी। पांडे जी से उन्होंने दोनों अटैचियां को अलग-अलग कमरों में रखवा दिया। तब पांडे जी ने पूछा - 'मैं मालिक के लिए चाय बना रहा हूं। आप भी पियेंगी?'

माधुरी ने हाँ में सिर हिला दिया और बोली - 'आप चाय बहुत अच्छी बनाते हो। कल रात का खाना बहुत स्वादिष्ट था। वो आपने ही बनाया था?'

पांडे झेंप गए और बोले - 'बस यूं ही रूखा-सूखा बना लेता हूं।'

'आपके घर में कौन-कौन हैं?'

'मां है, पिताजी हैं, और मेरे बड़े भाई हैं।'

'वे क्या करते हैं?'

'थोड़े से खेत हैं। वहीं काम करते हैं।'

'तो आप यहाँ क्यों आ गए?'

'मैं होटल में बावर्ची का काम करता था। एक दिन काका ने कहा कि मेरे साथ चलो तो यहाँ आ गया। वहाँ होटल वाला खाना देता और महीने के दो सौ रूपये देता था। यहाँ मुझे पूरे दो हजार रूपये मिलते हैं और आराम भी बहुत है।'

'घर नहीं जाते?'

'जाता हूं न। जब पैसे मिलते हैं तब जाता हूं। डेढ़ हजार मां को देकर दो दिन बाद लौट आता हूं।'

'अच्छा करते हैं। शादी नहीं की?'

'करूंगा। अभी चार महीने बाद भाई की शादी है। फिर करूंगा।'

'शाबास। जाइए चाय बना दीजिए।'

जब वह चला गया तो माधुरी ने सोचा कपड़े बदल लें। किंतु उसका यह विचार, विचार ही रहा। उसने सोचा, अब कल ही कपड़े बदलेगी। यह सोच कर वह बाहर निकल आई।

-3-

दूसरे दिन शमशेर सिंह जी फिर नीचे गांव में गए। वहाँ मालूम पड़ा कि मैकेनिक अभी तक नहीं आया। उसने बताया कि रास्ता खराब होने की वजह से कोई बस नहीं चल रही है इसीलिये वह आ नहीं पाया। मायूस होकर वे लौट आए।

धर्मा जी बैठे अखबार पढ़ रहे थे और माधुरी ने भी दूसरे वस्त्र पहन लिए थे। इस समय वह अंदर ही थी।

शमशेर सिंह ने बैठते हुए कहा - 'आज रामनगर से कोई बस नहीं चली। इसीलिये मैकेनिक नहीं आ पाया।'

'हाँ, सही है। यह अखबार देखिये। कुमांऊ का रास्ता भी ब्लॉक हो रखा है। वहाँ भी सड़क पहाड़ों के बीच से ही जाती है।'

'थोड़ी देर में माधुरी भी आ गई। उसने सलवार-कुर्ता पहिना था। कुर्ते की लंबाई पैरा तक थी। साथ ही एक सुंदर चुनरी गले में डाल रखी थी। उसका सौंदर्य देखकर धर्मा की आँखें खुली की खुली रह गईं माधुरी ने भी उसकी ओर देखा। फिर उसने नज़रें झुका लीं और चेहरा शर्म से लाल हो गया। शमशेर सिंह जी ने यह सब देखा तो माधुरी से बोले - 'आज भी जा नहीं सकेंगे। एक तो मैकेनिक नहीं आया दूसरे रास्ते अभी खुले नहीं हैं। अब तो पता नहीं कब तक यहाँ रहना पड़ेगा।'

माधुरी ने कहा - 'उनकी बेटी की शादी चार दिन बाद है। ऐसा ही रहा तो फिर जाने का क्या फायदा। तब तो वापस ही घर चलेंगे। आप नीचे गए थे, वहाँ से फोन कर देते।'

झुंझला कर शमशेर सिंह जी बोले - 'तुम और तुम्हारी मां, हमेशा मुझे ही बेवकूफ़ क्यों समझते हो। कल भी मैंने फोन किया। आज भी ट्राई किया। लेकिन फोन काम हीं नहीं कर रहे हैं। दुकानदार ने बताया कि जब भी बारिश होती है लाइनें बंद हो जाती हैं। टेलीफोन की लाइनें टूट जाती हैं और तीन-चार दिन फोन ठप्प हो जाते हैं।'

धर्मा ने कहा - 'वो ठीक कह रहे हैं। अक्सर महीने में पांच-छै दिन ऐसा ही रहता है। न फोन चलते हैं और न ही मोबाइल फोन। वैसे भी सिवाय बी.एस.एन.एल के फोनों के अलावा दूसरे फोन बेकार हैं। यहाँ उन्हीं का टॉवर है।

'आपके यहाँ फोन है?' माधुरी ने पूछा।

'हाँ, पर क्या करूंगा लेकर ....।' फिर वह एकदम चुप हो गया।

काका चाय लाकर दे गया। चाय पीते-पीते माधुरी ने पूछा - 'आप गांव की औरतों के नाच-गाने की बात कर रहे थे। वह कहाँ है?'

'आप देखेंगी?' उतावली से धर्मा ने पूछा।

'आप दिखायेंगे तो देख लूंगी। पहाड़ी गीत कैसे होते हैं यही देख लें। माधुरी ने हंसकर कहा। फिर अपने पिता से पूछा - 'आप चलेंगे?'

'मैं घर बैठा क्या करूंगा। चलो चलता हूं। चाय पीकर कपड़े बदल लूं।' किंतु वे कप पकड़े ही तेजी से अंदर चले गए। दोनों ही हंसने लगे।

काका ने धर्मा को अपने कंधे पर उठाया और तीनों नीचे उतर कर दुकानों के बीच की सड़क पर आगे बढ़े। फिर थोड़ी सी पहाड़ी चढ़कर एक मैदानी इलाके में पहुंचे। वह बहुत बड़ा मैदान था। रंग-बिरंगे गुब्बारों से उसे सजाया गया था। बीच मैदान के एक ओर नर्तक और लड़कियां थीं। लड़कियों का श्रृंगार देखकर माधुरी चकित हो गई। वे गले में सोने के बड़े-बड़े

हार पहिने हुए थीं। नाक में सोने की नथ, मुंह ढंके हुए थीं और उस नथ की चैन सिर के बालों में फंसायी गई थी। कानों में बड़ी-बड़ी बालियां जो गालों को छू रहीं थीं। नथ पर रंग-बिरंगे मोती जैसे लगे हुए थे। कमर पर चांदी की करघनी और पैरों में भी चांदी की पायल थी। वे रंग-बिरंगे वस्त्र पहिने हुए थीं।

काका ने किसी को बोलकर तीन कुर्सियां मंगवा लीं और बीच की कुर्सी पर धर्मा को बिठा दिया। उसके एक ओर माधुरी और दूसरी ओर शमशेर सिंह जी बैठ गए। काका धर्मा के पीछे ही खड़ा रहा। नर्तकों और नर्तिकाओं का नृत्य और गान काफी देर तक चला। धर्मा माधुरी को बता रहा था कि अपनी भाषा में वे क्या गा रहे हैं। सबसे अंत में वे नर्तिकायें आईं जो गहनों से लदी थीं और रंग-बिरंगे कपड़े पहिने थीं।

हुड़की की ताल पर लड़कियां थिरक उठीं। जो मुख्य नर्तकी थी वह गा उठी - 'मेरी नथुली लेहि आयां, ओ स्वामी जब तुम परदेश जैला।'

धर्मा ने बताया कि वह अपने पति को संबोधित होकर कह रही हैं कि जब आप परदेश जायें तो मेरे लिए नथ लेकर आएं। फिर आप मुझे भीड़ में भी रंग-बिरंगी नथ देखकर पहिचान लेंगे।

माधुरी ने पूछा - 'आप गढ़वाली जानते हैं?'

'मैं बोल नहीं पाता, लेकिन समझ लेता हूं। काकी जब आती है वह अपनी ही भाषा में बात करती है और मैं हिंदी में बोलता हूं। वह हिंदी अच्छी तरह से बोलती और समझ लेती हैं। मां भी अपनी भाषा में ही बात करती थीं।'

'मेरी भी सीखने की बहुत इच्छा है। बहुत ही प्यारी भाषा है। ये लोग जो गीत गा रहे हैं उनकी लय बहुत ही मधुर है। ये लड़कियां जो नथ वाला गाना गा रही थीं, वह आपको आता है?'

धर्मा कुछ देर उसकी ओर देखता रहा फिर हंस कर बोला - 'आपको गीत अच्छा लगा। बड़ी खुशी की बात है। आप शादी में गांव जा रही हैं। वहीं आप काफी गीत सुन पायेंगे। वहाँ औरतें मांगल लगाती हैं। गीत गाती हैं। वह सब नोट कर लीजिए।'

'पता नहीं शादी में जा भी सकेंगे या नहीं।' माधुरी ने मायूसी से कहा - 'यहाँ और क्या है देखने लायक?'

'क्या होना है। जंगल हैं। चीड़ के घने ऊंचे-ऊंचे पेड़ हैं। कॉर्बेट पार्क है और दीबा देवी का एक मंदिर है।'

'आपने देखा है? माधुरी ने आश्चर्य से पूछा।

'हाँ मैंने सब देखा है। पिताजी ने मुझे सब दिखाया है। रामनगर से एक जीप मंगवाकर उन्होंने मुझे सब दिखाया था। मुझे सबसे अच्छा जंगल लगा। ठंडी हवा चलती है। पेड़ों की डालियां हवां के झौंकों से हिलकर संगीत बजाती हैं। जंगलों में लीसा निकालने वाले लोग मधुर वाणी में गढ़वाली गीत गाते हैं तो और भी आनंद आता है।'

'क्या हम जंगल में जा सकते हैं?'

'हाँ, क्यों नहीं। काका को भेजकर कल दोपहर के लिए जीप बुक करवा लेता हूं।' कह कर वह मायूस हो गया और धीरे-धीरे बोला - 'लेकिन शायद न जा पायें। अगर आपकी कार ठीक हो गई तो आप कल ही निकल जायेंगे।'

'इतनी जल्दी कहाँ जा पायेंगे। आगे का रास्ता तो ठीक होना चाहिए। क्या कल तक रास्ता ठीक हो जाएगा?' मुझे तो नहीं लगता। आप उदास न होइये जीप मंगवाइये।'

फिर माधुरी ने उसके कंधों पर हाथ रखकर कहा - 'रास्ता ठीक हो जायेगा तब भी हम कल यहाँ रूककर जंगल जरूर देखेंगे।'

माधुरी के हाथ का स्पर्श पाकर धर्मा रोमांचित हो गया। उसने माधुरी की ओर देखा। माधुरी मुस्कुरा कर उसकी ओर देख रही थी। दोनों की नज़र मिलीं। थोड़ी देर तक एक-दूसरे को देखते रहे। फिर माधुरी ने नज़रें झुका लीं।

शमशेर सिंह जी ने जब यह देखा तो आश्चर्य से माधुरी की ओर देखते रहे। लेकिन, बोले कुछ नहीं। कार्यक्रम समाप्त हो गया। उसके बाद पारितोषिक बांटे गए। उन लड़कियों के गीत और नृत्य के लिए उन्हें प्रथम पुरस्कार मिला था। सबने तालियां बजाई। उसके पश्चात वे वापस आ गए।

-4-

दूसरे दिन काका कॉर्बेट पार्क जाकर एक जीप ले आये। जीप को नीचे ही छोड़कर वे ऊपर आये और बताया कि जीप नीचे खड़ी है। साथ ही उन्होंने बताया कि नीचे से अभी तक कोई गाड़ी या बस नहीं आई है। सुनकर शमशेर सिंह जी मायूस हो गए। लेकिन माधुरी खुश थी। उसे जंगल देखने की बड़ी इच्छा थी। वह धर्मा के पास आई और हंस कर बोली - 'चलो अब तो जीप आ गई है। आज मुझे जंगल दिखाओ।'

धर्मा भी खुश था। हंस कर बोला - 'जंगल तो यहाँ ऊपर से ही दिख जायेंगे। आप अभी ऊपर की बाल्कनी में नहीं गयीं। वहाँ से हरे-भरे जंगल दिख जाते हैं।'

'अरे वाह, जंगल देखने का मजा तो तब है जब उन्हें छूकर देखा जाये। कहीं तुमने अपना इरादा तो नहीं बदल दिया। तुम नहीं जाओगे तो मैं भी नहीं जाऊंगी।'

धर्मा का रोम-रोम खिल उठा। प्यार से उसकी ओर देखकर बोला - 'आप से वादा किया है तो साथ तो जाऊंगा ही ना।'

माधरी खुशी से झूम उठी। वह धर्मा की व्हील चेयर पकड़ कर हॉल में इधर-उधर घुमाने लगी। धर्मा ने पहले तो डर कर चेयर के हत्थों को जोर से पकड़ लिया और फिर जोर-जोर से हंसने लगा। थोड़ी देर बाद हंसते हुए बोला - 'अरे बस करो। कहीं मैं गिर ना जाऊं।'

माधुरी ने चेयर रोक कर कहा - 'ये मजबूत हाथ हैं जनाब, गिरने थोड़े ही दूंगी। वो भी बिना जंगल दिखाये।'

तभी शमशेर सिंह जी आ गए। उन दोनों की बातें सुनकर वे सोच में पड़े गए। और किचेन के द्वार पर खड़े काका मुस्कुराते रहे।

अपने पिता को देखकर माधुरी शरमाकर अपने कमरे की ओर भाग गई और धर्मा भी झेंप गया।

नाश्ता करने के बाद वे वहाँ से नीचे आये। काका धर्मा को लेकर पीछे बैठ गया। माधुरी भी पीछे की सीट पर ही बैठी और शमशेर सिंह जी ड्राइवर की बगल में बैठ गए। ड्राइवर ने जीप आगे बढ़ा दी। कुछ दूर तक वे रामनगर वाली सड़क पर चले। कॉर्बेट पार्क के थोड़ा आगे जाकर जीप जंगल की ओर मुड़ गई। शुरू में इक्के-दुक्के पेड़ दिखाई दिये। जैसे-जैसे आगे बढ़े जंगल घना होता चला गया। वे पेड़ बड़े-बड़े थे। कुछ और आगे जाने पर पहाड़ी खत्म हो गई और उसके बाद ढलॉन शुरू हो गया।

जीप यहीं तक जायेगी। नीचे ढलॉन में पैदल ही जाना होता है। लेकिन ये साहब नहीं जा पायेंगे।' ड्राइवर ने जीप के पीछे आकर कहा।

'नहीं हम यहीं उतरेंगे। यहीं से जंगल देखेंगे।' काका ने कहा। ड्राइवर ने पीछे का द्वार खोल दिया। पहले माधुरी उतरी फिर काका ने उतर कर धर्मा को अपनी गोदी में उठाया और पेड़ के सहारे खड़ा कर दिया। शमशेर सिंह जी उतर चुके थे।

पहाड़ी के नीचे तक पेड़ ही पेड़ दिखाई दे रहे थे। मोटे-मोट पेड़। माधुरी खुशी के मारे इधर-उधर दौड़ कर पेड़ों को छू रही थी। शमशेर सिंह जी भी आश्चर्य से उन पेड़ों को देखते रहे। उन्होंने काका से पूछा - 'ये किस चीज़ के पेड़ हैं? बड़े अजीब पत्ते हैं।'

काका ने बताया - 'ये चीड़ के पेड़ हैं। पहाडों में इसे कुलॉवं कहा जाता है।'

तभी माधुरी चिल्लाई - 'नीचे आ जाओ नीचे। वहाँ क्यों खड़े हो?

फिर वह एकदम चुप हो गई। धर्मा के चेहरे पर मायूसी छा गई। माधुरी को जैसे अपनी गलती का अहसास हुआ, वह जल्दी-जल्दी ऊपर आई और बोली - 'सॉरी, मुझे ध्यान नहीं रहा। एक काम करो तुम मेरा हाथ पकड़ो। मैं तुम्हें ले चलूंगी।'

'क्या बकवास कर रही हो।' शमशेर सिंह जी चिल्लाये - 'खुद भी मरोगी और उन्हें भी मारोगी। देख नहीं रही हो कैसी गहरी खाई है। एक बार लुढ़के तो कोई नहीं बचेगा। तुम भी ऐसे मत दौड़ो। आराम से आनन्द लो।'

माधुरी झेंप गई और धर्मा के कंधे पर हाथ रखकर खड़ी हो गई।

तभी उसने नीचे एक व्यक्ति को देखा। जो कमर में एक मोटा रस्सा बांधकर और उसका सिरा पेड़ के चारों ओर बंधा था, पेड़ के तने पर बंसूली से वार कर रहा था। उसकी पीठ पर एक बड़ा सा थैला लटक रहा था। उसके हाथ चल रहे थे और मधुर ध्वनि में कोई पहाड़ी गीत गा रहा था। गीत के बोल दर्द भरे थे और उसकी आवाज़ में भी दर्द झलक रहा था। गीत था -

'औंसी की कलिरात मादौ का मैना।

रामी का मंगदेर पौणा ए गीना।

रिम-झिम, रिम-झिम बरखा हूंणी च,

टप-टप, टप-टप कूड़ी चूंणिच।'

गीत में छलके दर्द से माधुरी की आँखें पनीली हो गयीं। धर्मा ने जब यह देखा तो अपने कंधे पर उसके हाथ पर हाथ रखकर बोला - 'इस गीत में एक मां का दर्द है। रिमझिम बारिश हो रही है। घर चू रहा है। ऐसे मौके पर बेटी रामी की मंगनी के लिए पाहुनें आ जाते हैं। मां घर में देखती है कि कुछ

सामान है कि नहीं। घर में कुछ नहीं होता। क्या करूं इनको क्या खिलाऊं। गरीब की बेटी की शादी भी बड़ी मुश्किल है। वह बारिश में ही पड़ोसियों के यहाँ कुछ मांगने जाती है। पड़ोसनें उसकी बेटी को गांव की बेटी समझकर कुछ देती हैं। इसमें बहुत देर हो जाती है। जब वह घर आती है तो बेटी को जमीन पर पड़े रोता देखती है और मंगनी के लिए आए मेहमान चले जाते हैं।'

माधुरी कुछ बोल न सकी। उसकी आँखों से आंसू उसके गालों को भिगो रहे थे। यह देख कर धर्मा ने कहा - 'आप तो ऐसे रो रही हैं जैसे कोई सच्ची घटना हो। यह मात्र एक गीत है। कवि की कल्पना। इस गीत को मेरी मां भी गुनगुनाया करती थी।'

माधुरी ने अपनी आँखें पोंछी और उसके पास से अलग हट कर उस व्यक्ति को काम करते देखने लगी।

उसी समय शमशेर सिंह जी ने काका से पूछा - 'वह आदमी क्या कर रहा है?' पेड़ों पर बंसूली मार-मार कर ख़राब कर रहा है।'

काका ने मुस्कुरा कर कहा - 'वह पेड़ ख़राब नहीं कर रहा है। वह पेड़ पर लीसा निकालने के लिए जगह बना रहा है। फिर इनके नीचे वह एक हंडिया लगा देगा। लीसा उसमें इकट्ठा हो जाने पर इक्टठा करके जंगल के प्रधान के डिपो में ड्रमों में भरकर आगे भेज दिया जाएगा।'

'ये लीसा क्या होता है और पेड़ों से कैसे निकलता है?' उन्होंने हैरान होकर पूछा।

'ये चीर के पेड़ हैं। इनका जो पानी निकलता है वो लेशदार और गाढ़ा होता है। यदि हाथ पर लग जाये ते साफ नहीं होता। मिट्टी के तेल से हाथ धोने पड़ते हैं।'

तभी उस व्यक्ति ने अपने पिछले थैले से एक छोटी सी हंडिया निकाली जो मिट्टी की थी। उसके मुंह पर एक तार बंधा था। उसने पेड़ों पर एक कील ठोककर हंडिया को उसपर लटका कर हंडिया का मुंह उस कटे हुये स्थान के नीचे फंसा दिया और अपना रस्सा खोल कर दूसरे पेड़ की ओर बढ़ गया।

'ये लीसा किस काम आता है?' माधुरी ने काका से पूछा।

'कई काम आता है। इससे गोंद बनती है। कई और काम में आता है।'

'ये इतना रिस्क लेकर काम करते हैं। कितना कमा लेते होंगे?' शमशेर सिंह जी सोच में डूब गए।

'जंगल का ठेका होता है। ये ठेकेदार के आदमी हैं। इन्हें पेड़ गिनकर दे दिये जाते हैं। एक पेड़ के लिए बीस रूपये मिलते हैं। इस आदमी के पास कम से कम तीन सौ पेड़ होंगे। यदि ये एक दिन में पचास पेड़ भी पूरा कर ले तो रोज़ के हज़ार रूपये कमा लेते हैं। फिर ये दूसरी जगह चले जाते हैं।'

'ठेकेदार को कैसे मालूम होगा कि इन्होंने कितने पेड़ किये हैं?'

काका हंसा और बोला - 'ठेकेदार बेवकूफ नहीं होता। उसके सुपरवाइज़र आकर चैक करते हैं। ये रोज आकर चैक करते हैं कि पेड़ों पर हंडिया ठीक से टंगी है या नहीं। उन्हें भी देखना पड़ता है। जितनों पर हंडिया ठीक से लगी हो उन्हें ही गिनते हैं। दूसरे, आप पेड़ों के ऊपर देखिये। सब पर नंबर लगे हुये हैं जो जंगलात वालों ने बहुत पहले लगवाये थे।'

माधुरी अपने पिता के पास आकर बोली - 'पापा, ऐसा लगता है इन्हीं जंगलों में एक घर बनाकर रह लें। ये हवायें मन को अपनी ओर खींच लेती हैं। कितनी शांति है यहाँ। न कोई प्रदूषण है। जी चाहता है यहीं बस जायें।'

'यह सब कुछ ही दिन अच्छा लगता है। फिर मन शहरों की ओर भागता है। बारिश हो तो रास्ते बंद। फिर बैठे रहो जैसे हम बैठे हैं। आये थे

शादी में शरीक होने के लिए और पड़े हैं आधे रास्ते में। चलो अब वापस चलें।'

'थोड़ी देर और घूमते हैं।' माधुरी ने ज़िद की।

'नहीं, बहुत देर हो गई है। मैंने जीप ड्राइवर से बात की है। वह कार को रामनगर तक पहुंचवा देगा। मैं कार ठीक करवा लेना चाहता हूं। चलो अब।' शमशेर सिंह जी ने कहा और ऊपर पहाड़ी पर चलने लगे।

काका धर्मा को उठा कर जीप के पास ले आए। शमशेर सिंह जी जीप में बैठ चुके थे और माधुरी जीप के पिछले भाग में खड़ी धर्मा का इंतजार रह रही थी।

फिर जीप मरचुला की ओर मुड़ गई। मरचुला के तिराहे पर जीप रूकी तो शमशेर सिंह जी ने कहा - 'मैं ड्राइवर के साथ कार लेकर रामनगर जा रहा हूं। हो सकता है मुझे देर हो जाये।'

'खाना खाकर चले जाते।' काका ने कहा।

'वहीं कुछ खा लूंगा। अच्छा तो चलता हूं।'

जब जीप वहाँ से चली गई तब वे आगे बढ़े। आंगन में अच्छी धूप थी। माधुरी ने काका से कहा - 'यहाँ धूप अच्छी लग रही है। यहाँ बैठ जाते हैं। क्यों?'

धर्मा ने खुश होकर कहा - 'हाँ काका मुझे यहीं छोड़ दो।'

'खाना खाकर बाहर बैठना।'

'खाना यहीं धूप में बैठ कर खा लेते हैं। क्यों?' धर्मा ने माधुरी की ओर देख कर पूछा।

'हाँ, काका यहीं खायेंगे। चलो मैं लेकर आती हूं।' वह उठकर चलने को तैयार हुई तो काका ने कहा - 'तुम लोग यहीं बैठो। खाना मैं और पांडे ले आएंगे।'

मुस्कुरा कर माधुरी बैठ गई। काका के जाने के बाद वह बोली - 'यहाँ धूप की गरमी बड़ी अच्छी लगती है। जी चाहता है यहीं रह जाऊं।'

धर्मा आश्चर्य और प्रसन्नता के भाव लिये उसे देखता रह गया।

माधुरी ने अपनी कुर्सी उसकी व्हील चेयर के पास सरका ली और बोली - 'तुम तो कह रहे थे यहाँ खेत हैं, मंदिर हैं और कॉर्बेट पार्क है। कहाँ है ये सब। मुझे तो सिर्फ जंगल ही दिखाई दिया।'

ये सब दूसरी ओर हैं। खेत देखने के लिए उसी ओर जाना पड़ेगा जिस ओर कल मेला लगा हुआ था। दीबा मंदिर के लिए जाना अभी कठिन है। क्योंकि रास्ता बंद है। हाँ कॉर्बेट पार्क जा सकते हैं। यदि आप कल यहीं रहे तो जा सकते हैं।'

माधुरी चिंतित हो गई। धीरे से बोली - 'परसों तो शादी है। हमें हर हाल में कल जाना ही होगा।'

काका एक छोटी टेबल ले आया था और पांडे खाने की थालियां ले आया। वह टेबल पर सामान रखकर दो गिलासों में पानी ले आया।

दोनों ने खाना खाया। खाने के बाद माधुरी अंदर आराम करने के लिए चली गई। लेकिन धर्मा वहीं चेयर पर बैठा आँखें बंद किये रहा।

शाम को करीब चार बजे शमशेर सिंह जी लौट आये। वे बड़े थके हुये उदास और मायूस लग रहे थे। आते ही वे धम्म से धर्मा के पास पड़ी कुर्सी पर बैठ गए। चौंक कर धर्मा ने आंखे खोली और उन्हें देख कर पूछा - 'क्या हुआ? कार बन गई?'

'कहाँ बन गई। यहाँ मैकेनिक भी बेकार हैं। कहता है इंजन में पानी चला गया है। अंदर की तारें गीली हो गयीं हैं। कहता है इंजन खोलकर साफ करना होगा। कल शाम को देने का वायदा किया है।'

'परसो तो आपने शादी में जाना है। कल शाम को तो रात हो जायेगी। फिर क्या होगा?' धर्मा ने सहानुभूति से कहा। किंतु मन ही मन वह खुश हो गया था। उसके चेहर पर हर्ष के चिन्ह साफ दिखाई दे रहे थे।

तभी माधुरी आ गई। उसने पूछा - 'कार ठीक हो गई पापा। सुबह जल्दी ही निकल चलेंगे।'

भुनभुनाते हुए शमशेर सिंह जी ने कहा - 'हाँ, तुम्हारी मम्मी को मैंने फोन कर दिया है कि हेलीकॉप्टर लेकर आ जाओ। उसमें बैठकर चलेंगे।' फिर रूक कर बोले - 'अब शादी की बात भूल जाओ। कार कल शाम तक ठीक होगी और रास्ता अभी भी बंद है। रामनगर में भी दुकानें ठप्प पड़ी हैं। अब तो कार ठीक हो तो घर ही चला जाये।'

माधुरी के चेहरे पर खुशी झलक आई। वह बोली - 'तो कल कॉर्बेट पार्क चलते हैं। वहाँ जंगली जानवरों को देख लेते हैं।'

शमशेर सिंह ने घूर कर उसे देखा। धर्मा ने कहा - 'हाँ, आप लोग कल कॉर्बेट पार्क हो आएं। वहाँ कई जानवर दिन में आराम करते दिख जायेंगे।'

'क्यों, तुम नहीं आओगे?' माधुरी ने आँखें तरेर कर पूछा।

'मैं देख चुका हूं। आप दोनों हो आइए। काका को साथ ले जाइए। वहीं पीछे कोशी नदी भी है। वह बड़ी हरी-भरी देखने लायक जगह है।'

'नहीं, तुम भी साथ चलोगे। नहीं तो मैं भी नहीं जाऊंगी।'

'अच्छा लड़ो मत। कल की कल देखेंगे।' शमशेर सिंह जी उठते हुए बोले - 'मैं कपड़े बदल कर थोड़ा हल्का हो लूं। तब तक तुम बैठो।'

उनके जाने के बाद धर्मा ने कहा - 'मधु जी, मेरा जाना ठीक नहीं है। मैं भला क्या करूंगा जाकर।'

'क्यों ठीक नहीं है?' माधुरी क्रोध से बोली - 'कौन सा वहाँ पैदल चलना है। बैठ कर जायेंगे, बैठ कर आयेंगे।' फिर जैसे उसे याद आया तो उत्साह से बोली - 'आजकल एक नये किस्म का स्कूटर आता है जिसमें तीन पहिये लगे होते हैं। दो पीछे और एक आगे। आगे हैंडिल में ही सारे बटन लगे होते हैं। ब्रेक भी हैंडिल में ही होते हैं। तुम वह स्कूटर क्यों नहीं लेते। तब तुम बिना किसी की मदद के कहीं भी आ-जा सकते हो।'

'आपने ठीक कहा। मैं काका से बात करूंगा।' धर्मा खुश होकर बोला।

फिर वे सूरज ढलने तक बाते करते और हंसते रहे।

-5-

दूसरे दिन शमशेर सिंह जी एक जीप में बैठकर रामनगर चले गए। माधुरी और धर्मा लॉन में बैठे धूप का आनन्द ले रहे थे। वे लॉन में इधर-उधर घूम रहे थे। माधुरी पैदल ही कभी इधर-उधर घूम रही थी और धर्मा व्हील चेयर में बैठा उसके आगे-पीछे चल रहा था। कभी-कभी माधुरी उसकी व्हील चेयर को पीछे से पकड़ कर दौड़ती, आगे ले जाती और फिर पीछे ले जाती। इस पर दोनों हंस पड़ते थे। दोनों खूब धमा-चौकड़ी कर रहे थे।

कुछ देर बाद माधुरी ने कहा - 'यहाँ का वातावरण कितना अच्छा है। यहाँ से कहीं जाने का मन नहीं करता।'

'तो यहीं रूक जाइए।' धर्मा ने हंस कर कहा।

'रूक तो जाऊं। पर पापा नहीं मानेंगे। यदि कार बन जायेगी तो हम आज ही शायद घर चले जायेंगे। क्योंकि रास्ता ठीक होने का कोई भरोसा नहीं है।'

धर्मा का चेहरा लटक गया। वह सूनी आँखों से माधुरी की ओर देखने लगा। उसे उदास देख कर माधुरी हंस पड़ी और बोली - 'आज ही थोड़े वापस जायेंगे। आज तो कॉर्बेट पार्क जाकर जंगली जानवर देखेंगे। फिर कल की कल सोचेंगे। तुम इस तरह उदास न होया करो। अच्छा नहीं लगता।'

धर्मा जबर्दस्ती मुस्कुरा उठा। किंतु उसकी आँखों में दर्द स्पष्ट दिखाई दे रहा था।

बारह बजे तक शमशेर सिंह जी आ गए। वे कार लेकर आये थे। कार बन गई थी। उसे वे नीचे सड़क के एक किनारे पर लगा आये थे। उनके चेहरे

पर खुशी के भाव थे। कुर्सी पर बैठते हुए बोले - 'कार बन गई है। ले आया हूं। तुम्हारी मां से भी पी.सी.ओ. से फोन पर बात कर आया हूं। वहाँ नीचे रेलवे स्टेशन के पास से बात हुयी है। वो ठीक है। लेकिन डुमैला में रावत जी से बात नहीं हो सकी है। वहाँ लोग बता रहे थे कि कल तक सड़क ठीक हो जायेगी। यदि कल सुबह तक सड़क ठीक हो जाती है तो गांव चल सकते हैं। लेकिन, पहाड़ी रास्ते हैं। पहुंचने में पांच-छै घंटे से भी ज्यादा लग सकता है। कार तेज नहीं चला सकते।'

माधुरी चुप रही। वह चिंतित सी लग रही थी। धर्मा ने कहा - 'लेकिन जब हम बस से जाते हैं तो तकरीबन सात घंटे लगते हैं। वह भी तब जब सड़के सुनसान हों। यदि आवाजाही अधिक होगी तो छोटी जगहों पर एक ओर की गाड़ियां रोक दी जाती हैं और दूसरी ओर की गाड़ी को पहले जाने देते हैं। दो-तीन जगह ऐसे पुल बने हैं जो बहुत संकरे हैं। वहाँ एक बार में एक ही गाड़ी पुल के आर-पार जा सकती है। फिर बिरोंखाल से डुमैला तक पैदल ही जाना पड़ता है। वहाँ जाने के लिए सिर्फ पगडंडी ही है।'

शमशेर सिंह जी सोच में पड़ गए। तब माधुरी ने झुंझला कर कहा - 'अब कहीं नहीं जाना है। काका टैक्सी लेकर आने वाले होंगे। खाना खाकर हम कॉर्बेट पार्क चलेंगे। फिर कल सोचेंगे कि क्या करना है?'

शमशेर सिंह जी ने गहरी सांस ली और बोले - 'एक कप चाय मिल सकती है?'

'हाँ-हाँ, क्यों नहीं। धर्मा ने कहा और पांडे को आवाज़ दी। जब पांडे आ गया तो धर्मा ने माधुरी से पूछा - 'आप भी चाय लेंगी?'

उसने हामी भरी तो धर्मा ने पांडे को तीन कप चाय लाने के लिए कहा। वह सिर हिला कर चला गया।

काका भी आ गए। आते ही उन्होंने कहा - 'टैक्सी दो बजे आएगी। तब तक खाना खाकर आराम कर लीजिये।'

फिर धर्मा से बोले - 'धर्मू कुछ चिट्ठियां और नोटिस आये हुए हैं। मैं तुम्हारे ऑफिस में रख देता हूं। शाम को बैठ कर देख लेना। हाँ, मकानों का किराया उन्होंने तुम्हारे अकाउंट में डाल दिया है। वो भी देख लेना और उनकी रसीदें काट देना। मैं कल दे आऊंगा।'

'ठीक है काका। बैंक स्टेटमेंट का क्या रहा?'

'वो भी ले आया हूं। रात को ही देख लेना।'

धर्मा ने सिर हिला दिया। काका अंदर चले गए। पांडे चाय ले आया और पूछा - 'खाना अंदर खाओगे या बाहर?'

'अंदर ही खा लेते हैं।?' धर्मा ने माधुरी की ओर देख कर कहा।

माधुरी कुछ न बोली। शमशेर सिंह जी ने कहा - 'खाना अंदर ही खायेंगे। लेकिन एक बजे के करीब। अभी चाय पी लेते हैं। चाय देकर पांडे अंदर चला गया।

खाना खाकर वे आराम करने चले गए और धर्मा अपनी चेयर लेकर बायीं ओर बने ऑफिस में चला गया। टेबल पर कई पत्र और डाक पड़ी हुयीं थीं। वह पहले डाक के लिफाफे खोल कर पत्रों को पढ़ने लगा। उसमें से कुछ बिजली के बिल, टेलीफोन और पानी के बिल थे।

वह पत्रों को देख ही रहा था कि शमशेर सिंह जी वहाँ आ गए और पूछने लगे - 'क्या कर रहे हो धर्मा जी?'

उन्हें बैठने का इशारा करके, धर्मा ने गुस्से से बिजली और टेलीफोन का बिल उनकी ओर बढ़ाते हुए कहा - 'देखिये, बिजली और टेलीफोन का

बिल। बिजली कभी-कभी ही आती है और टेलीफोन हमेशा ही बंद रहता है। फिर भी इतना बड़ा बिल भेज दिया। कभी-कभी तो इन्वर्टर भी बंद हो जाता है। मोमबत्ती या लालटेन जलाकर रखना पड़ती है। लूटते हैं ये लोग।'

'सब जगह ऐसा ही धर्मा जी। बिजली वालों को यही मौका मिलता है। शहरों में भी खूब शैड डाउन होता है। पर बिल उतना ही आता है।?'

तभी माधुरी ने आकर कहा - 'चलना नहीं है क्या?' एक बज रहा है।'

धर्मा ने उसकी ओर देखा तो देखता ही रह गया। वह जींस पहने हुई थी जो घुटनों से थोड़ा ही नीचे थी पैरों में लंबे मोजे और जूते थे। जींस की ही कमीज थी। उसके ऊपर काले रंग की जैकिट पहनी थी। सिर पर काले रंग की टोपी थी और आँखों पर हल्के काले रंग का चश्मा था। धर्मा को एक टक अपनी ओर देखता देख कर वह लज़ा गई।

शमशेर सिंह जी उठते हुए बोले - 'मैं भी अपनी जैकिट और टोपी ले आता हूं।' कह कर वे बाहर निकल गए।

माधुरी ने जब धर्मा को इस हालत में देखा तो वह उसकी चेयर पकड़कर पीछे की ओर खींचती हुई झल्लाये स्वर में बोली - 'क्या देख रहे हो। चलना नहीं क्या?' तुमने अभी तक कपड़े भी नहीं पहने।'

'अरे मैं क्या करूंगा। तुम लोग चले जाओ।' धर्मा ने हंसते हुए कहा।

'नहीं, तुम नहीं जाओगे तो मैं भी नहीं जाऊंगी। मैं कपड़े चेंज कर लेती हूं। वह चेयर छोड़कर बाहर निकली तो धर्मा चेयर को उसके पीछे बाहर लाया और बोला - 'ठीक है, मैं चल रहा हूं। कपड़े मत बदलो। इन कपड़ों में आप बहुत अच्छी लग रही हैं।'

माधुरी पलटी और मुस्कुरा कर उसके पास आई और दोनों हथेलियां से उसके गाल पकड़ कर बोली - 'नाऊ यू आर ए गुड ब्याय।'

काका आ कर धर्मा को ऊपर ले गया और थोड़ी ही देर में नीचे ले आया। धर्मा ने पैंट बदल ली थी। कमीज़ और जैकिट पहनी थीं और पैरों में जुराबें और कपड़े वाले जूते थे। सिर पर एक पहाड़ी गरम टोपी थी।

उसे देख कर माधुरी का चेहरा खिल उठा। उसका जी चाहा कि उसे बांहों में भर ले। बड़ी मुश्किल से उसने अपने को रोका। किंतु पास आकर धीरे से बोली - 'यू आर सो हैंडसम, धर्म जी।' फिर वह लज़ा गई।

कॉर्बेट पार्क के गेट पर आवश्यक कार्यवाही करके, एक गार्ड को लेकर जीप अंदर वाले रास्ते पर चल पड़ी। कुछ दूर जाकर जीप नदी के किनारे चल पड़ी। तब गार्ड ने चेतावनी दी - 'यहाँ बाघ, शेर, लोमड़ी और हिरन आदि दिखाई देंगे। आप उन्हें देखकर हूट न करें। नहीं तो वे पीछे पड़ जायेंगे। अतः शांति से देखें। अपने मोबायल या कैमरों से बाघ और शेर की फोटो न खींचे। वे सोचेंगे ये हमें मार रहे हैं और आप पर कूद पड़ेंगे। कुछ दूर जाने पर गार्ड ने गाड़ी रुकवा दी और सबको नीचे उतार कर एक झाड़ी की ओर इशारा करके उसने कहा - 'देखो शेरनी अपने बच्चों के साथ खेल रही है। सभी देख कर खुश हुए।

डेढ़ घंटे के सफर में उन्होंने हिरनों का झुंड, नील गाय, खरगोश, बाघ और चीता देखा। किंतु शेर नहीं दिखाई दिया यद्धपि शेरनी बच्चों के साथ दिख गई थी। गार्ड ने बताया कि हो सकता है शेर शिकार के लिए कहीं निकला हो। बाघ तो उन्होंने कई जगहों पर देखा। जानवरों को देख कर माधुरी और धर्मा बहुत खुश हुए। तब माधुरी ने गार्ड से पूछा - 'ये पानी नदी से पीते होंगे न?'

हाँ, इसीलिये सुबह यहाँ किसी को नहीं आने दिया जाता है और रात दस बजे बंद कर दिया जाता है। पहले रात के भी सफारी आते थे। लेकिन दो चार हादसों के बाद ये बंद कर दिया।'

'ऐसा क्या हुआ था?' शमशेर सिंह जी ने पूछा।

'रात को जानवर आराम करते हैं। जीप की लाइट की चकाचौंध से वे डर जाते हैं। और अपनी सुरक्षा के लिए आक्रमण कर देते हैं। तब से यह बंद है।'

जब वे घर पहुंचे तब शाम के पांच बज चुके थे। माधुरी बहुत खुश थी। जू में उसने जानवर देखे थे किंतु जंगल का मज़ा कुछ और ही था। घर पहुंच कर उन्हें पता चला कि बिजली आ गई है। तो सभी खुश हुए। काका ने कहा - 'अब आप कमरों के हीटर खोल सकते हैं।'

सब अपने कमरों में चले गए। धर्मा चाय के लिए बोल कर अपने ऑफिस रूम में चला गया।

-6-

थोड़ी देर बाद शमशेर सिंह जी भी वहाँ आ गए। धर्मा कुछ रसीदें काट रहा था। ये उसकी थी जिन्होंने मकान का किराया दिया था। मेज पर एक ओर बैंक स्टेटमेंट पड़ी हुई थी। उसे उठाते हुए शमशेर सिंह जी ने पूछा - बहुत बिजी लग रहे हो धरम जी। क्या हो रहा है?'

'डाक आई हुई हैं वो देख रहा था। किरायेदारों ने किराया दिया है उसकी रसीदें काट रहा हूं। कल काका उन्हें दे आएगा।'

आपके ये मकान कहाँ हैं?' दो मंजिले हैं। नीचे दुकानें हैं और ऊपर फैमिली वाले रहते हैं। वे किराया बैंक में जमा करवा देते हैं। फिर मैं रसीद काट कर उन्हें भिजवा देता हूं।'

'ठीक करते हैं।' फिर बैंक स्टेटमेंट पर नज़र पड़ी तो चौंक उठे। बैंक में करीब पचास लाख अस्सी हजार रूपये थे। चौंक कर वे बोले - 'आपके पास इतने रूपये हैं। यह मकान भी है, गांव में भी मकान और खेत हैं। यह तो करोड़ों की जायदाद है। इसकी देखरेख कौन करता है? बैंक से रूपये कौन निकालता है? आप तो जा नहीं सकते।'

काम छोड़ कर धर्मा हंसा और बोला - 'ए.टी.एम. कार्ड है। कभी जरूरत पड़ेगी तो निकाल लेंगे।'

'ए.टी.एम. कार्ड कहाँ है।?'

'काका के पास।'

'क्या?' आश्चर्य से शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'कहीं वो हेरा-फेरी न कर दें।'

धर्मा का चेहरा लाल हो गया। गुस्से से शमशेर सिंह जी के हाथ से स्टेटमेंट छीन कर उन्हें दिखाता हुआ बोला - 'यह स्टेटमेंट आपने देखी। ये तीन महीने की स्टेटमेंट हैं।

कहीं आपको बैंक से पैसे निकाले हुए दिखे। कहीं नहीं, है न। फिर भी हम खाते हैं, अच्छा पहिनते हैं। बिजली पानी का बिल देते हैं। यह पैसा कहाँ से आता है? राशन कहाँ से आता है?' यह आपने सोचा। बस सीधे काका पर आरोप लगा दिया। ये राशन गांव से काकी भेजती है, सब्जी भेजती है। काकी मेरी मां है। मेरा एक छोटा भाई और एक बहिन है। यह सब उन्हीं का है। आपको ऐसी बात नहीं करनी चाहिए।'

सकपकाये से शमशेर सिंह जी बोले - 'माफी चाहता हूं। मैंने तो एक शंका जाहिर की थी। कल आपका ब्याह होगा। पत्नी आयेगी तब की भी सोचनी चाहिए।'

'मेरा ब्याह?' धर्मा जोर से हंसा और बोला - 'कोई पागल ही होगी जो मुझसे शादी करेगी।'

धर्मा की तेज आवाज़ सुनकर माधुरी भी वहाँ आ गई। धर्मा की आखिरी बात सुनकर बोली - 'पागल नहीं, किस्मत वाली होगी जो आपसे शादी करेगी।'

दोनों चौंक उठे। शमशेर सिंह ने आश्चर्य से बेटी को ओर देखा। धर्मा शरमा गया और माधुरी की ओर देखने लगा। वह नाइट सूट में खिले हुए गुलाब की तरह लग रही थी। माधुरी ने मुस्कुरा कर पूछा - 'आपको गुस्सा भी आता है?'

धर्मा ने नज़रें झुका लीं। पांडे जी ने आकर पूछा - 'आप चाय यहीं पियेंगे या बाहर?'

'बाहर पियेंगे।' माधुरी ने कहा और धर्मा की व्हील चेयर ढकेलती हुई बाहर निकल गई। सोच में डूबे हुए शमशेर सिंह जी भी पीछे-पीछे चल पड़े।

दूसरे दिन भी धूप थी। लेकिन, ठंडी हवा चल रही थी। गरम कपड़े पहिने हुए वे बाहर धूप में बैठे थे। वहीं उन्होंने नाश्ता किया और चाय पी।

नाश्ता करके माधुरी ने घर के बिल्कुल पास में लगे पेड़ को देख कर पूछा - 'यह किस चीज़ का पेड़ है और घर के इतने पास क्यों लगाया है?'

धर्मा ने कहा - 'यहाँ एक बहुत बड़ा गड्ढा था। तब पिताजी भी थे। काकी ने आकर यह गड्ढा भरवाया और इसमें आड़ू का पेड़ लगा दिया। किंतु बरसात में अब भी इसकी मिट्टी गिली हो जाती है और गिरने का खतरा रहता है। मेरी व्हील चेयर तो इसमें फंस ही जाती है। अबकी काकी आई थी और पत्थर लगा गई है और मुझे कह गई है कि चेयर दूर रख कर चलाया करूं।'

'आपकी काकी मेहनती लगती हैं। ये दिवाल के किनारे-किनारे कई पौधे लगे हुए हैं। ये भी उनके लगाये हुए हैं क्या? माधुरी ने पूछा तो धर्मा बोला - 'यहीं नहीं। मेर साथ पीछे चलिए।'

'वहाँ क्या है?' माधुरी ने उठ कर कहा।

'आइए तो।' कह कर धर्मा ने अपनी व्हील चेयर आगे बढ़ानी शुरू की। उसे जोर लगाते देखकर माधुरी ने चेयर को पीछे से पकड़ कर धक्का देना शुरू कर दिया। शमशेर सिंह जी भी अखबार एक ओर रखकर पीछे-पीछे आये।

पीछे का बगीचा देखकर दोनों की आँखें फटी रह गयीं। पीछे कई क्यारियां बनी हुई थीं। वहाँ लौकी, भिंडी, मूली, टमाटर, कद्दू लगे हुए थे। एक ओर प्याज, लहसुन के पौधे लगे थे। ककड़ी की डालियां लटक रही थीं। एक

क्यारी में हरी मिर्च के पौधे लगे थे। देख कर शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'ये सब काकी ने लगाया है?'

'हाँ, वो जब भी आती हैं, तब-तब मौसमी बीज लाकर यहाँ बो देती हैं। अब तो कभी भैय्या और बहिन भी आ जाते हैं। खूब मजा रहता है।' धर्मा ने खुश होकर कहा।

माधुरी ने पूछा - 'मैं कुछ भिंडियां तोडू लूं?'

'जरूर!' धर्मा ने खुश होकर कहा। माधुरी ने चार-पांच भिंडियां तोड़ी और एक को मुंह में डाल कर चबाते हुए बोली - 'पापा, इनका स्वाद शहर की भिंडियों से अलग है। ये चबाने में कोमल और स्वाद में मिठास है।' फिर उसने दो उन्हें दीं और एक धर्मा को देकर बाकी खुद खाने लगी।

बगीचे से वापस आते समय शमशेर सिंह जी ने कहा - 'आज के अखबार में खबर है कि रास्ते इतने साफ हो गए हैं कि धीरे-धीरे गाड़ी आगे बढ़ सकती है, लेकिन उन्हें भट्वणों के पास यहाँ की गाड़ी वहीं छोड़ पुल के दूसरी ओर खड़ी बस या जीप से सफर करना पड़ेगा। क्योंकि वहाँ की नदी का पुल अभी ठीक नहीं हुआ। इसमें लिखा है कि लोग अपनी कार या गाड़ी से न आकर बस से आयें। वे ही लोग आएं जिन्हें बिरोंखाल जाना हो।'

'मतलब हम कार से नहीं जा सकते। शादी तो आज की ही है।' माधुरी ने हंस कर कहा। फिर बोली - 'पापा ऐसा करते हैं अब हम कुछ दिन यहीं रहते हैं।' फिर धर्मा की ओर देखकर मुस्कुराती हुई बोली - 'ये जनाब अब हमें खेतों में ले चलेंगे। दीबा मंदिर दिखायेंगे और कोशी नदी का बांध रामनगर घुमायेंगे। क्यों दिखाओगे न?'

धर्मा का चेहरा खिल उठा। वह अपलक माधुरी को देखने लगा।

फिर वे दिनभर वहीं लॉन में घूमते और बातें करते रहे। माधुरी हैंडिल पकड़ कर कभी आगे ले जाती और कभी पीछे ले आती। दोनों ही खिलखिलाकर हंस पड़ते।

शमशेर सिंह जी कभी उन्हें देखते और कभी अखबार पड़ने लगते।

कुछ देर बार काका आये और उन्होंने बताया कि किरायेदारों को रसीदें पहुंचा आए हैं और साथ में नमकीन और बिस्कुट ले आए हैं। फिर वे अंदर चले गए।

देखते-देखते चार दिन गुजर गए। इस बीच धर्मा के साथ उन्होंने सभी कुछ देख लिया था। अब कभी-कभी माधुरी धर्मा के कमरे में भी ऊपर ही आ जाती थी। धर्मा का कमरा बहुत बड़ा था। दो पलंग लगे थे। बिजली का स्विच, हीटर का स्विच सभी पलंग के पास ही लगे थे। व्हील चेयर उनके पलंग के पास ही रहता थी। उसमें वे स्वयं बैठ जाते है नित्य क्रिया कर लेते थे। पलंग के साथ ही घंटी का स्विच था, जिसका संबंध रसोई घर और बायीं ओर वाले कमरे में था। जहाँ काका रहता था। काकी और बच्चे जब आते थे, वे या तो काका के साथ रहते या धर्मा के साथ।

दोनों ही कमरों में आगे एक खिड़की थी और पीछे छोटी सी बाल्कनी थी।

चार दिन कैसे गुजर गए पता ही नहीं चला।

-7-

चौथे दिन शाम का समय था। सभी हाल में बैठे हुए चाय पी रहे थे। दरवाजे पर खटखटाहट की आवाज़ सुनकर काका ने जाकर दरवाजा खोला। एक हट्टा-कट्टा नौजवान सिर पर पहाड़ी टोपी पहने हुए नज़र आया। काका उसे पहिचान कर बोले - 'गोपू तू! आज आ रहा है?' चल अंदर चल।'

वह अंदर आया। तीनों ने चौंक कर उसे देखा। तब काका बोला - 'ये गोपाल है जो आपको लेने आने वाला था।'

गोपाल ने दोनों को हाथ जोड़कर नमस्ते कहा। फिर धर्मा को देखकर बोला - 'कैसे हो भाई?'

'ठीक हूं। आओ बैठो।' धर्मा ने कहकर उसे बैठने का इशारा किया। बैठते हुए वह बोला - 'चाचा जी, मैं बहुत शर्मिंदा हूं। मैं आपको लेने रामनगर आ रहा था। किंतु अचानक मूसलाधार बारिश की वजह से मैं अटक गया। फिर पहाड़ खिसकने लगे। मैंने सोचा वापस चला जाऊं। लेकिन कार मोड़ी तो सड़क धंस गई। न मैं इधर आ सका और न ही वापस जा सका। मैं भी बाल-बाल बचा। एक-आद ने अपनी जीप निकालने की कोशिश की तो धंसे हुए गड्ढे में जीप धंस गई। तभी ऊपर से एक चीड़ को पेड़ टूट कर नीचे की ओर लुढ़का और जीप के ऊपर टिक गया। बड़ी मुश्किल से जीप में सवार लोगों को बाहर निकाला। उन्हें चोट लगी थी किंतु हम कुछ न कर सके। दूसरे दिन जब कुछ बारिश कम हुई तो मैं वहाँ से कुछ दूरी पर एक गांव है। वहाँ से चार लोगों को लाया और उन्हें वहाँ पहुंचाया। दूसरे दिन वन विभाग वाले आए तो मैं उन्हें लेकर बिरोंखाल अस्पताल ले गया। फिर घर गया और सारी बात बतायी। बाद में पता चला कि दो पुल भी टूट गए हैं और उनकी जो जीप

गड्ढे में थी, वह सड़क के डहने के साथ नीचे लुढ़क गई है। तब पिताजी ने कहा - 'तूने अच्छा किया कि लौट आया। चलो हमारी किस्मत में आपका साथ नहीं था तो क्या करें।' फिर वहीं रूक गया। बहन की शादी हो गई। वह अपने ससुराल चली गई है। अब सड़क थोड़ी खुल गई है तो पिताजी ने कहा - 'एक बार देख आऊं। बस में जा और रामनगर में रास्ते में जो गांव पड़ते हैं, वहाँ देख कर आ जा। न तो फोन लग रहा है न ही मोबायल पर नेटवर्क आ रहा है। बस सुबह से आपको ढूंढ रहा था। यहाँ नीचे पता चला कि एक पुरूष और एक लड़की को उन्होंने धर्मा जी के घर में देखा था। तब यहाँ पता लगाने आया था।'

शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'विवाह हो गया?'

'हाँ, हो ही गया।' गोपाल ने दुखी होकर कहा - 'लड़के वालों की एक डिमांड ऐसी आई की हम घबरा गए थे। उन्होंने कहा कि बारात में करीब सौ लोग आएंगे और हर बराती को एक कांसे की थाली और एक गिलास, भोजन होने के बाद या उससे पहले जब बरातियों को टीका लगाया जाये, तब दिया जाये। बराती चाहे छोटा हो या बड़ा। हम बड़े चक्कर में पड़ गए। हम पहले ही शादी में बहू द्वारा दी जाने वाली तीस साड़ियां ले आये थे। क्योंकि उन्होंने बताया था कि परिवार में देने के लिए बहू कम से कम पच्चीस साड़ियां लेकर आए। साथ ही उनका कहना था कि बारातियों के भोजन में कोई कमी न हो। पिताजी ने एक बार सोचा की शादी तोड़ देते हैं। किंतु लोगों ने समझाया तो पैसे उधार लेकर सामान मंगवाया। खैर शादी हो गई और बहन सुखी है।'

'यह तो बड़ी दुख वाली बात तुमने सुनाई। लड़की भी दो और दहेज भी दो। जैसे उनका बेटा बिकाऊ हो।' शमशेर सिंह जी ने गुस्से से कहा फिर पूछा - 'लड़का क्या करता है?'

'दिल्ली में किसी कंप्यूटर कंपनी में काम करता है। अब तो शायद वह बहिन को लेकर वहाँ चला गया होगा।'

माधुरी जो बहुत देर तक चुप रही वो बोली - 'शादी कैंसिल ही कर देनी थी। अब तो आप लोगों पर काफी लोन हो गया होगा? आप क्या करते हैं?'

'मैं बिरोंखाल में टीचर हूं।'

शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'खेती तो होगी?'

'बस दो खेत हैं। वो भी लल्ला डुमैला में। पहले पिताजी खेतों की देखभाल करते थे। अब बूढ़े होने की वजह से जा नहीं सकते। अब मैं ही दोपहर के बाद खेतों पर चला जाता हूं। अब सोच रहे हैं बंटाई पर दे दें। मुझे खेती का कोई ज्ञान नहीं है। मेरा खेतों पर जाना न जाना एक बराबर है।'

'फिर खर्च कैसे चलता है?'

'पिताजी को पच्चीस हजार पेंशन मिलती है। कुछ मैं कमा लेता हूं। बस गुजारा हो जाता है।'

काका चाय की प्लेट ले आया और बीच में रख कर बोला - 'गोपू, कोई बात नहीं सब ठीक हो जायेगा। लो चाय पियो। आज रात तुम यहीं रहना। अब कल सुबह ही निकलना।'

वे सब चाय पीने लगे। धर्मा ने महसूस किया कि माधुरी गोपाल की ओर देखती और फिर चाय पीने लगती। उसने एक बार भी धर्मा की ओर नहीं देखा। अपना सिर झटक कर वह चाय पीने लगा।

जब चाय पी चुके तो शमशेर सिंह जी ने कहा - 'अब तो गांव जाने का कोई फायदा नहीं। मैं तुम्हें शगुन के पैसे दे देता हूं। वो तुम अपने पिताजी को दे देना।'

'ऐसा न करो चाचा जी। एक बार गांव चलकर उनसे मिल लो। पिताजी बहुत चिन्तित थे। आपको ही याद करते रहते हैं।' गोपाल ने अनुनय विनय से कहा। शमशेर सिंह जी ने कहा - 'हमें भी वापस जाना है। काम का हर्जा हो रहा है।'

'ऐसा करते हैं हम कल बस से चलते हैं। जहाँ पुल टुटा है वहाँ से दूसरी बस या जीप कर लेंगे। एक दिन वहाँ रूक जाइए। यदि पुल ठीक हो जायेगा तो मैं अपनी कार से यहाँ तक छोड़ जाऊंगा।'

'और अगर फिर वैसी ही बारिश हो गई तो?' माधुरी ने गोपाल की ओर देख कर कहा - 'मेरा मन तो गांव देखने का बहुत करता है। पहाड़ों के ऊपर बने घर, छोटे-छोटे सीढ़ियों जैसे खेत, और जंगल देखने का मन करता है। लेकिन इस बारिश से डर लगता है। इसीलिये बेहतर यही होगा कि हम यहीं से वापस लौट जायें।'

'मन को मारना ठीक नहीं है। अगर डर गए तो भी मन को चोट लगती है कि हमने वो चीज़ नहीं देखी। डर कर जो मन को मारे वो जिंदगी में कभी आगे नहीं बढ़ सकते। धर्मू भाई को ही देख लीजिए। ये अगर डर कर मन मार लेते, तो क्या ये इतनी शिक्षा ग्रहण कर सकते थे? नहीं न। इन्होंने अपनी इच्छा शक्ति से मन को नहीं मारा न इन्होंने कभी हार मानी।'

'आप ठीक कह रहे हैं।' माधुरी ने धर्मा की ओर प्यार भरी नज़र से देखते हुए कहा - 'इनका मुकाबला तो कोई नहीं कर सकता। इनके चेहरे की मुस्कुराहट ही कह देती है।'

धर्मा ने शरमाकर सिर झुका लिया। शमशेर सिंह जी ने कहा - 'देखेंगे। कल तक सोच लेते हैं।'

काका ने आकर गोपाल से कहा - 'आओ, तुम्हें कमरा दिखा देता हूं। तुम थोड़ा मुंह हाथ धो लो।'

फिर वे उसे लेकर उस कमरे लाये, जहाँ वे खुद रहते थे। वहाँ भी दो पलंग थे। बाथरूम भी अंदर ही था। अल्मारी से उन्होंने तौलिया दिया और बाहर निकल गए।'

शमशेर सिंह जी ने माधुरी की ओर देखकर कहा - 'मधु, तुम गांव शादी में जाने की तैयारी करके आई थी। लेकिन वहाँ जाकर क्या करेंगे। बेटा, तुम दुखी मत होओ। यहाँ भी काफी दिन रूक चुके हैं। अब यहाँ से हमें चलना चाहिए। घर में मां दुखी हो रही होगी।'

'ठीक है पापा, बस दो दिन और रूक लेते हैं। दो दिन बाद इतवार है। उस दिन चले चलते हैं।' माधुरी ने उदास स्वर में कहा।

शमशेर सिंह जी सिर हिला कर रह गए। माधुरी अपने कमरे में गई और द्वार बंद कर दिया। उसे उदास देखकर धर्मा भी उदास हो गया।

माधुरी को यहाँ से जाने की इच्छा नहीं थी। उसके दिल के किसी कोने में धर्मा के लिए जगह बनती जा रही थी। कभी सोचती वह अपाहिज़ है, वह चल फिर नहीं सकता। व्हील चेयर में जा सकता है। लेकिन पहाड़ी रास्तों में उसे उठाकर ले जाना पड़ता है। नकली पैर तो बन सकते हैं। क्या उनसे वह चल सकेगा? इसमें शंका ही है। पैर टूटे होते या कटे हुए होते तो नकली पैर लग सकते थे। किंतु उसकी तो जांघें भी सुन्न हैं।

सोचते-सोचते उसका ध्यान गोपाल की ओर गया। कितना हैंडसम लगता है। गरीब है तो क्या हुआ? फिर उसने अपना ध्यान उस ओर से हटा दिया और लेट गई।

रात के आठ बज रहे थे, जब शमशेर सिंह जी ने उसे खाने के लिए आवाज़ दी। वह उठकर बाहर हॉल में आ गई। खाने के टेबल पर एक ओर धर्मा और गोपाल बैठे थे और दूसरी ओर शमशेर सिंह जी बैठे थे। धर्मा अपनी व्हील चेयर पर बैठा था। माधुरी शमशेर सिंह जी के बगल में बैठ गई।

खाना खाते समय शमशेर सिंह जी ने गोपाल से पूछा - 'तो तुम्हारा कल जाने का पूरा इरादा है?'

'हाँ, चाचा जी। सुबह दूसरी बस नौ बजे के आस-पास चलती है। उसी से निकल चलेंगे। आपको अधिक कपड़े ले जाने की जरूरत नहीं। बस, एक-दो के हिसाब से ले चलें। बाकी सूटकेट यहीं छोड़ दें। वहाँ से आप यहाँ से जाते हुए, अपना सामान ले जा सकते हैं।'

'तुम तो ऐसा कह रहे हो जैसा हम तुम्हारे से साथ गांव चल रहे हैं।' शमशेर सिंह जी ने हंस कर कहा - 'हम तुम्हारे साथ नहीं जा रहे हैं। कल सुबह हम वापस घर जा रहे हैं। रावत जी से फिर कभी मिल लूंगा।'

'चाचा जी, ऐसा न कीजिए। पिताजी का दिल टूट जाएगा।'

'नहीं, गोपाल। मधु की मां भी वहां अकेली है। यहाँ से फोन भी नहीं लग रहा है। हमें उसकी भी चिन्ता लगी है। अब हमें वापस जाना ही होगा।'

गोपाल उदास होकर अपनी थाली पर झुक गया। खाना खाकर जब शमशेर सिंह जी अपने कमरे में चले गए तो गोपाल ने माधुरी से कहा - 'आप अपने पापा को समझाइये न। इतनी दूर आकर वापस जाना ठीक नहीं है। एक ही दिन की बात है। मेरे पिताजी से मिलकर परसों आप वापस जा सकते हैं।'

'मैं क्या कह सकती हूं। मैं पापा से ज्यादा बहस नहीं कर सकती।' फिर वह उठकर अपने कमरे की ओर चली गई।

दोनों के जाने के बाद गोपाल ने धर्मा की ओर देखा। धर्मा मुस्कुरा दिया और बोला - 'शमशेर सिंह जी नहीं मानने वाले।'

बुरा सा मुंह बनाकर वह बाहर निकल गया। हंसते हुए धर्मा में अपनी व्हील चेयर अपने ऑफिस की ओर बढ़ा दी।

थोड़ी ही देर में गोपाल दौड़ा अंदर आया। वह भीगा हुआ था। पांडे जो बर्तन समेट रहा था, उसने पूछा - 'क्या हुआ जी?'

'अरे होना क्या है। बड़ी तेज बारिश शुरू हो गई। अभी शाम को तो मौसम खुला था। आसमान में तारे चमक रहे थे।'

'तुम तो भीग गया हो सा'ब, जाओ कपड़े बदल लो। वह सीढ़ियों की ओर बढ़ रहा था कि आँधी के झौंके ने बड़े दरवाजें के दोनों पट बड़ी तेज आवाज़ से खोल दिए। ठंडी हवा के झौंकों के साथ बारिश का ढेर सा पानी उड़कर अंदर आ गया और दरवाजे के पटों की खुलने और बंद होने से तेज आवाज़ होने लगी। गोपाल भौंचक्का सा द्वार की ओर देखता रह गया। उसी समय रसोई घर से काका दौड़ते हुए आये और चिल्लाये - 'गोपू, तूने कुंडी लगाई नहीं क्या? अरे बेवकूफ तुझे पता है कि बारिश होती है तो अंधड़ भी आता है।'

फिर वे दौड़े-दौड़े गए और बड़ी मुश्किल से किवाड़ बंद कर ऊपर की कुंडियां और बीच की चटकनी लगा दी। वे भी भीग चुके थे।

खटखटाहट की आवाज़ और काका का चिल्लाना सुनकर तीनों ही कमरों से निकल आये थे।

गोपाल झेंपता हुआ बोला - 'चाचा मैं समझा कि सिर्फ बारिश आ रही है। मुझे क्या पता था कि मेरे पीछे-पीछे अंधड़ भी आ जायेगा।'

'तू बाहर क्यों गया था? पूरा भीग गया है। जा कपड़े बदल ले। जल्दी कर अंधड़ आ रहा है। अब बिजली गई समझो। पांडे, बिजली जाते ही इन्वर्टर ऑन कर देना। टॉर्च अपने पास रखना।'

पांडे सिर हिलाकर बर्तन उठा ले गया।

गोपाल ऊपर चला गया। शमशेर सिंह जी ने आश्चर्य से कहा - 'अभी थोड़ी देर पहले तो आसमान खुला था फिर अचानक ये क्या हो गया?'

'पहाड़ों में इस मौसम में ऐसा ही होता है। कब धूप निकलेगी और कब बारिश होगी, कोई पता नहीं चलता।' काका ने कहा और वाइपर लेकर वे दरवाजों के सामने पड़े पानी को साफ करने लगे और बोले - 'आप लोग लेट जाइये। धर्मू चल तुझे ऊपर पहुंचा दूं।'

तभी बिजली चली गई। एक दम घुप्प अंधेरा हो गया, पांडे को इन्वर्टर चालू करने में पांच मिनट लग गए।

लाइट आ गई तो काका ने कहा - 'यदि आप लोगों के हीटर चल रहे हैं तो बंद कर दीजिए। क्योंकि लाइट का कोई भरोसा नहीं कब आयेगी।'

फिर वे धर्मा को उठा कर ऊपर ले गए और उसे ऊपर वाली व्हील चेयर पर बिठा कर नीचे आ गए। फिर रसाई घर से लकड़ियां उठाकर चिमनी में डालकर शमशेर सिंह जी से बोले - 'कमरों की अल्मारियों में और भी कम्बल पड़े हुए हैं। यदि ठंड लगे तो वहाँ से निकाल लीजिएगा। मैंने चिमनी में लकड़ियां डाल दी हैं। टेबल पर माचिस और मिट्टी का तेल रखा है। रात को जरूरत पड़े तो जला कर आग ताप लीजिएगा।'

'नहीं, जरूरत नहीं है।' शमशेर सिंह जी ने चिन्ता से कहा - 'ऐसा ही मौसम रहा तो जाना मुश्किल हो जाएगा।'

'देखो, क्या होता है।' काका ने कहा और रसोई घर की ओर बढ़ गए।

सारी रात मूसलाधार वर्षा होती रही। तेज अंधड़ भी चल रहा था। बादल गरज रहे थे। सांय-सांय की आवाज़ घर के अंदर तक आ रही थी। रात भर न तो माधुरी सो पायी और न ही शमशेर सिंह जी सो पाये। बस कम्बलों के अंदर घुसे रहे।

सुबह तक बारिश होती रही। हवा बंद हो चुकी थी। दस बजे के आसपास बारिश कुछ थम सी गई थी। केवल हल्की-हल्की बूंदें गिर रहीं थी। शमशेर सिंह जी उठ कर कमरे से बाहर आए। उन्होंने रसोई घर की ओर झांक कर देखा। पांडे बैठा चाय पी रहा था। शमशेर सिंह जी को देख कर बोला - 'उठ गए सा'ब। चाय पियेंगे क्या।'

'है तो दे दो। कोई छाता है तुम्हारे पास?'

'हाँ है। चाय पीलो फिर देता हूं।' पांडे ने चाय दी और बोला - 'सा'ब, तुम लोग सोये थे इसीलिये मैंने चाय नहीं दी थी।'

'कोई बात नहीं।' चाय लेकर वे वहीं बैठ कर पीने लगे। पांडे ने एक छाता लाकर वहाँ रख दिया। शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'ऊपर वाले उठ गए हैं या अभी सोए हुए हैं?'

'नहीं, सब सोये हुए हैं।'

चाय पीकर, छाता लेकर, शमशेर सिंह जी ने दरवाजा खोला। हल्की बूंदा-बांदी हो रही थी। लेकिन वे बाहर नहीं जा सके। पूरा लॉन पानी से भरा हुआ था। यहाँ तक कि पानी नीचे की पहली सीढ़ी पर भी चढ़ा हुआ था। उन्हें पानी निकासी का रास्ता नहीं दिख रहा था। असमंजस की स्थिति में वे पानी को देखते रहे।

माधुरी भी उठ कर दरवाजे के पास आ गई। लॉन में पानी भरा देख कर वह आश्चर्य से बोली - 'ये क्या?' अब हम बाहर कैसे जायेंगे?' लॉन तो पूरा पानी से भर गया है।'

'यहीं तो मैं भी सोच रहा हूं।' शमशेर सिंह जी ने चिंतित स्वर में कहा।

तभी काका आ गए। बाहर का दृश्य देख कर बोले - 'आप लोग अंदर चलें। लगता है पानी निकालने के लिए जो छेद दीवारों में बनाये थे वे बंद हो गए हैं। मैं अभी देखता हूं।'

वे एक संबल और फावड़ा लेकर बाहर चले गए। लेकिन जाने से पहले धर्मा को हाल में छोड़ गए।

गोपाल भी नीचे आ गया था। वह सीधे रसोई घर में जाकर चार गिलासों में चाय ले आया और जोर से बोला - 'आइए पहले चाय पीजिए। गरमा-गरमा चाय। चाचाजी आइए।'

शमशेर सिंह जी और माधुरी दोनों आकर कुर्सियों पर बैठ गए। माधुरी के बगल में गोपाल बैठ गया। चारों जब चाय पीने लगे तब शमशेर सिंह जी ने कहा - 'गोपाल अब ऐसे मौसम में तो तुम जा नहीं सकोगे?'

'आप ठीक कह रहे हैं चाचा जी।' वह चिंतित होकर बोला। फिर हंस कर बोला - 'चलो इसी बहाने कुछ दिन आप लोगों के साथ रह लेंगे।' फिर माधुरी की ओर देख कर बोला - 'ठीक कहा न? रोने-धोने और चिन्ता करने से क्या फायदा। हमारे चिन्ता करने से मौसम ठीक थोड़े ही हो जायेगा।'

माधुरी उसकी ओर देख कर मुस्कुरा दी। धर्मा ने भी कहा - 'गोपू भैया, हाँ बड़ा आनन्द आएगा। तुम्हारे साथ रामनगर के पीछे वाली नदी भी देख आएंगे। बरसाती नदी है लेकिन आजकल पूरी भरी होगी।'

'हाँ चलेंगे।' गोपाल ने माधुरी की ओर देख कर हामी भरी।

काका आ गए थे। आते ही बोले - 'लॉन का पानी निकल गया है। बारिश भी बंद हो गई है। बाहर जाओ तो दीवार के किनारे की ओर मत जाना। बीच ही बीच में घूमना। मैं थोड़ा नीचे जा रहा हूं। कुछ सामान ले आऊं।'

संबल और फावड़ा अंदर रखकर वे एक थैला लेकर बाहर चले गए। शमशेर सिंह जी भी अपने कमरे में चले गए।

थोड़ी देर में गोपाल उठता हुआ बोला - 'यहाँ बैठे-बैठे बोरियत हो रही है। चलो बाहर चलें। ठंडी हवा का मजा लें।' माधुरी मुस्कुराती हुई खड़ी हो गई। धर्मा भी खुश हो गया और अपनी व्हील चेयर दरवाजे की ओर बढ़ाने लगा। किंतु व्हील चेयर का पिछला एक पहिया टेबल पर अटक गया था। उसने आशा भरी नजरों से माधुरी की ओर देखा। किंतु माधुरी और गोपाल दरवाजे तक जा चुके थे। उसने हाथों से जोर लगाया। टेबल थोड़ी सी उठी और पहिया बाहर निकल आया। वह तेजी से बढ़ता हुआ दरवाजे के पास पहुंचा। फिर वह दरवाजे पर ही खड़ा रह गया।

दोनों लॉन में काफी आगे निकल चुके थे। माधुरी गोपाल के आगे-आगे चल रही थी। मिट्टी अभी भी गिली थी। चलते-चलते उसकी चप्पल कीचड़ में फंस गई और वह झौंक में लड़खड़ाई। किंतु गिरने से पहले ही गोपाल ने आगे बढ़कर उसे अपनी बाहों में जकड़ लिया और बोला - 'मैडम जी, जरा संभल कर चलिए। यहाँ कोई पक्की सड़क नहीं है।'

माधुरी का शर्म से चेहरा लाल हो गया। वह कुछ बोल नहीं पायी। अपलक उसके चेहरे की ओर देखती रही। गोपाल ने हंसते हुए कहा - 'अच्छा सीधी खड़ी हो जाओ। मैं मिट्टी में से आपकी चप्पल निकालता हूं।'

वह मना करना चाहती थी किंतु मुंह से बोल न फूटे। गोपाल ने मिट्टी में से उसकी चप्पल निकाली और दीवार के कोने पर जाकर इकट्ठा हुए पानी से साफ की और लाकर माधुरी के पास रख कर बोला - 'लो अब पहनों।'

सिर झुका कर माधुरी ने चप्पल पहन ली। तब गोपाल ने उसका हाथ पकड़ कर कहा - 'अब आप मेरा हाथ पकड़ कर चलिये। कहीं गिर गयीं तो चाचा मुझे दोष देंगे।'

उसका स्पर्श पाकर माधुरी का तन-बदन रोमांचित हो उठा। उसकी आँखें लाज से झुक गईं। वह धीरे-धीरे गोपाल के साथ चलने लगी।

गेट के पास आकर गोपाल ने कहा - 'नीचे चलें। देखते हैं, वहाँ का क्या हाल है?'

'रास्ते में फिसलन है। गिरने का डर है।' माधुरी ने उसकी ओर देखकर कहा।

'जब तक आपका हाथ मेरे हाथ में है, तब तक आपको गिरने नहीं दूंगा। यह वादा करता हूं।' गोपाल ने सीना तान कर कहा।

'कब तक आप मेरा हाथ थामें रहेंगे?' माधुरी ने मुस्कुरा कर उसकी ओर देखते हुए धीरे से कहा।

गोपाल ने मुड़कर उसकी ओर देखा। दो पल वह असमंजस की स्थिति में रहा। फिर धीरे से बोला - 'तुम चाहो तो हमेशा के लिए हाथ पकड़ सकता हूं। इसका अंदाजा तुम्हें आज ही हो जायेगा कि मैं तुम्हें बिना गिरे नीचे ले जा सकता हूं या नहीं।

माधुरी का चेहरा खिलकर लाल गुलाबी हो गया। वह उसके साथ चल पड़ी।

-8-

जब वे आँखों से ओझल हो गए तो धर्मा मायूस हो गया। उन्हें हाथ में हाथ लिए उसने सबकुछ देखा। उसकी आँखों से आंसू गिरने लगे। वह माधुरी को चाहने लगा था। उसका प्यार भरी बातें करना, गालों पर हाथ फेरना, व्हील चेयर को पीछे से पकड़ कर घुमाना, उसकी आँखों के सामने नाच रहा था।

उसने व्हील चेयर को घुमाया और निरुद्धेश अपने ऑफिस के कमरे में ले आया। उसने अपने आंसू पोंछे। लेकिन बेरहम आंसू थमने का नाम नहीं ले रहे थे। वह टेबल पर सिर टिका कर रो उठा। वह प्यार का भूखा था और मां और काकी के बाद प्यार माधुरी से ही मिल रहा था। अब फिर वह अकेला हो गया।

बड़ी मुश्किल से उसने अपने आंसू पोंछे और सोचने लगा। इसमें मधु की भी क्या गलती है। एक अपाहिज़ के साथ कोई क्यों रहना चाहेगा? मैं लंगड़ा होता, लूला होता तो भी चल जाता। लेकिन मैं तो पैरा से ही अपाहिज़ हो गया। लकुवा (पैरालिसिस) क्या मुझे ही होना था? ईश्वर ने मुझे ही इस योग्य समझा क्या?' वह फिर रो उठा।

पांडे जी ने आकर पूछा - 'कुछ खाओगे भाई?' उसने हाथ हिला कर मना कर दिया। पांडे चला गया।

करीब एक घंटे बाद दोनों लौट कर आये। खिड़की से धर्मा ने देखा कि दोनों एक दूसरे का हाथ अब भी पकड़े हुए हैं और दोनों हंस-हंस कर बातें कर रहे हैं। दरवाजे के पास आकर फुसफुसाते हुए माधुरी ने कहा - 'अरे अब तो मेरा हाथ छोड़ो। कोई देख लेगा तो।'

गोपाल ने हंस कर कहा - 'और नीचे जो इतने लोगों ने देखा। उस समय तो तुमने हाथ नहीं छुड़वाया।'

'उनकी बात और है। अब हम घर पर हैं। छोड़ो।' और वह अपना हाथ छुड़ा कर मुस्कुरा दी और पूछा - 'अब क्यों हाथ छोड़ा?' गोपाल भी मुस्कुरा दिया और बोला - 'चाचा जी का लिहाज़ है वर्ना कभी नहीं छोड़ता।'

फिर दोनों अंदर आ गए। आते ही गोपाल जोर से बोला - 'पांडे भैया चाय पिलो दो यार। बड़ी ठंड लग रही है।'

माधुरी अपने कमरे की ओर जाने लगी तो उसकी नज़र धर्मा के ऑफिस पर पड़ी। वह अंदर आई और पूछने लगी - 'तुम तो बाहर आ रहे थे न। आये क्यों नहीं?'

धर्मा अपनी आँखें पोंछ चुका था। अपनी आवाज़ को भरसक संयत करके बोला - 'मैं दरवाजे से बाहर नहीं आ सका था। इसीलिए रूक गया और आप लोग काफी दूर निकल गए थे।'

'सॉरी, जल्दी में ध्यान नहीं रहा। लेकिन तुम आवाज़ तो दे सकते थे। हमें बुला लिया होता।' माधुरी ने उसके सिर पर हाथ फेरते हुए कहा फिर बोली - 'चलो अंदर, चाय पीते हैं।' उसके बाद उसकी व्हील चेयर को पीछें खींच कर टेबल के पास ले आई। मैं कपड़े बदल कर अभी आती हूं।' कह कर अपने कमरे की ओर बढ़ गई।

थोड़ी ही देर में शमशेर सिंह को लेकर वह आ गई। शमशेर सिंह जी की आँखें उनींदी सी हो रही थीं। आते ही बोले - 'रात भर नींद नहीं आई। अभी लेटा तो सो गया। मधु के जगाने पर उठ रहा हूं।'

'चाचा जी, अब तो आप भी वापस नहीं जा सकते।' गोपाल ने कहा - 'कोशी नदी में बाढ़ आ गई है। डैम भी रूक कर भर गया और रामनगर के

पीछे वाली नदी में पानी छोड़ा जा रहा है। इससे लल्ला रामनगर पानी में डूब सा गया है। पानी सड़कों पर आ गया है। लोगों की गाड़ियों को आगे नहीं बढ़ने दिया जा रहा है। आपका जाना कठिन है। नीचे आपकी कार भी पानी में डूब गई है। पहाड़ों से अभी भी पानी नीचे गिर रहा है।'

'तुम्हें कैसे मालूम?' शमशेर सिंह जी ने पूछा।

'ये ठीक कह रहे हैं पापा।' माधुरी बोली - 'अभी हम नीचे गए थे। सड़के पूरी पानी से भरी हैं। ऊपर से इतनी तेजी से पानी आ रहा है कि उसमें चलना मुश्किल हो रहा है। कार के पहिये आधे से अधिक पानी में डूबे हुए हैं।'

'तुम ऐसे मौसम में नीचे क्यों गई?' शमशेर सिंह जी ने गुस्से से पूछा।

'ये ले गए थे?' उसने गोपाल की ओर इशारा कर दिया।

त्यौरा कर शमशेर सिंह जी ने गोपाल की ओर देखा तो वो बोला - 'चाचाजी, यहाँ आई हुई हैं तो यहाँ का कुछ एक्सपीरियंस तो होना चाहिए। शहर में उसके फ्रेंड पूछेंगे तो बता तो सकती है। नीचे घरों के बीच भी नदी बह रही है। दो-चार घरों की छत उड़ गई है। घरों के अंदर पानी भर गया है। आपके साथ मैं भी फंस गया हूं। न मैं इधर जा सकता हूं न उधर।'

'तुम्हारे रास्ते का क्या हाल है?' नरम स्वर में शमशेर सिंह जी ने पूछा।

'पता नहीं कोई नहीं बता पा रहा है। पर इतना पता चला है कि न तो रामनगर से और न ही नीचे से कोई बस या जीप आई है।'

'ये तो बुरे फंस गए। न घर के रहे न घाट के।' शमशेर सिंह जी ने चिंतित स्वर में कहा।

चाय आ गई तो सब चाय पीने लगे। तभी काका जी भी आ गए। पांडे जी उनके लिए भी चाय ले आया था। शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'कहाँ रह गए थे?'

'नीचे ही फंस गया था। मैंने सोचा ठंडा मौसम है आप लोगों को बाजरे की रोटी खिलाई जाये। गांव से आटा नहीं आ पाया तो नीचे चक्की वाले के पास गया था। बिजली तो थी नहीं। उसका मिनी जनरेटर में क्या खराबी हुई कि स्टार्ट ही नहीं हुआ। सामने ही एक मैकेनिक है। जब वा आया तब जनरेटर चालू हुआ। अब आटा लेकर आया हूं।' फिर उन्होंने पांडे से कहा - 'क्यारियों से सरसों तोड़कर ले आना।'

पांडे सिर हिला कर चला गया। जाते-जाते दरवाजे के पास से आटे की थैली भी ले गया। गोपाल ने पूछा - 'चाचा रास्ते का क्या हाल है?'

'गोपू, अब तू यहीं बैठा रह। सुना है जो सड़कें ठीक की गई थीं, उनमें बड़े-बड़े गड्ढे पड़ गए हैं। दस बारह पेड़ भी टूटे हैं लेकिन गनीमत ये है कि पेड़ ऊपर ही अटक गए हैं। सड़क के नीचे के पेड़ अधिक टूटे हैं।'

'चाचा मेरे स्कूल का हर्जा हो रहा है ... ।' गोपाल ने कहना चाहा तो काका बात काट कर बोले - 'ऐसी बरसात में तेरा स्कूल भी बंद हो गया होगा। चिन्ता मत कर।'

गोपाल ने बुरा सा मुंह बनाया। किंतु माधुरी के चेहरे पर मुस्कान खेल उठी। उसने अपनी कुहनी उसके हाथ पर मारी। वह माधुरी की ओर देख कर मुस्कुरा उठा।'

धर्मा जो उन्हीं की ओर देख रहा था, उसने माधुरी को कुहनी मारते देख लिया। उसके सीने में एक आग सी लग गई।

वह अपनी व्हील चेयर खिसकाते हुए बोला - 'मुझे थोड़ा काम है। मैं अपने ऑफिस में जा रहा हूं।' और वह तेजी से अपने ऑफिस की ओर बढ़ गया। शमशेर सिंह जी और काका आश्चर्य से उसे जाता देखते रहे।

शमशेर सिहं जी ने चिंतित होकर कहा - 'घर में इसकी मां चिन्ता कर रही होगी। हमारे फोन तो काम नहीं कर रहे हैं। रामनगर में एक पी.सी.ओ है। अब वहाँ भी जाकर फोन नहीं कर सकते।'

गोपाल ने अपनी जेब से फोन निकाला और उनकी ओर बढ़ा कर बोला - 'लो चाचाजी, इससे फोन करो। यहाँ बी.एस.एन.एल का ही फोन चल सकता है।'

शमशेर सिंह जी ने फोन लेकर पूछा - 'तू सच कह रहा है?'

'करके देखिये।' गोपाल में माधुरी की ओर देखकर कहा - 'तुम भी मां से बात कर लो।'

माधुरी ने उसकी ओर हंस कर देखा। शमशेर सिंह जी ने फोन लगाया तो दूसरी ओर से उनकी पत्नी की आवाज़ आई। काफी देर तक बात करते रहे और अंत में बोले - 'उम्मीद है एक-दो दिन में हम लौट आएंगे। तुम चिन्ता मत करना। लो मधु से बात करो।' फिर उन्होंने माधुरी को फोन पकड़ा दिया। माधुरी फोन लेकर कमरे में चली गई।

-9-

दूसरे दिन मौसम कुछ खुल गया। आसमान में बादल छाये तो थे लेकिन कभी-कभी धूप निकल आती थी। काका ने धर्मा को गरम कपड़े पहिना कर बाहर व्हील चेयर पर बिठा दिया था। बिजली भी आ गई थी। लेकिन बाहर की खुली हवा में अच्छा लग रहा था।

लॉन का पानी निकल गया था। लेकिन दीवार की ओर की मिट्टी अभी गीली थी। आड़ू के पेड़ के नीचे गड्ढे से हो गए थे। काका ने मकान के पीछे से मिट्टी लाकर डाल दी थी। फिर वे धर्मा को बता कर रामनगर दूसरे बैंक का अकाउंट स्टेटमेंट लेने, साथ ही कुछ सामान लेने चले गए थे।

थोड़ी ही देर में गोपाल बाहर आ गया। धर्मा के पास बैठकर उसने पूछा - 'कैसे हो भाई?'

'ठीक हूं।' बुझे मन से धर्मा ने कहा।

'क्या हो गया? बड़े चिंतित लग रहे हो। तबीयत तो ठीक है न?' गोपाल ने पूछा।

'कई परेशानियां हैं भाई। वैसे भी एक अपाहिज़ की जिंदगी बेकार ही है। भगवान अपाहिज़ बनाने की बजाय मार की क्यों नहीं देता।'

'दिल छोटा मत करो। ईश्वर सब देखता है और सबकी सुनता है। तुम्हें सब कुछ इसीलिये ईश्वर ने दिया है।'

'क्या दिया है ईश्वर ने?' तभी माधुरी ने बाहर आकर पूछा?'

'देखो न मरने की बात करता है।' गोपाल ने कहा।

उसके पास आकर माधुरी ने उसके सिर पर हाथ फेरा और बोली - 'मरने की बात मत किया करो धर्मू।' फिर उसकी व्हील चेयर पीछे से पकड़ कर गेट तक दौड़ी और फिर वापस आकर बोली - 'मरने की बात कमजोर लोग करते हैं।'

दो-तीन बार उसने धर्मा को यूं ही आगे पीछे किया तो धर्मा हंस कर बोला - 'गिराओगे क्या। छोड़ो।'

उसने चेयर फिर वहीं लाकर रोक दी और गोपाल से कहा - 'आप तो आज मुझे रामनगर के पीछे वाली नदी दिखाने वाले थे न।'

'तुम अब उठ कर आ रही हो। मैं तो कब से बैठा हूं। चलना है तो चलो।' गोपाल ने कहा।

खुश होते हुए धर्मा ने कहा - 'हाँ, बड़ा मजा आएगा।'

गोपाल खड़ा होता हुआ बोला - 'नहीं भाई तुम रहने दो। तुम चल नहीं पाओगे।'

धर्मा का चेहरा सफेद हो गया। उसने सिर झुका लिया। गोपाल ने माधुरी का हाथ थाम कर बढ़ते हुए कहा - 'चलो, पहाड़ी रास्ते में मेरा हाथ थामें रहो। कहीं फिसल गई तो चाचा जी मुझे दोष देंगे।'

माधुरी ने चलते हुए कहा - 'तुम्हें धर्मा जी से ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए थी।'

'अरे, उसे भी तो सोचना चाहिए था। अपंग आदमी, जो चल नहीं सकता। कौन उसे उठा कर ले जाएगा।' गोपाल ने झुंझलाते हुए कहा।

फिर वे गेट से बाहर निकल गए। धर्मा की आँखों से आंसुओं की धार बहने लगी। कुछ देर वह रोता रहा। फिर गुस्से से अपनी व्हील चेयर को इधर-उधर घुमाने लगा।

कुछ देर बाद उसने सोचा कमरे में चला जाये। लेकिन दरवाजे के पास आकर वह रूक गया। अंदर जाने के लिए दो सीढ़ियाँ चल कर जाना होता था। उसी के बगल में ढलवां रास्ता भी बनाया हुआ था। उसने कोशिश की कि वह ऊपर चढ़ जाये लेकिन वह जोर नहीं लगा सका। उसने जोर-जोर से पांडे को आवाज़ दी। लेकिन उसने आवाज़ नहीं सुनी। दो तीन बार आवाज़ देने पर भी जब वह नहीं आया तो बेबसी से वह वहीं रुक कर जोर-जोर से अपने पैरों पर हाथ मरने लगा और रोने लगा। कुछ देर रोने के बाद उसने काका को आवाज़ दी। लेकिन काका वहाँ नहीं थे।

थक हारकर उसने व्हील चेयर पीछे की और बेबसी से गेट की ओर मुंह करके खड़ा हो गया। करीब एक घंटे तक वह वहीं खड़ा सोचता रहा। 'मैं अपंग हूं। नाकारा, एक बोझ! इस धरती पर एक बोझ ही तो हूं। कौन मुझे सहारा देगा। जब तक काका जी हैं, तब तक ये मेरा बोझ उठा सकते हैं। वे भी बूढें हो जायेंगे, तब क्या होगा? कौन सहारा देगा?'

सोचते-सोचते वह मायूसी से अपनी व्हील चेयर घुमाने लगा। वह व्हील चेयर कहाँ ले जा रहा है, इसका भी होश न रहा। अचानक व्हील चेयर को झटका लगा और उसका पीछे का एक पहिया मिट्टी में धंस गया। व्हील चेयर टेढ़ी हो गई और बायीं ओर झुक गई। जल्दी से उसने हाथ बढ़ा कर आड़ू की एक लटकती डाल पकड़ ली। वह गिरने से तो बच गया लेकिन सीधा न हो सका। वह फिर पांडे को आवाज़ें देने लगा। अब वह नहीं आया तो अपनी बेबसी पर वह फिर रोने लगा और उसे इस्मत चुगुताई की एक कहानी में पढ़ी ये लाइनें याद आई -

"मैं भी क्या इंसान हूं एक खिलौना बन गया,

जिसने चाहा मुझसे खेला जब जी चाहा तोड़ दिया।"

आसमान में बादल गहरे होने लगे। थोड़ी ही देर में बूंदा-बांदी शुरू हो गई और हवा तेज चलने लगी। धर्मा घबराया और पहिये को निकालने के लिए पेड़ की डाल को खींच कर जोर लगाया, किंतु पहिया और अंदर धंस गया। धर्मा पांडे जी को जोर से पुकारने लगा। किंतु तेज आंधी में उसकी आवाज़ दब कर रह गई। बादलों की गर्जना बढ़ गई। बिजली चमकने के साथ बारिश भी लग गई। धर्मा भीग चुका था। मिट्टी गीली हुई तो अगला पहिया भी कीचड़ में धंस गया। धर्मा ने दोनों हाथों से डाली पकड़ ली और रोने लगा।

उसी समय बारिश से बुरी तरह भीगे हुए माधुरी और गोपाल एक दूसरे का हाथ थामें हंसते हुए आये। धर्मा ने आवाज़ दी 'गोपू, मधु अरे मुझे भी ले चलो।'

किंतु, उन्होंने शायद सुना नहीं। दरवाजा खोलने से पहले गोपाल ने मधु को बाहों में जकड़ लिया। वह फुसफुसाई 'ये क्या कर रहे हो पागल। अभी तक दिल नहीं भरा क्या। कोई देख लेगा तो।'

'दिल भी कभी भरता है? क्या तुम्हारा दिल भर गया है?'

माधुरी ने अपना एक हाथ छुड़ा कर दरवाजा खटका दिया। गोपाल ने जल्दी से उसे छोड़ दिया। माधुरी हंस कर जल्दी से दरवाजा खोल कर अंदर चली गई। गोपाल भी मुंह बनाता हुआ अंदर गया और द्वार ढक दिया।

'जाओ कपड़े बदल लो नहीं तो बीमार हो जाओगे।' कहती हुई माधुरी अपने कमरे में चली गई।

गोपाल सीधे ऊपर कमरे में गया। उसने देखा पांडे वहाँ सोया हुआ था। उसने पांडे को जगा कर कहा - 'जा चाय बना और सिगड़ी जला दे। ठंड लग रही है।'

पांडे कुनमुनाता हुआ उठा और नीचे चला गया।

जब गोपाल नीचे आया तो सिगड़ी जल रही थी। माधुरी सिगड़ी के पास बैठी आग ताप रही थी। गोपाल को देख कर वह मुस्कुराई और बोली - 'मैं तो समझी थी कि गढ़वाली बड़े सीधे-सादे होते हैं। लेकिन आपको देख कर मुझे अपने विचार बदलने पड़ेंगे।'

'कैसे विचार बदलने पड़ेंगे मधु?' शमशेर सिंह जी ने आते हुए पूछा।

माधुरी हड़बड़ा गई और पूछा - 'आप सोये हुए थे क्या?'

'हाँ बेटा, लगता है बुखार हो गया है। अच्छा हुआ मैं दवा ले आया। दवा खाकर मैं लेट गया था।'

'ओह!' माधुरी ने उनके हाथ को छू कर कहा - 'शरीर तो अभी भी गरम है। आप चाय पीकर लेट जाओ पापा।'

'थोड़ी देर आग ताप लूं तब लेट जाऊंगा।'

तभी भड़ाक से दरवाजा खुला और काका कंधे पर धर्मा को लिए गुस्से में आँखें लाल किये चिल्लाये - 'शरम नहीं आती आप लोगों को। एक मजबूर इंसान बाहर पड़ा है। आप लोगों में इतनी भी तमीज़ नहीं कि उसे अंदर ले आते। बस गुलछर्रे उड़ाने में आनन्द आता है। अंगीठी जला ली, चाय पी ली और भूल गए कि जिसने तुम लोगों को आश्रय दिया वह किस हाल में है। कल ही आप सब इस मकान को खाली कर दो। जहाँ जाना है जाओ। पांडे तू कहाँ था। सारा काम छोड़ कर तुझे इनका ख्याल रखना

चाहिए था। अब सब काम छोड़ धर्मू के लिए अदरक की चाय ला और गरम पानी भी ला। जल्दी कर।'

फिर वे धर्मा को लेकर ऊपर चले गए। सब सक्ते की हालात में थे। माधुरी और गोपाल के चेहरे भी झुके हुए थे।

थोड़ी देर बाद शमशेर सिंह जी ने कहा - 'मुझे बुखार था। मैं सो गया था। पर तुम दोनों तो बाहर उसके साथ थे फिर उसे लाये क्यों नहीं?'

दोनों सिर झुकाये रहे। कुछ बोल न सके। फिर कुछ देर बाद माधुरी उठ कर अपने कमरे में चली गई।

'गलती हो गई चाचा जी। हम दोनों थोड़ी देर के लिए नीचे हालात देखने गए थे। बस आकर, जब वह नहीं दिखा तो अंदर आ गए।' शमशेर सिंह जी भी उठ कर अपने कमरे में चले गए।

गोपाल वहीं बैठा अंगीठी को देखता रहा।

-10-

काका ने ऊपर ले जाकर धर्मा के कपड़े उतार कर अच्छी तरह से गरम पानी से उसे पोंछा। उसके बाद कपड़े पहिना कर कम्बलों से ढंका और चाय पीने को दी। जब वह चाय पी चुका था तो उन्होंने पूछा - 'तू आवाज़ देकर किसी को बुला नहीं सकता था क्या?' पांडे को ही बुला लेता।'

'काका जी, मैं खूब चिल्लाया पर किसी ने सुना नहीं। खुद भी ऊपर आने की कोशिश की पर नहीं आ सका। रैंप काफी ऊंचा था।' धर्मा धीरे-धीरे बोला। उसके दांत अभी भी कट-कटा रहे थे।

काका ने वहीं से पांडे को आवाज़ दी - 'पांडे, अंगीठी ऊपर लेकर आ।'

पांडे ने अंगीठी उठाई और ऊपर ले आया। लकड़ियां बुझ चुकी थी लेकिन कोयले जल कर लाल हो रहे थे और अच्छी ताप दे रहे थे। उसकी खाट के पास अंगीठी रखकर वह चला गया।

'तुम आग तापो। मैं तुम्हारे लिए गरम काढ़ा बना कर लाता हूं।' काका को जैसे याद आया। जेब से बैंक स्टेटमेंट निकाल कर देते हुए बोले - 'ये बैंक स्टेटमेंट है। बैंक वाले कह रहे थे कि इसमें सिर्फ पैसा जमा हो रहे हैं किंतु कितने सालों से पैसे निकाले नहीं हैं। इससे अकाउंट बंद हो जायेगा और फिर से अकाउंट चालू करने के लिए परेशानी होगी। इसलिये महिने-दो महिने में कुछ रूपये निकाल लिया करो। अब जैसा तुम कहो। रूपये निकालने हो तो एक चैक काट देना। मैं अभी आता हूं।' और वे बाहर निकल गए।

धर्मा सोच में पड़ गया। उसे रह-रह कर काकी की याद आ रही थी। कई दिन बीत गए थे काकी और भाई-बहिन को देखे बिना। उसने सोचा अब वह काकी को यहाँ से जाने नहीं देगा।

फिर उसका ध्यान माधुरी की ओर गया। गोपाल के आते ही वह कितनी बदल गई है। गोपाल के यह कहने पर कि ऐसे अपंग व्यक्ति को कौन ढोकर ले जायेगा, उसने कुछ नहीं कहा और उसका हाथ पकड़ कर चली गई। एक बार तो पीछे मुड़कर देखती। जब वह आई तो कैसे उसके सीने से लग गई। उसके पुकारने की आवाज़ भी नहीं सुनी। कितना बदल गई है वो। ठीक है, मैं नहीं जा पाता, चल नहीं सकता, कह तो जाती। क्या मेरा मन नहीं था उस नदी को देखने का? कौन से वे पैदल गए होंगे?' पांडे से कह कर मुझे भी नीचे तक ले जाते। लेकिन, मैं तो अपंग हूं, अपाहिज़। एक बोझ हूं। लेकिन, मैं काका और काकी के लिए तो एक बोझ नहीं हूं। कितना प्यार करती है काकी। अक्सर रोती रहती है।'

उसकी आँखों से आंसू झरने लगे। फिर किसी की पदचाप सुनकर उसने अपने आंसू पोंछ लिये और आग तापने लगा।

आने वाली माधुरी थी। उसे देख कर वह एक टक उसकी ओर देखने लगा। वह बहुत चिंतित दिखाई दे रहा थी। सिर झुकाये कुछ देर वह चुप रही। उसके बाद बोली - 'धर्मू बारिश बंद हो जाये तब हम यहाँ से चले जायेंगे।'

'क्या! ऐसे पानी में कैसे जाओगे। सुना है नदी का पानी सड़कों पर भर गया है। आगे भी पहाड़ी इलाका है। उधर का क्या हाल है, पता नहीं। ऐसे में कैसे जाओगे?'

'हम घर नहीं जा रहे हैं। किसी होटल में चले जायेंगे।'

'यहाँ क्या परेशानी हो रही है?'

'काका जी ने कहा है। सबको जाने के लिए।'

'उन्होंने गुस्से में कहा होगा। मैं, जब तुम लोग आ रहे थे आवाज़ दे रहा था। आप लोगों ने ध्यान नही दिया। इसी बात पर वे नाराज हो गए थे। काका जी, बहुत सहृदय वाले हैं। अब तक वे भूल भी गए होंगे।'

काका जी एक गिलास में काढ़ा लेकर आये। माधुरी को देखकर वे थोड़ा ठिठके तो धर्मा ने कहा - 'काका जी, इन्हें देखो। ये कह रही हैं कि घर छोड़ कर होटल में रहने जा रहे हैं।'

'पागल हो गए हो क्या?' काका ने गिलास धर्मा को पकड़वाया और बोले - 'ये वीरान मकान आबाद हुआ है। चाहे कुछ दिनों के लिए ही सही। अब तुम लोग तभी यहाँ से जाओगे जब मौसम ठीक हो जायेगा। अपना नहीं तो अपने पिताजी का ख्याल करो। वो बीमार हैं। हालांकि बुखार कुछ कम हो गया है फिर भी कमजोरी है। मैं उनको भी काढ़ा दे आया हूं। तुम पियोगी?'

माधुरी ने न में सिर हिला दिया। उसके चेहरे पर मधुर हंसी नाच उठी। काका नीचे जा रहे थे जब धर्मा ने कहा - 'काका जी मेरी एक बात आप मानेंगे?'

'क्या?' काका ने रूकते हुए पूछा।

'काकी को बुला दीजिये। उन्हें कहिये मौसम ठीक होते ही यहाँ आ जायें। मेरा मन उन्हें और भाई बहिन को देखने को कर रहा है।'

'कैसे कहूं। फोन ठीक हो जायेगा तो कह दूंगा।'

'गोपाल के मोबायल फोन से बात हो सकती है। प्लीज़ काका जी। बुला दीजिए।'

'अच्छा देखता हूं।' कहकर काका नीचे चले गए।

माधुरी धर्मा के पास आयी और नजदीक पलंग पर बैठती हुई बोली - 'सॉरी धर्मू, उस वक्त पानी और अंधड़ की आवाज़ में मैं सुन नहीं पायी। अंदर आकर मैं कपड़े बदलने चली गई। मैंने सोचा कि तुम ऊपर अपने कमरे में हो। इसलिए अधिक ध्यान नहीं दिया।'

धर्मा थोड़ी देर उसे देखता रहा। एक घूंट काढ़ा पिया तो बुरा सा मुंह बना कर खांसने लगा। खांसने से हाथ हिला तो काढ़ा छलकने लगा। माधुरी ने आगे बढ़ कर उसका गिलास पकड़ लिया और दूसरे हाथ से उसकी पीठ मलने लगी। थोड़ी ही देर में उसकी खांसी बंद हो गई। माधुरी को इतने नजदीक देख कर उसका चेहरा खुशी से चमकने लगा। वह एकटक मधु की ओर देखने लगा। माधुरी ने झिड़कते हुए कहा - 'ठीक से नहीं पी सकते? मैं न होती तो अभी यह सब कपड़ों पर गिर जाता।'

'काढ़ा बहुत कड़ुआ है। एकदम गले पर लग गया।'

'काढ़ा कड़ुवा ही होता है। धीरे-धीरे पिया करो। लो गिलास पकड़ो।' और उसने गिलास उसके हाथ में थमा दिया।

थोड़ी देर बाद माधुरी ने कहा - 'तुम्हारे यहाँ की हर चीज़ अजीब है। तुम अजीब हो, काका अजीब हैं और पांडे, वह तो सबसे अजीब है। इस पहाड़ की चोटी पर तुम हो। एक दम अकेले। न किसी से मिलना। न किसी से बात करना। न यहाँ तक कोई गाड़ी आ सकती है। फिर रहते तुम यहाँ आसमान में जहाँ से नीचे उतरने के लिए एक सहारा चाहिए। तुम नीचे के कमरे में क्यों नहीं रहते?'

धर्मा खामोश जैसे दूर कहीं देख रहा था। फिर जैसे अपने से बात कर रहा हो बोला - 'यहाँ मेरे साथ पिता की यादें जुड़ी हैं। मैं और पिताजी इसी कमरे में रहते थे। यहाँ दीवारों पर जो भी चित्र लगे हैं वे पिताजी ने ही लगाए हैं। सामने जो आला है जिस पर लाल रंग का कपड़ा पड़ा है। उसके पीछे मेरे

पिताजी और मां की फोटो है। पिताजी फौज़ में थे। मैं उनसे अलग नहीं होना चाहता। यहाँ की बाल्कनी से पूरी सड़क दूर तक दिखाई देती है। सामने की खिड़की से हमारा लॉन और खेत दिखाई देते हैं। इसीलिये मैं ये कमरा छोड़ना नहीं चाहता।

जब पिताजी थे तो हमारे घर पर गांव वालों का तांता लगा रहता था। उनके दोस्त जो शहरों से कॉर्बेट पार्क देखने आते थे हमारे यहाँ ही ठहरते थे। हम कभी अकेले नहीं रहे। फिर एक दिन काका जी पांडे जी को ले आये खाना बनाने के लिए।'

फिर रूक कर बोला - 'अब आप ही बताइये। मैं कैसे इस कमरे को छोड़ दूं। काकी आती है तो सामने वाले कमरे में ठहरती है। उनसे मिलने जब मेरा जी चाहता है चला जाता हूं या वे यहाँ आ जाती हैं। फिर मैं यह कमरा क्यों छोड़ दूं?'

उसकी बात सुन कर माधुरी को चेहरा भी गंभीर हो गया। वह चुपचाप बैठी शून्य में देखती रही। गिलास खाली करके वह गिलास नीचे रखने के लिए झुका तो माधुरी ने गिलास उसके हाथ से ले लिया और उठती हुई बोली - 'गिलास मैं नीचे ले जाती हूं। देखती हूं पापा का क्या हाल है?'

धर्मा ने सिर हिला दिया और वह नीचे चली गई। नीचे उसे गोपाल नहीं दिखाई दिया। उसकी आवाज़ रसोई घर से आ रही थी। माधुरी ने झांक कर देखा। गोपाल से नज़र मिलते ही वह बाहर आया और फुसफुसा कर बोला - 'क्या रहा?'

वह भी मुस्कुराई और धीरे से बोली - 'शांत है। लेकिन पागल है। पता नहीं क्या बड़बड़ा रहा था।'

'बारिश बंद हो गई है। बाहर चलें?' उसने शरारत से पूछा।

'होश में रहा करो। कल उसने सब कुछ देख लिया।'

'देखने दो। हम डरते हैं क्या?' गोपाल ने उसका हाथ पकड़ना चाहा। लेकिन माधुरी छिटक कर दूर हट गई और पापा के कमरे की ओर दौड़ गई।

वापस आकर काका जी ने धर्मा को बताया कि काकी को फोन कर दिया है। मौसम अभी ठीक नहीं है रास्ते भी बंद हैं। खुल जायेंगे तो आ जायेंगी।'

'ठीक है। धर्मा ने कहा। एक चैक काटना था, नीचे जाऊं क्या?'

'कहीं जाने की जरूरत नहीं। अपनी किताबें निकालो और यहीं कुछ करते रहो। आज कहीं जाना नहीं है।'

धर्मा मन मसोस कर रह गया। वह कुछ न बोला।

दूसरे दिन मौसम खुल गया। तेज धूप निकल आई। काका ने धर्मा को ऑफिस में बिठाया और बाहर निकल गए। माधुरी और गोपाल बाहर बैठे हुए आपस में हंसी मजाक कर रहे थे। वहीं काका और पांडे पेड़ के नीचे की मिट्टी खोद रहे थे।

धर्मा ने खिड़की से माधुरी और गोपाल को देखा। वे अपनी कुर्सियां हालांकि दूर-दूर करके बैठे थे और बातें भी मौसम के बारे में कर रहे थे लेकिन दोनों की आँखें एक दूसरे पर टिकी हुईं थी।

धर्मा ने देखा तो उसका चेहरा उतर गया। आज न तो माधुरी उसके पास आई थी और न ही गोपाल आया था। उसका दिल बुझ-सा गया। गुस्से में उसने खिड़की पर पर्दा डाल दिया। और चैक बुक निकाल कर चैक पर लिखने लगा।

तभी शमशेर सिंह जी आ गए। उन्होंने आते ही पूछा - 'कैसे हैं, धरम जी?'

'ठीक हूं। आप सुनाइये। अब बुखार कैसा है?'

'कल काका जी ने काढ़ा पिलाया। न जाने उस काढ़े ने क्या जादू किया कि बुखार ठीक हो गया और रात नींद भी अच्छी आई। कमाल का काढ़ा था।'

'हाँ, काका जी तो मुझे अक्सर यही काढ़ा पिलाते हैं। काकी जब होती है तो रोज पिला देती हैं।'

'क्या कर रहे हैं आप?' शमशेर सिंह जी ने सामने रखे स्टेटमेंट को उठा कर पूछा।

'एक चैक काट रहा हूं। बैंक वाले कहते हैं कि अगर पैसा नहीं निकालोगे तो अकाउंट ब्लॉक हो जायेगा। इसलिए एक चैक देकर कुछ पैसे निकाल लूं।'

धर्मा चैक पर लिखने लगा तो शमशेर सिंह जी ने बैंक स्टटेमेंट पर नज़र डाली। उसमें कुल सत्तावन लाख रूपयों से अधिक थे। चौंक कर पूछा - 'इतने रूपये? ये कहाँ से आये?'

'ये मेरे पिताजी का अकाउंट था। उनकी पेंशन इसी में जमा होती थी। उन्होंने अपनी मृत्यु से पहले मेरा नाम इसमें डलवा दिया था। अब पूरी पेंशन तो नहीं मिलती लेकिन एक चौथाई मिल जाती है। इसमें से मैंने कभी निकाला नहीं। काका जी मना कर देते थे। पर अब निकालना होगा।'

शमशेर सिंह जी कुछ देर सोचते रहे। फिर कुछ निर्णय करके बोले - 'आपके पास सबकुछ है। आप शादी क्यों नहीं कर लेते?'

धर्मा जोर से हंसा और बोला - 'कैसी बातें कर रहे हैं आप। भला एक अपाहिज़ से कौन शादी करेगा?'

शमशेर सिंह जी बोले - 'आपके पास क्या नहीं है। मकान है, खेत हैं, बैंक बैलेंस है और नौकर-चाकर हैं। कोई भी लड़की आपसे शादी करने के लिए तैयार हो जायेगी।'

धर्मा उसके चेहरे की ओर कुछ देर देखता रहा। शमशेर सिंह जी ने चुप देख कर कहा - 'आपकी जिंदगी भी संवर जायेगी। अकेलापन दूर हो जायेगा। वह भी तुम जैसा पति पाकर धन्य हो जायेगी।'

धर्मा की आँखें भर आईं और बुझे स्वर में बोला - 'एक औरत को यहाँ सबकुछ मिल जायेगा। लेकिन तब भी उसे संतोष नहीं होगा। एक औरत की सबसे बड़ी इच्छा होती है मां बनने की। और मैं ... और मैं ....। ' उसने अपना सिर टेबल पर टेक दिया और रोने लगा।

शमशेर सिंह जी आश्चर्य से उसे देखते रहे। फिर सिर उठा कर आंसू पोछते हुए धर्मा ने रूधे कंठ से कहा - 'आपको माधुरी की शादी की चिन्ता है। उसकी शादी गोपाल से करवा दीजिए। वे दोनों एक दूसरे को बेहद चाहते हैं।'

'उंह।' शमशेर सिंह जी गुस्से से बोले - 'क्या है उस कंगाल के पास। एक घर, ढेर सारा कर्ज़ा और दो खेत। बाप के पेंशन और एक छोटी सी नौकरी। न अधिक पढ़ा लिखा। अभी तो जवानी का जोश है। दो दिन में ही होश ठिकाने आ जायेंगे। नहीं मैं उससे मधु की शादी नहीं करवा सकता।'

'लेकिन दोनों एक दूसरे को चाहते हैं-----।' धर्मा ने कहना चाहा।

'आपको भी तो वह चाहती है। फर्क यह है कि वह उसे घुमाने ले जाता है। लेकिन शादी .... बिल्कुल नहीं।' और वे उठ कर बाहर चले गए।

धर्मा सोच में बैठा रहा। फिर उसने चैक, एक ओर रखा और एक कागज़ निकालकर उसपर कुछ लिखने लगा। फिर उसने एक के बाद एक तीन कागज़ों पर कुछ लिखा। अपने दस्तख़त करने के बाद, उन कागज़ों को मोड़ कर, अलग-अलग लिफाफों में बंद कर, मेज की दराज़ में रख कर, उसने चैन की सांस ली।

-11-

काका और पांडे ने मिलकर पेड़ के नीचे की मिट्टी कूट कर उसके ऊपर पत्थर बिछा दिये थे। उसके बाद दरवाजे के पास रैंप को तोड़ कर दोनों ओर ईंटे लगाई और रैंप को इतना लंबा कर दिया कि उस पर व्हील चेयर आसानी से चढ़ जाये। फिर वे गोपाल से बोले - 'गोपू, धरमू का ध्यान रखना। मैं नीचे जाकर मिस्त्री को बोल आऊं की कल सीमेंट लेकर इन दोनों को पक्का कर देगा।' फावड़ा और कुदाल पांडे जी को पकड़ा कर वे जाने लगे तो शमशेर सिंह जी उनके साथ चले गए। वे अपनी गाड़ी की स्थिति देखना चाहते थे।

वे जब गेट से बाहर निकल गए तो दोनों मुस्कुराये तो गोपाल ने उठते हुए कहा - 'अंदर चलते हैं। कहीं आज घर से बाहर न निकाल दे।'

हंस कर माधुरी भी उठ गई और चलते-चलते बोली - 'आप गढ़वाली गीत सुना रहे थे न।'

'चलो अंदर ही सुनाता हूं। तुम भी क्या याद करोगी।'

अंदर कोई नहीं था। पांडे भी रसोई घर में चला गया था। उसे अभी खाना भी बनाना था। ऑफिस में धर्मा बड़े चैन से बैठा था। माधुरी उसके पास आई और प्यार से पूछा - 'क्या कर रहे हो धर्म जी।'

धर्मा मुस्कुराया, फिर बोला - 'बस ये कागज़ पत्र देख रहा था।' उसने उसकी व्हील चेयर पीछे की ओर खींची और बोली - 'बाहर आओ। ये मुझे गढ़वाली गीत सुना रहे हैं। तुम भी सुनो।'

'कौन, गोपू सुना रहा है? तब तो जरूर सुनूंगा। क्या तुम भी गाती हो?'

'ये सिखायेंगे तो गा लूंगी।' उसने मुस्कुरा कर कहा।

फिर माधुरी उसे वहीं छोड़ कर गोपाल से बोली - 'अब सुनाओ भी। फिर पापा जी आ जायेंगी। जल्दी करो।'

कुछ देर रूकने के बाद टेबल के साथ टिक कर उसने गाना शुरू किया-

'ओ माजी, ओ माजी मिलन नि जाणू डांडयों मॉ,

म्यारा बख़रा हर्ची जाला, मिलत नि जाणू डांडयों मॉ।'

गीत इतना मधुर और लयपूर्ण था कि माधुरी गा तो न सकी पर थिरकने लगी। थिरकते-थिरकते वह कई बार गोपाल को अपनी बांहों में भर लेती थी। यह सब देख कर धर्मा के चेहरे पर दुख के भाव छा गए जिन्हें छुपाने के लिए वह व्हील चेयर को खिसका कर रसोई घर में चला गया।

गीत खत्म हो गया और गोपाल और माधुरी बड़ी देर तक एक दूसरे की बांहों में सिमटे रहे। धर्मा ने रसोई घर से यह सब देखा। फिर माधुरी को होश आया तो अपने को छुड़ा कर वह अपने कमरे की ओर दौड़ी और दरवाजा बंद कर लिया।

गोपाल मुस्कुराता हुआ धर्मा के ऑफिस की ओर गया, वहाँ धर्मा को न पाकर रसोई घर में आया तो धर्मा को देखकर बोला - 'अरे भाई तुम यहाँ हो। तुमने गाना सुना?'

'हाँ, यहीं से सुन रहा था। मैंने सोचा जब तक तुम गाते हो तब तक चाय बनवा लूं। अरे हाँ तुम्हारे फोन में चार्ज है?'

'हाँ, लो फोन करना है? काकी को करोगे क्या? वहाँ तो चाचा ने कल ही कर दिया था।' उसने फोन बढ़ाते हुए कहा।

फोन लेकर धर्मा ने कहा - 'नहीं, काकी जी को नहीं। रामनगर करना है।'

कह कर वह बाहर आया और अपने पिताजी के वकील से बात की। वकीन ने उन्हें दस-ग्यारह बजे आने का वादा किया। गोपाल चाय ले आया था। गिलासों को टेबल पर रख कर वह माधुरी के कमरे पर जाकर खटखटा कर बोला - 'बाहर आ जाओ। चाय तैयार है।'

बड़ी देर बाद शरमाती और झिझकती हुई वह आई। झुकी हुई नज़रों से गोपाल की ओर देखा और होठों पर हंसी खेल गई। तभी उसकी नज़रें धर्मा पर पड़ी तो उसकी ओर बढ़कर उसके गालों पर हाथ रखकर बोली - 'गधे की तरह गा रहे थे न।'

'मैं तभी तो रसाई घर में चला गया था।' रोमांचित होकर धर्मा ने कहा।

'अच्छा तो मैं गधे की तरह गा रहा था। अब कहना गाने के लिए। कभी नहीं गाऊंगा।' गोपाल ने रूठने का अभिनय करते हुए कहा और चाय पीने लगा।

शमशेर सिंह जी और काका लौट आए थे। आते ही एक कुर्सी पर बैठकर बोले - मधु सड़क पूरी तरह साफ हो गई है। गाड़ी स्टार्ट करके देख ली, ठीक है। सुना है पहाड़ी नदी का पानी भी कम हो गया है और गाड़ियां आने जाने लगी हैं। टेलीफोन लाइनें दोनों ओर की ठीक हो गयीं हैं। ऐसा करते हैं कल सुबह हम निकल चलते हैं।'

सुनकर माधुरी के पैरों के नीचे से जमीन निकल गई हो। उसका चेहरा सफेद हो गया। वह एक बार गोपाल की ओर देख कर पापा की ओर देखने लगी। उसके मुंह से केवल यही शब्द निकले - 'इतनी जल्दी?' गोपाल के चेहरे की रंगत उतर गई थी।

'तुम जरा मेरे साथ आओ। सामान ठीक करना है।' शमशेर सिंह जी उठ कर अपने कमरे की ओर बढ़ गए। माधुरी ने एक बार गोपाल की ओर देखा और उठ कर पापा के पीछे-पीछे चल पड़ी।

दोनों जब कमरे में पहुंच गए तो शमशेर सिंह जी ने गुस्से से कहा - 'मुझे तुम्हारा गोपाल के साथ इस तरह मिलना बिल्कुल पसंद नहीं है। आवारा लड़का लगता है। न ढंग से घर है। न धन-दौलत ही है। इसलिये अब यहाँ से घर जायेंगे। चाहे रास्ता खुला हो या बंद।'

माधुरी की चेहरा भी गुस्से से लाल हो गया। वह कुछ देर अपने पापा के चेहरे को देखती रही। फिर पलटी और गुस्से से बाहर निकली। गोपाल के पास आई और गुस्से से बोली - 'अपना फोन दो।'

गोपाल ने चुपचाप फोन निकाल कर दे दिया। वह फोन लेकर अपने कमरे में गई और भड़ाक से दरवाजा बंद कर दिया। उसने अपनी मां को फोन लगाया। जब मां ने फोन उठाया तो वह दहाड़ कर बोली - 'मां, आप लोगों ने क्या सोचा कि मैं किसी आवारा लड़के से प्यार करूंगी।'

'क्या हुआ? इतने गुस्से में क्यों है?'

'मां, मैने हाई स्कूल में पढ़ाई की। फिर कॉलेज में भी पढ़ाई की और अब नौकरी कर रही हूं। इतनी जगह लड़कों के साथ रही। लेकिन कभी आपने मेरे बारे में कोई गलत बात सुनी? नहीं न। क्योंकि मुझे कोई भी लड़का पसंद नहीं आता था। जब मैं यहाँ आई तो मुझे गोपाल मिला। उसे देखते ही मैं उसे चाहने लगी। मां, अब वो भी मुझे चाहता है।'

'लेकिन तेरे पापा कह रहे थे कि वो एक गांव के स्कूल में टीचर है। दस-बारह हजार कमाता। पिता की थोड़ी सी पेंशन है और एक छोटा-सा मकान है। दो खेत हैं बस।'

'मां, मुझे न धन चाहिए न बड़ा मकान।'

'तुम्हारे पापा किसी धर्मा के बारे में कह रहे थे?'

'धर्मा! क्या तुम चाहती हो कि एक अपाहिज़ से शादी कर लूं और फिर उसे गोद में उठा कर घूमती रहूं। माना कि उसके पास धन-दौलत है। लेकिन चल-फिर नहीं सकता। फिर उसके लिए गार्ड रखूं जो कंधे पर उसे उठाये मेरे साथ चले।'

'तुम्हारे पापा कह रहे थे तुम उसे खूब चाहती हो।'

'मां वो अपंग है। दोनों पैरों से अपाहिज़। स्नेहवश में उसके साथ खेलती और बातें कर लेती हूं ताकि, उसे थोड़ी सी खुशी मिले। वह बेचारा खुश हो जाता है तो अच्छा लगता है।'

मां कहने लगी - 'लेकिन बेटा, यह कैसे हो सकता है?' माधुरी ने बात काट कर निश्चयात्मक स्वर में कहा - 'मां, या तो आप आकर मेरी शादी उससे करा दो या हम दोनों किसी मंदिर में स्वयं शादी कर लेंगे। ये मेरा अटल फैसला है। मुझे शादी में कुछ भी नहीं चाहिए। न पैसा न गहने। बस एक पकड़े में मैं चली जाऊंगी।'

'अच्छा मैं आ रही हूं। आके बात करती हूं।' मां ने कहा तो वह बोली - 'इसी नंबर पर फोन कर देना। यह गोपाल का फोन है। वह आपकी पापा से बात करा देगा।'

फिर फोन करके वह बाहर आई और फोन देकर बोली - 'मां का फोन आयेगा पापा के लिए। फोन पापा को दे देना। और आप भी अपने मम्मी-पापा को बुला लो। यहीं फैसला होगा।' फोन देकर वह फिर अपने कमरे में चली गई। गोपाल फोन लेकर आश्चर्य से उस ओर देखता रहा।

धर्मा चिंतित भाव से अपने ऑफिस की ओर बढ़ गया।

दूसरे दिन भी मौसम खुला रहा। टैक्सी और बसें चलने लगी थी। सुबह दस बजे काका चैक लेकर रामनगर चले गए थे। गोपाल भी नीचे चला गया था। बाहर मिस्त्री काम कर रहे थे। शमशेर सिंह जी सुबह ही उठ कर बाहर टहल रहे थे। माधुरी अपने कमरे में ही थी। वह बाहर नहीं निकली। नाश्ता भी उसने अपने कमरे में ही मंगवा लिया था।

ठीक ग्यारह बजे वकील साहब आ गए। धर्मा उन्हें लेकर अपने ऑफिस में ले आया था और वे तीन लिफाफे उनके सामने रख दिये। वकील ने उनके पत्र निकाल कर पढ़े। अंत में उन्होंने पूछा - 'ये आपने होशो हवाश में लिखें हैं?'

'जी हाँ। मैं इसी तरह जायदाद, अर्थात् चल-अचल संपत्ति का बंटवारा चाहता हूं। मैं एक अपाहिज़ व्यक्ति हूं और इन्हीं का मुझे सहारा है। आप इन पर तहसीलदार के दस्तख़त करवा दें। आपकी जो फीस होगी वो मैं दे दूंगा।'

'ठीक है धर्मा जी मैं कल लाकर आपको दे जाऊंगा।' वकील ने कहा और चाय पीकर वे चले गए।

-12-

धर्मा चिंतित होकर कमरे में ही इधर-उधर व्हील चेयर घुमाता फिर रहा था। कभी-कभी दरवाजे के पास जाकर मिस्त्रियों को काम करते देखने लगता था। पांडे जी भी उनके पास ही बैठे बातें कर रहे थे। मिस्त्रियों ने एक लंबा सा रैंप बना दिया था। अब सीढ़ियों की ऊंचाई इतनी कम हो गई थी कि व्हील चेयर आसानी से वह खुद ही चढ़ा सकता था। उसके चेहरे पर एक मामूली सी हंसी थिरक उठी।

शमशेर सिंह जी चिंतित से लॉन में टहल रहे थे। माधुरी एक बार भी कमरे से बाहर नहीं निकली थी। थोड़ी ही देर में गोपाल आया। वह हाँफ रहा था। आते ही बोला - 'भाई, मैं गांव जा रहा हूं। रास्ता खुल गया है। मैं कल-परसों तक अपने पिताजी और मां को लेकर आ जाऊंगा।'

'लेकिन पहुंचने में बहुत रात हो जाएगी।'

'टैक्सी है। सात आठ बजे तक पहुंच ही जाऊंगा।'

धर्मा ने उसके पास आते हुए कहा - 'मेरा एक काम कर दोगे?'

'क्या? बोलो।'

धर्मा ने कहा - 'कल जब तुम आओ तो मेरी काकी और बच्चों को ले आओगे?'

गोपाल ने एक क्षण धर्मा के चेहरे की ओर देखा। फिर बोला - 'क्या वो मेरे साथ आ जायेंगे? तुम उनको फोन कर दो।' और उसने अपना फोन निकाला।

धर्मा ने कहा - 'टेलीफोन चालू हो गया है। काकी के पास मोबायल फोन है। मैं उन्हें कर दूंगा।'

गोपाल मुस्कुराया और बोला - 'काकी और भाई-बहिन की याद आ रही है न।'

धर्मा भी सिर झुका कर मुस्कुरा दिया।

माधुरी ने उसकी आवाज़ सुनकर द्वार खोल दिया। गोपाल उसके पास गया और बोला - 'मैं पिताजी और मां को लेने जा रहा हूं। कल दोपहर तक लौट आऊंगा। अब खुश हो न?'

माधुरी ने सिर हिला दिया। उसका चेहरा चमक उठा था और होंठों पर मुस्कुराहट नाच उठी थी।

धर्मा अपनी व्हील चेयर लेकर दरवाजे के पास आ गया।

जब गोपाल जाने लगा तो पीछे-पीछे माधुरी दरवाजे तक आ गई और तब तक वहाँ खड़ी रही जब तक गोपाल नीचे की ओर न बढ़ गया। फिर वह अपने कमरे की ओर बढ़ गई।

बाहर बजे के आस-पास काका लौट आये। वे काफी गुस्से में थे। आते ही उन्होंने नोटों का एक बंडल उसकी कुर्सी पर फेंका और पूछा - 'कितने का चैक काटा था तूने?'

'पचास हजार का।' डरते हुए बंडल उठा कर धर्मा ने कहा।

'क्यों? क्या करेगा इतने रूपयों का?'

'काकी जी को दूंगा।'

'किसलिये?' उसके पास पैसों की कमी है क्या?'

धर्मा ने चुप रहने में ही अपनी भलाई समझी और नोट लेकर ऑफिस के ड्रायर में डालकर चाबी लगा दी। काका ने भी फिर कुछ नहीं पूछा। बाहर जाकर मिस्त्रियों से बात करने लगे।

एक बजे करीब शमशेर सिंह जी ने कहा - 'मधु की मां आ रही है। मैं उसको लेने स्टेशन जा रहा हूं। सुबह की चली हुई है। देखो कब तक बस आती है। मैं वहाँ से कार में ले आता हूं।'

'हाँ ढाई-तीन बजे तक बस पहुंच जायेगी।' काका ने बताया। फिर वे उठकर चले गए। काका भी बाहर निकल गए। माधुरी कुछ देर तक धर्मा को देखती रही। उसका एक बार जी चाहा कि धर्मा के पास जाये। लेकिन कुछ सोच कर अपने कमरे में चली गई।

पांच बज चुके थे, जब शमशेर सिंह जी लौट कर आए। उनकी पत्नी भी साथ थी। वे छोटा सूटकेस लेकर आई थी और कंधे में पर्स पड़ा हुआ था। माधुरी अपने कमरे से दौड़ी-दौड़ी आई और मां से लिपट कर रोने लगी। शमशेर सिंह जी ने बुरा सा मुंह बनाया और सूटकेस लेकर अपने कमरे में ले गए। धर्मा भी ऑफिस से बाहर आ गया। माधुरी की मां ने उसके आंसू पोंछे और पूछा - 'कौन है वो लड़का जिसे तेरे पापा पसंद करते हैं? कौन है इस मकान का मालिक?'

माधुरी ने धर्मा की ओर इशारा किया। उसकी मां ने धर्मा की ओर देखा। उसके चेहरे पर नाचती सौम्यता देख कर वह अवाक रह गई। तभी धर्मा ने शालीनता से कहा - 'प्रणाम मां जी। मैं हूं धर्मा।'

'प्रणाम कहना है तो पैर छू कर करो। या खड़े होकर करो। क्या बैठे-बैठे प्रणाम कर रहे हो।' उसकी मां माया देवी ने मीठे स्वर से कहा।

'मैं उठ नहीं सकता न मां जी। मैं अपंग हूं, अपाहिज़, एक बोझ।' धर्मा ने मायूस लहजे में कहा।

'ओह, सॉरी। मुझे नहीं मालूम था।' माया देवी ने कहा और उसके पास आकर सिर पर हाथ फेरते हुए बोली - 'हाऊ स्वीट ब्याय!'

कुछ देर बाद वे तेजी से कमरे की ओर बढ़ गई। उसके थोड़ी देर बाद उनकी तेज आवाज़ सुनाई देने लगी। वे शायद अपने पति से लड़ रही थी। शमशेर सिंह जी जो कुछ भी कह रहे थे। उसे अनसुना कर रही थी। कुछ देर बाद वह बाहर आई और माधुरी से पूछा - 'तू जिसके बारे में बात कर रही थी, वह कहाँ है?'

'वो गांव गया है। अपने मम्मी-पापा को लाने।' झिझकते हुए माधुरी ने जवाब दिया।

'कब आयेगा?'

'कल आ जायेंगे। शाम तक।'

'इधर आ तुझे दिखाऊं।' कह कर माया देवी बेटी को लेकर अपने कमरे में आई। उनके अंदर जाते ही शमशेर सिंह जी बाहर निकल आए। वे वहाँ रूके नहीं और सीधे बाहर निकल गए।

धर्मा कुछ देर वहीं रहा, फिर अपनी व्हील चेयर बढ़ाता हुआ रसोई घर की ओर बढ़ गया। थोड़ी ही देर में माधुरी की तेज आवाज़ सुनाई दी। वह अपनी मां से कह रही थी - 'मुझे कुछ नहीं चाहिए मां। ये भी कह रहे थे कि हम कुछ नहीं लेंगे।'

उसकी मां ने भी तेज आवाज़ में कहा - 'तेरा दिमाग खराब हो गया है। शादी में मां-बाप गहने नहीं देंगे। खाली हाथ ही तुझे भेज देंगे।'

'ये सब आप पापा को दे दो। उन्हें ही धन-दौलत चाहिए। मैं इन्हीं कपड़ों में शादी करूंगी और इन्हें ही पहनुंगी।' कह कर वह बाहर निकल गई। माया देवी भी उसके पीछे-पीछे बाहर आई। तब तक माधुरी अपने कमरे में जाकर किवाड़ बंद कर चुकी थी। माया देवी ने किवाड़ खटखटा कर अनुनय भरे स्वर में उसे बाहर आने के लिए पुकारती रह गयीं।

दूसरे दिन भी मौसम खुला हुआ था। सुबह दस बजे वकील साहब आये और तीन लिफाफे देते हुए बोले - 'तुम सभी कागजों पर हस्ताक्षर कर देना। य नौटरी के पेपर हैं। तुमने जैसा लिखा था, वैसा ही बनाया है। लेकिन एक बार पढ़ लेना।'

धर्मा ने खुश होकर हामी भरी। फिर वकील साहब चले गए। उन्हें जल्दी थी। इसलिये चाय भी नहीं पी। धर्मा ने गड्डी में से पांच-पांच सौ के दो नोट पकड़ा दिये।

शाम के तीन बजे गोपाल अपने माता-पिता के साथ आ गया। वह अपनी कार लेकर आया था।

जब वे सब कुर्सियों पर बैठ गए दोनों बच्चे ऊपर धर्मा के कमरे में चले गए थे।

शमशेर सिंह जी ने अपना परिचय और अपनी पत्नी का परिचय गोपाल की मां को दिया तो गोपाल के पिता ने हंसते हुए कहा - 'शमशेर तू क्या जानता नहीं कि ये तुझे अच्छी तरह जानती है। तू अपना परिचय मत दे। ये बता तेरी बेटी कहाँ है?'

माया देवी उठकर माधुरी के कमरे का किवाड़ खटखटा कर धीरे से बोली - 'मधु, गोपाल के मम्मी-पापा आ गए हैं। बाहर आ बेटी।'

माधुरी ने द्वार खोल दिया और लजाती हुई बाहर आई। उसने दोनों के पैर छुए। फिर काकी को देखकर उनके भी पैर छुए। गोपाल की मां ने उसका हाथ पकड़ कर अपने पास बिठा लिया और बोली। खुश रहो बेटा।'

रावत जी ने उसकी ओर देख कर कहा - 'अब आज के बाद रोना-धोना बंद। हर वक्त रोती रहती है कि एक बेटी थी वह भी चली गई। देख ले वैसी ही बेटी मिल गई।'

फिर वे शमशेर सिंह जी से बोले - 'शमशेर, हमें तुम्हारी बेटी पसंद है और अब ये हमारी बेटी है। लेकिन मेरी एक शर्त है। वो तुझे माननी होगी।'

शमशेर सिंह जी का चेहरा उतर गया। माया देवी भी सोच में पड़ गई। दोनों ने एक-दूसरे को देखा। संभल कर शमशेर सिंह जी ने धीरे से पूछा - 'कौन सी शर्त?'

रावत जी बोले - 'अपनी बेटी की शादी में हमें कर्ज लेना पड़ा। हमने पूरा इंतजाम किया हुआ था। अचानक उन्होंने ऐसी मांग कर दी कि हम परेशान हो गए। एक बार सोचा कि शादी तोड़ दें। लेकिन गांव के लोगों के समझाने पर हम मजबूर हो गए और कइयों से पैसे उधार लेकर उनकी इच्छा पूरी की। धूम-धाम से शादी की। उन लोगों ने ये भी नहीं सोचा कि बेटीवालों पर कितना भार पड़ता है। वह तो कहीं का नहीं रहता। फिर शादी के एन मौके पर बाइक की डिमांड कर दी। किसी तरह से रूपये इकट्ठे किए और दिये। इसलिये मैं तुमसे ये कहना चाहता हूं कि यदि तुझे मेरी शर्त मंजूर न हो तो अभी कह देना।'

बुझे मन से अपनी पत्नी की ओर देखकर शमशेर सिंह जी ने पूछा - 'कैसी शर्त।' माया देवी का चेहरा भी उतर गया था।

रावत जी ने कहा - 'तू मझे कुछ नहीं देगा। यहाँ तक बेटी को कोई गहने भी नहीं। जिन कपड़ों में अभी है उन्हीं कपड़ों में, बाद में इसे क्या चाहिए, वो हमारी जिम्मेदारी है। तेरी यहाँ से हमें कुछ नहीं चाहिए। मेरा वश चलता तो मैं अभी इसे ले जाता। लेकिन सोच रहा हूं मुहूर्त निकलवा के और बाजे-गाजे के साथ इसे ले जाऊं। मंजूर है तुझे मेरी बात?'

शमशेर सिंह जी की आँखों से पानी गिरने लगा। माया देवी का मुंह भी खुला का खुला रह गया।

काकी ने हंस कर कहा - 'सुनीता को भी तो न्योता देना होगा।'

रावत जी बोले - 'उसे तो बुलाना ही है। गांव के कुछ लोग रहेंगे। सभी को बोलना पड़ेगा।'

फिर काका ने पूछा - 'बराती कितने हो सकते हैं?' और खाने का क्या मीनू होगा?' यह बता दीजिए। ताकि वैसा ही बंदोबस्त किया जा सके।'

रावत जी थोड़ी देर सोचते रहे। फिर बोले - 'तकरीबन पच्चीस-तीस तो हो जायेंगे।'

'विवाह के लिए पंडित नीचे से ही ले आइए।'

'पंडित तो हैं, पर ऐसे ही लगते हैं। नहीं तो रामनगर से बुलाने पड़ेंगे।' काका ने कहा।

'पंडित हम अपनी ही लायेंगे। बस खाने की व्यवस्था थोड़ी ठीक हो।'

'चिन्ता न कीजिए। सब ठीक हो जायेगा। ईश्वर ने चाहा तो तब तक मौसम ठीक रहेगा।'

धर्मा अपने ऑफिस में बैठा यह सब सुन रहा था।

तभी काकी बोली - 'ऐसा कैसे हो सकता है? बेटी को हम खाली हाथ कैसे भेज सकते हैं? हमारे घर से वह पूरी दुल्हन बन कर जायेगी। बस आप दिन निकलवा कर फोन कर दीजिये कि बारात लेकर कब आ रहे हो। और किस दिन लड़के की हल्दी रस्म कर रहे हो। हमें भी बेटी के हाथ पीले करने होंगे।'

सभी आश्चर्य से काकी का मुंह देखने लगे। रावत जी की पत्नी ने कहा - 'हमें कुछ नहीं चाहिए।'

'हम आपको कहाँ दे रहे हैं बहन। हम तो अपनी बेटी को देंगे। दूल्हा बन-ठन के आयेगा और हम बेटी को चीथड़ों में भेज दें? हंसी उसके मां-बाप की नहीं होगी। किंतु इस घर की होगी। धर्मा की होगी। गांव में मेरी होगी। आप निश्चिंत रहो। कोई बड़ी चीज़ नहीं देंगे। उसे दुल्हन बना कर ही भेजेंगे।'

रावत जी खामोश हो गए और सभी एक टक काकी की ओर देखने लगे। शमशेर सिंह जी और उनकी पत्नी माया देवी आश्चर्य से काकी की ओर देखते रह गए। माधुरी की आँखों से आंसू आ गए।

थोड़ी देर बाद रावत जी ने कहा - 'शमशेर अब हम चलते हैं। तै रहा, मैं कल तुम्हें खबर कर दूंगा।'

काका बीच में बोले - 'ऐसे कैसे जाओगे? खाना तैयार हो गया है। फटाफट खाकर निकल जाओ। मैं टेबल पर खाना लगवाता हूं।'

'हम खाकर आये हैं ...।' रावत जी ने कहना चाहा तो काकी बोल पड़ी - 'क्या खाया आपने? सुबह-सुबह किसने खाना बनाया। चाय पी होगी बस। चलिये बैठिये मैं लगवाती हूं।'

फिर रसोई घर की ओर जाती हुए उसने काका से पूछा - 'धरमू कहाँ है। ऊपर है क्या?'

'नहीं। ऑफिस में होगा।'

'उसे ऊपर छोड़ आओ। तीनों को वहीं खाना दे देती हूं।'

सुन कर काका ऊपर चले गए। पांडे और काकी ने मिलकर टेबल पर थालियां और खाना रख दिया। फिर वे गोपाल से बोलीं - 'गोपू, ये तीन थाली का खाना ऊपर दे आ। बच्चे वहीं खा लेंगे। तू भी जल्दी नीचे आजा।'

बच्चों को देखकर धर्मा बेहद खुश हो गया। मोनू और गुड़िया एक दम उस पर टूट पड़े। उसने गुड़िया को पकड़ कर प्यार किया और पूछा - 'गुड़िया अब तू कौन सी क्लास में है।'

गुड़िया ने गुस्से से कहा - 'भेजी, अब मैं दसवीं कक्षा की छात्रा हूं। मार्च के बाद कॉलेज जाऊंगी। अब मैं पंद्रह साल की होने वाली हूं। अब आप गुड़िया कह कर मत बुलाइये। नाम लेकर बुलाइये।'

धर्मा ने हंस कर कहा - 'तू कितनी बड़ी हो जा। मेरे लिए तो तू हमेशा गुड़िया ही रहेगी।'

'भेजी, मैं बड़ी हो गई हूं।'

'तेरी बोर्ड की परीक्षा कहाँ होगी?'

'भढड़्यों सैंटर पड़ा है।'

'भढड़्यों यहाँ से नजदीक है। अब यहीं रह कर जाना। यहाँ से ले जाने और लाने के लिए एक जीप कर देंगे।'

तभी गोपाल एक ट्रे में तीन प्लेटें ले आया और बोला - 'लो खाना खा लो।' उसने किनारे की एक टेबल पर खाना लगा दिया और नीचे चला गया।

धर्मा का चेहरा उतर गया। वह सोच रहा था कि उसे भी नीचे बुलाया जायेगा।

अनमने मन से उसने खाना खाया। खाते समय मोनू से पूछा - 'मुन्ने तुम कौन सी क्लास में हो?'

'भेजी मैं पांचवी में हूं। मार्च के बाद छठवीं में जाऊंगा।'

'ठीक है। अब आगे की पढ़ाई यहीं से करोगे?' धर्मा ने कहा तो मोनू खुश हो गया।

खाना खाने के बाद रावत जी अपनी पत्नी और गोपाल के साथ चले गए। शमशेर सिंह जी उन्हें छोड़ने नीचे तक गए। माया देवी, माधुरी, काका और काकी गेट पर ही रूक गए। माधुरी का चेहरा खुशी से दमक रहा था। वे तब तक नीचे देखती रहे जब तक कार नज़रों से ओझल नहीं हो गई।

उसके बाद काका और काकी ने खाना खाया। माया देवी उन्हीं के पास बैठी रही।

खाना खाने के बाद जब काकी ऊपर जाने लगी तो माया देवी भी उनके साथ हो ली।

जब वे ऊपर आये तो काकी धर्मा के कमरे में आई और लपक कर पलंग पर बैठकर धर्मा को गले से लगा कर रो उठी। धर्मा भी व्हील चेयर से लपक कर उससे चिपट कर रोने लगा। फिर वह उसके चेहरे की ओर देख कर रोते हुए बोला - 'कहाँ गई थी काकी। मुझे भूल गई थी क्या?'

काकी ने उसके चेहरे को पकड़ कर रोते हुए बोली - 'तुझे कैसे भूल सकती हूं धरमू। रास्ते बंद हो गए थे। कितनी तड़फती रहे बेटा मैं।'

बड़ी देर तक धर्मा काकी की गोद में अपना सिर रखे रहा। फिर काकी ने अपने को संभाल कर बोली - 'तुम भाई बहन के साथ खेलो। मैं इनसे बात कर लेती हूं।'

धर्मा ने सिर ऊपर उठाया। काकी ने एक बार फिर उसके माथे को चूमा और उठ कर माया देवी के साथ दूसरे कमरे में आ गई। उन्हें एक कुर्सी पर बैठाया और बोली - 'कहो बहन जी। क्या कहना चाहती हो?'

माया देवी ने कहा - 'आपने हमारी बेटी को अपनी बेटी समझ कर जो बात कहीं, मैं उसका उपकार कैसे चुका सकूंगी। हम उसके लिये कुछ भी नहीं कर सके। दो चार गहने और कुछ कपड़े लेकर आये हैं। उन्हें भी वो लेना नहीं चाहती और आप कहती हैं कि पूरी तरह दुल्हन बनकर यहाँ से जायेगी। कैसे होगा ये सब?'

'ईश्वर पर भरोसा रखो बहन। हमारी भी तो वो बेटी है। फिर धरमू की इच्छा है कि उसकी शादी धूम-धाम से हो।'

'मधु के पापा कह रहे थे कि धर्मा मधु को चाहता है।'

'वह प्यार का भूखा है। मधु का स्वभाव उसे अच्छा लगा और चाहने लगा। किंतु इसका अर्थ यह नहीं है कि वे शादी करना चाहता है। हाँ वो चाहता है। प्यार का भूखा है। आप उसकी चिन्ता मत करो।'

माया देवी की आँखें डबडबा उठीं। आंसू बहाती हुई बोलीं - 'मधु हमसे नाराज़ है। अब आप ही उसे मना सकती हैं।'

'चिन्ता मत करो बहन। सब ठीक हो जायेगा।'

फिर थोड़ी देर बाद वे नीचे चली गई। काकी धर्मा के कमरे में आई। धर्मा बच्चों के साथ खेल रहा था।'

-13-

दूसरे दिन भी धर्मा ऊपर ही रहा। वह मोनू और गुड़िया के संग बाल्कनी में बैठा पहाड़ी के नीचे देख रहा था। काकी बाहर काका के साथ बगीचा देख रही थी।

थोड़ी देर में उसने गुड़िया से कहा कि नीचे मेरे ऑफिस में जाकर ड्रायर से तीन लिफाफे और नोटों की गड्डी ले आये। वह जाकर ले आई। रूपयों का बंडल देख कर आश्चर्य से उसने पूछा - 'भेजी, इतने सारे रूपये कहाँ से आए?'

'ये काकी के लिए हैं।' जाओ काकी को बुला कर लाओ।'

गुड़िया जल्दी से नीचे चली गई। धर्मा ने दो लिफाफे और नोट पलंग पर रख दिये और एक लिफाफा तकिए के नीचे रख दिया। थोड़ी देर में काकी आ गई। वह उसके पास बैठ गई और नोट उठा कर बोली - 'इतने सारे पैसे क्यों निकाले तूने?'

'काकी जी, ये उन्नचास हजार हैं। एक हजार मैंने वकील को दिए। आप काका के साथ जाकर मधु के लिए पहाड़ी गहने और कुछ कपड़े ले आइये। मुन्ना और गुड़िया के लिए भी अच्छे कपड़े और अपने तथा काका के लिए भी कुछ ले आओ। शादी में अच्छे कपड़े पहिनने चाहिए न।'

'तू पागल हो गया क्या?' उसकी मां तो लेकर आई है।'

'वह शहरी गहने लेकर आई होगी। लेकिन तुम पहाड़ी रीति-रिवाज के गहने लाना। पैसे कम पड़े तो काका से कहना ए.टी.एम. कार्ड साथ ले जाएं और पैसे निकाल लें।'

काकी उसके चेहरे को देखती रही। फिर उसे गले लगा कर रो पड़ी। धर्मा भी बच्चों की तरह रो पड़ा। कुछ देर बाद उसने दो लिफाफे काकी को देकर कहा - 'काकी ये लिफाफे संभाल कर रख लो। जब मधु विदा हो जाये तब इन्हें खोलना।'

'क्या है इनमें?'

'शादी हो जाने दो। तब देखना।'

'क्या करना चाहता है तू?'

'कुछ नहीं। सरप्राइज है।' वह हंसा तो काकी बड़बड़ाती हुई दूसरे कमरे में चली गई।

और धर्मा रोने लगा। उसी दिन शाम को काका और काकी रामनगर चले गए।

मुन्ना और गुड़िया नीचे बाहर लॉन में चले गए थे। थोड़ी देर में माधुरी ऊपर आई। धर्मा को रोते देख उसे बहुत दुख हुआ। उसने पूछा - 'क्या हुआ धरम जी। क्यों रो रहे हो?'

धर्मा ने जल्दी से आंसू पोंछे और मुस्कुराता हुआ बोला - 'कुछ नहीं। आँखों में कोई कचरा चला गया।'

माधुरी खामोश रही। धर्मा की ओर एक बार उसने देखा। धर्मा नीचे की ओर देख रहा था। फिर वह बोली - 'सॉरी धरम जी, मुझे माफ कर दीजियेगा।'

और वह तेजी से बाहर निकल गई। धर्मा उसे जाता देखता रहा।

रात को ही शमशेर सिंह जी को फोन आ गया। रावत ने उन्हें बताया कि वृहस्पतिवार का मुहूर्त निकला है। उन्होंने बताया कि हल्दी रस्म बुधवार को होगी और वे बारात लेकर वृहस्पतिवार को सुबह दस-ग्यारह बजे तक

आएंगे और दिन में ही शादी करके शाम तक वापस आ जायेंगे। उन्होंने बताया कि बारात में कुल तीस-बत्तीस ही लोग आएंगे। फिर कुछ रूक कर बोले - 'खाने की चिन्ता मत कीजिएगा। मैं जानता हूं समय कम है। इतनी जल्दी कुछ नहीं हो सकता। न हो तो चाय-पानी का बंदोबस्त कर लें बस।

फोन सुनने के बाद शमशेर सिंह जी परेशान हो गए। वे माया से बोले - 'आज से चौथे दिन बारात लेकर आयेंगे। हल्दी रस्म बुधवार को होगी। अब बताओ क्या करें?'

माया देवी भी चिंतित हो गई। बोली - 'यहाँ तो हम किसी को जानते ही नहीं।'

दोनों सिर झुकाये अपने कमरे में बैठे रहे।

काका और काकी रात करीब आठ बजे वापस लौटे। वे दो बड़े-बड़े थैले भर कर लाये थे। थैले लेकर काकी ऊपर चली गई और काका ने पांडे को आवाज़ देकर चाय के लिए कहा। आवाज़ सुन कर शमशेर सिंह जी और माया देवी बाहर आ गए। जब वे बैठे गए तो काका ने उनके उदास चेहरे देख कर पूछा - 'क्या बात है शमशेर सिंह जी। ऐसे मुंह लटकाये क्यों हों?'

थोड़ी देर चुप रहने के बाद शमशेर सिंह जी उन्हें सब बताने लगे।

ऊपर काकी को थैलों के साथ आया देख धर्मा अपनी व्हील चेयर उनके कमरे में ले गया। बेसब्री से पूछा - 'काकी सब ले आयी हो?'

मुस्कुराते हुए काकी ने कहा - 'तूने जो-जो कहा सब ले आई हूं। तेरे लिये, तेरे भैय्या-बहन के लिए, तेरे काका के लिए और अपने लिए। अब तो खुश है न?'

झिझकते हुए धर्मा ने पूछा - 'और मधु के लिए?'

एक क्षण उसके चेहरे की ओर देख कर गहरी सांस लेकर बोली - 'उसके लिए दो साड़ी, एक शादी का लहंगा और गहने जैसे तूने कहा था, वैसे ही लेकर आई हूं। यह सब शादी के दिन देख लेना।'

दोनों बच्चे खुश हो गए कि नये कपड़े आये हैं। वे धर्मा की व्हील चेयर खींचते हुए दूसरे कमरे में आ गए।

उसी वक्त काका ने काकी को आवाज़ देकर नीचे बुला लिया।

काका जी ने उनके आते ही कहा - 'बड़ी अच्छी खुशखबरी है। रावत का फोन आया था इन्हें। वृहस्पतिवार को सुबह बारात लेकर आएंगे। हल्दी रस्म बुधवार को है। कल जाकर गांव की लड़कियों और औरतों को बोल दो। मांगल गाने वाली, ढोल वाला आना चाहिए। कुंवारी कन्याओं को भी सुबह बुला लेना हल्दी कूटने के लिए। गांव में दो लड़कियां है न मेहंदी लगाने वाली। उन्हें भी बुला देना। और फिर रात को कीर्तन तो होगा ही।'

काका को खुश देख कर काकी ने कहा - 'मैं कल बोल दूंगी। लेकिन विवाह मंडप कहाँ बनाओगे? खाने-पीने का क्या रहेगा?'

'विवाह मंडप इसी हाल में बना देंगे। खाने का बंदोबस्त बाहर लॉन में करेंगे।'

'कितने आदमी होंगे। उनकी बेटी आ रही है न?'

माया देवी जो अब तक मूक बैठी थी बोली - 'कह रहे थे करीब तीस आदमी होंगे।'

'नहीं, सौ से कम नहीं होंगे। लड़की की शादी है। नीचे गांव के लोग भी आएंगे। मैं सौ का बंदोबस्त करवा दूंगा। आप चिन्ता न करें। कल और परसों का सारा दिन हमारे हाथ में है।' काका ने निश्चयात्मक स्वर में कहा।

'बहुत खर्चा होगा। फिर यहाँ गांव में आप क्या बंदोबस्त कर सकते हैं।' शमशेर सिंह जी ने झिझकते हुए कहा।

'भाई-साहब, उन्होंने तीस-पैंतीस के लिए कहा है। ज्यादा से ज्यादा पचास का खाना बना लीजिए।' माया देवी ने भी धीरे से कहा।

काकी बोली - 'वाह, शादी, शादी की तरह होगी। क्या बेटी-बेटी नहीं होती। क्या उसकी उम्मीदें नहीं होतीं। ऐसा है तो उसे दुत्कार कर घर से निकाल दें। हर लड़की की इच्छा होती है कि उसकी शादी हो। मधु के मन में, दिल में भी ये ख्वाहिश होगी। उसे पूरा करना हमारा फर्ज़ होता है। आप बस मधु को खुश रखिये। बाकी हमें करने दीजिए।'

शमशेर सिंह जी और माया देवी चुप हो गए। पांडे जी ने खाना तैयार होने की सूचना दी तो काका ने कहा मैं धर्मू को नीचे ले आता हूं। काकी ने हामी भरी तो वे ऊपर जाकर धर्मू के साथ दोनों बच्चों को भी ले आये। काकी ने आवाज़ देकर माधुरी को भी बैठा लिया। माधुरी शरमा रही थी। वह अपनी मां के पास ही बैठ गई। एक-दो बार उसने धर्मा की ओर देखा। लेकिन वह सिर झुकाये मोनू से बात करता रहा। धर्मू का चेहरा निर्विकार लग रहा था। माधुरी का चेहरा भी गंभीर हो गया।

-14-

शादी की तैयारियां चल रहीं थीं। गांव से कई लोग आ गए। बाहर बुधवार की सुबह ही टेंट लगा दिया गया। कुर्सियां-टेबल सुबह ही आ गए। रसोई बनाने के लिए बड़े बर्तन, कागज़ की प्लेटें और राशन पानी सब बाहर लॉन में इकट्ठा हो गया। खाना बनाने वाले सुबह ही आ गए थे।

केले के चार पेड़ पत्तों सहित आ गए और आंगन में रख दिये थे।

गांव की कुछ छोटी कुंवारी लड़कियां आठ बजे आ गईं थीं। काकी अपने ही बगीचे से हल्दी की गांठें उखाड़ लाई थी। लड़कियों से उन्होंने उसे कुटवाया और पिसी हल्दी तैयार की। जब औरतें भी आ गई तब वह माया देवी से बोली - 'बहन, मधु को बाहर बुलाओ। फिर जैसे याद आया। बोलीं - 'ठहरो मैं धोती देती हूं।' कह कर वह ऊपर जाकर कपड़े ले आई। शरमाती सी माधुरी कुर्ता-सलवार पहिने हुई थी। तब काकी माया देवी के साथ उसके कमरे में जाकर पीली साड़ी उसे देते हुए बोली - 'हल्दी के लिए तुम यह साड़ी पहन लो।'

'ये ठीक है।' माधुरी ने झिझक कर कहा।

'नहीं। ये एक यादगार दिन होता है। सारी जिंदगी याद रहता है। इसके बाद तुम्हें नहाना भी पड़ेगा। उसके बाद ये साड़ी पहन लेना। तब तुम्हारे हाथों में मेंहदी लगेगी। और सुबह तुम दुल्हन बनोगी तब ये लहंगा पहिनोगी। जाते समय अपने ये सब कपड़े साथ ले जाना। जो पूरी जिंदगी याद दिलाते रहते हैं।'

माधुरी ने एक बार अपनी मां की ओर देखा। मां ने उससे पहिने को कहा। फिर काकी और माया देवी बाहर निकल आई। गांव का पंडित आ गया था। उसने जल्दी-जल्दी तैयारी शुरू कर दी और दीपक जला दिया।

जब माधुरी चौकी पर बैठ गई तो एक औरत ने उठकर उसका सिर उसके आंचल से ढक दिया और दो लड़कियां एक लंबा-सा पीला कपड़ा, जिसमें चावल रखे हुए थे, दोनों ओर से पकड़ कर उसके ऊपर तान दिया।

फिर कुछ मंत्र पढ़ कर उसने उन छोटी बच्चियों से माधुरी को हल्दी लगाने के लिए कहा। उन बच्चियों के बाद पिता शमशेर सिंह और माया देवी ने भी हल्दी लगाई। इसी बीच गांव की वृद्ध महिलायें मांगल गाती रहीं। मुन्ना और गुड़ियां ने भी हल्दी लगाई। जब काका और काकी लगा चुके तब गांव की लड़कियों ने बाकी बची हल्दी उसके चेहरे, वक्ष और जांघों पर रगड़ कर खूब ठिठौली करने लगी। माधुरी भी खूब हंसी और कइयों के चेहरे पर उसने हल्दी लगा दी।

अंत में पंडित ने कहा - 'तुम नहा कर आ जाओ फिर थोड़ी सी पूजा होगी।' वह अपनी मां के साथ अंदर चली गई।

किंतु, धर्मा नीचे नहीं आया था। हालांकि वह ऊपर से सब देख रहा था। उसका चेहरा भी हल्दी के समान पीला हो गया था और आंसू थम नहीं रहे थे।

रात को वे लड़कियां फिर आ गई। साथ में ढोलकी लाई थीं। जब उन्हें माधुरी नहीं दिखीं तो उसके कमरे में घुस गई और उसे खींच कर बाहर ले आई। फिर संगीत का कार्यक्रम चला और दो लड़कियां उसके हाथों पर मेहंदी लगाने लगी। लड़कियों के गीत सुनकर कई बार उसे शरम भी आई। किंतु सब अच्छा लग रहा था। रात बारह बजे तक ये कार्यक्रम चला। फिर सुबह आने का वादा करके वे चले गए। उनका खाना पांडे ने ही बनाया था।

दूसरे दिन सुबह ही लड़कियां आ गई। काकी ने उन्हें माधुरी को ऊपर ले जाने के लिए कहा। जब वे उसे ऊपर काकी के कमरे में ले आये तो उन्होंने लहंगा और गहने उनके सामने रखकर कहा - 'अब इसे दुल्हन बनाओ। उन गहनों को देखकर माधुरी की आँखें खुली की खुली रह गई। सारे गहने चारपाई पर करीने से रख कर एक लड़की बोली - 'काकी इसमें बिछुये और पाजेब नहीं है।'

'अरे वो शायद मैं भूल गई। बहन जी आपके पास है क्या?' काकी ने पूछा।

'हाँ, मै लाई हूं।'

'अरे तो लाओ। इसके तैयार होने में भी तो वक्त लगेगा।' वह चली गई तो एक लड़की ने पूछा - 'भेजी ऊपर ही हैं क्या?'

'हाँ, काकी ने कहा।'

'तो, आप बाहर जाओ, हम द्वार बंद कर देते हैं।'

'ठीक है। ये लहिंगा पहना देना। काजल-वाजल लाई हो?' अब आप जाओ। हमें अपना काम करने दो।'

काकी बाहर आ गई। माया देवी पाजेब और बिछुये ले आई थी। उन्हें देकर वे भी बाहर आ गयीं।

एक घंटे बाद जब माधुरी ने शीशे में अपने को देखा तो वह खुद को पहचान न पाई। उसे उन गांव की लड़कियों पर बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने उन सबको गले लगा लिया तो एक लड़की झुंझला कर बोली - 'हमें क्यों गले लगा रही हो। अभी जो आ रहा है उसे गले लगा।'

वह शरमा कर लाल हो गई।

गांव के लोग बारात का स्वागत करने के लिए इकट्ठे हो गए। गांव की कई औरतें भी थी। बारात का स्वागत शमशेर सिंह उनकी पत्नी माया और काका-काकी ने किया। एक लड़की गेट के दोनों ओर पानी के लोटों में आम के पत्ते और फूल लिये हुए खड़ी थी। आरती करने के बाद माया देवी ने उन्हें अंदर आने का इशारा किया। किंतु पांच छै लड़कियों ने रोक दिया और प्रवेश करने के लिए पांच सौ रूपयों की डिमांड की। गोपाल ने पूछा - 'पैसे किस बात के?'

थोड़ी देर की बहस-बाजी के बाद शमशेर सिंह जी ने पांच सौ का नोट दे दिया। वे सब मिलकर रास्ता छोड़ते हुए बोली - 'आइए जीजा जी। थोड़ा संभल कर आइए।'

दरवाजे के पास ही एक स्टेज बना कर उस पर दो लाल कपड़ों वाली कुर्सियां लगी थीं। दूल्हे को वहाँ बिठा कर जूते उतरवा कर उनकी पूजा करने लगे। लड़कियां उन्हें घेरकर खड़ी देखती रहीं। पूजा होने के बाद लड़कियां अंदर जाकर माधुरी से बोली - 'वहाँ खड़ी-खड़ी क्या देख रही हो। चलो अब मिलन की बेला आ गई है।'

माधुरी शर्म से लाल हो गई। उसे ले जाकर दोनों को सामने खड़ा कर जयमाला डलवाई गई। जयमाला के बाद गोपाल ने पूछा। तुम इतनी सुंदर हो मुझे पता नहीं था। इतने गहने कहाँ से लाई हो?'

'काका-काकी ने दिये।'

थोड़ी ही देर में फेरों के लिए वे अंदर चले गए।

दो पंडितों के मंत्रोपचार से फेरे संपन्न हुए। यह सब ऊपर व्हील चेयर पर बैठ कर धर्मा ने देखा। उसके चेहरे पर एक भाव आते और एक भाव जाते

थे। कभी उसकी आँखें झलक आती तो जल्दी से आंसू पोंछ कर जबर्दस्ती मुस्कुरा देता था।

फेरे हो जाने के बाद दोनों को खाने के लिए बाहर ले गए। सारी लड़कियां और औरतें भी बाहर चली गयीं। मुन्ना और गुड़िया भी दौड़ कर बाहर चले गए।

काकी ने एक बार ऊपर देखा और पूछा - 'खाना खाने नीचे आओगे?'

'नहीं काकी। मैं यहीं ठीक हूं।' उसने अपने स्वर को कष्ट से संयमित किया।

'अच्छा मैं खाना भिजवाती हूं।' कहकर वे माया देवी के साथ बाहर निकल गयी।

धर्मा व्हील चेयर बढ़ा कर सामने वाली बाल्कनी में आया जहाँ से लॉन दिखाई दे रहा था।

एक टेबल पर गोपाल और माधुरी आमने-सामने बैठे एक दूसरे को खाना खिला रहे थे। उन्हें घेरे कई लड़कियां बैठी थीं और खूब हंस रही थीं।

धर्मा का चेहरा कठोर हो गया था। आजकल प्यार करना भी गुनाह है।' उसने सोचा और पलट कर फिर सीढ़ियों के करीब आ गया।

अचानक ढोल बज उठे। अधिकांश लोग खाकर चले गए थे। अब सिर्फ विदाई होनी थी। इसके लिए गोपाल और माधुरी अंदर आये। माधुरी का सामान जा चुका था। उसकी मां ने उससे एक बार फिर कमरे को देखने के लिए कहा। वह कमरा देख कर आई तो उसकी नज़र सीढ़ियों के ऊपर व्हील चेयर पर बैठे धर्मा पर पड़ी। उसने गोपाल से कहा - 'धरम जी से मिल लेते हैं। उन्हीं की बदौलत यह शादी भी धूम-धाम से हो सकी है।'

गोपाल ने सिर हिला दिया। दोनों ऊपर आ गए। एक सीढ़ी नीचे से ही माधुरी ने सिर झुका कर हाथ जोड़ दिये। गोपाल ने भी उसकी देखा-देखी सिर झुका कर कहा - 'भाई, मैं जल्द आकर तुम्हें मिलूंगा।'

धर्मा कुछ नहीं बोला। एक लिफाफा माधुरी की ओर बढ़ा कर बोला - 'मैं एक अपाहिज़ तुम्हें क्या दे सकता हूं मधु। बस यही मेरे पास है और ढेर सारी दुआएं हैं जो मैं तुम्हें दे सकता हूं। इस लिफाफे को तुम जब एकांत में गोपाल के साथ हो, तब खोलना। इतना वादा करो।'

उसने सिर हिला कर हामी भर दी। और लिफाफा लेकर जल्दी से नीचे उतर गई। उसकी भी आँखें भर आई थी। पीछे-पीछे गोपाल भी उतर गया।

बारात की बिदाई हो गई। गेट तक सभी छोड़ने गए। ढोल आदि का शोर हो रहा था। सभी नीचे तक गए।

पागलों की तरह वह एक कमरे से दूसरे कमरे के चक्कर लगाता रहा। कभी एक बाल्कनी से दूसरी बाल्कनी में। जब तक बाराती बस में बैठ कर चले नहीं गए और बाल्कनी से दिखाई देते रहे तब तक वह भटकता और रोता रहा।

फिर उसकी सोच दूसरी ओर मुड़ गई। 'कब तक मेरे काका-काकी मुझे यूं ही सहारा देते रहेंगे। कब तक ये मेरा बोझ उठाते रहेंगे? कल ये भी बूढ़े हो जायेंगे तब क्या होगा? कौन संभालेगा एक अपाहिज़ को? मैं अपाहिज़ हूं .... एक बोझ .... इस धरती पर एक बोझ.... मेरा मर जाना ही बेहतर है..... वैसे भी मैं आधा तो मरा ही हुआ हूं........ अभी मौका है.... घर में कोई नहीं है।'

फिर एक निश्चय करके उसने व्हील चेयर सीढ़ियों के मुहाने पर खड़ी कर दी और एक बार चारों ओर देखा। कहीं कोई नहीं था।

हल्की सी मुस्कुराहट उसके चेहर पर खेली और उसने चेयर को सीढ़ियों की ओर बढ़ा दिया। वह व्हील चेयर से गिर कर सीढ़ियों पर लुढ़कता चला गया।